इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
पर्यटन एवं आतिथ्य प्रबंध विद्यापीठ

बी.टी.एम.सी.–131
पर्यटन का इतिहास-I

खंड

4

उद्भव और विकास

इकाई 10
प्राचीन और मध्यकालीन विश्व में पर्यटन गतिविधि 5

इकाई 11
पर्यटन और दर्शनीय खेल–कूद 19

इकाई 12
ऐतिहासिक उद्भव और विकास 33

इकाई 13
एक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन का उद्भव 55

इस खण्ड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें और शोध पत्र 71

इस खण्ड के लिए गतिविधियाँ 74

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम तैयार करने वाली सह पाठ्यक्रम–अनुकूलन टीम

प्रो. जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
निदेशक
एसओटीएचएसएम, इग्नू, (अध्यक्ष)

डॉ. परोमिता शुक्लाबैद्या
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम, इग्नू

डॉ. सोनिया शर्मा
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम, इग्नू

सुश्री तांगजाखोम्बी अकोइजम
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम
इग्नू

डॉ. अरविन्द कुमार दुबे
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम
इग्नू (संयोजक)

कार्यक्रम समन्यवक : डॉ. अरविन्द कुमार दुबे

खण्ड समन्यवक	पाठ्यक्रम समन्यवक
डॉ. अरविन्द कुमार दुबे सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम	डॉ. अरविन्द कुमार दुबे डॉ सोनिया शर्मा

शिक्षक गण

प्रो. जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
निदेशक

डॉ. परोमिता शुक्लाबैद्या
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम

डॉ. अरविन्द कुमार दुबे
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम

डॉ. हरकीरत बेंज
एसोसिएट प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम

डॉ. सोनिया शर्मा
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम

सुश्री तांगजाखोम्बी अकोइजम
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम

पाठ्यक्रम निर्माण

इकाई संख्या	इकाई लेखक
10, 11	**डॉ. अमित कुमार सिंह, सहायक प्रोफेसर, सिक्किम विश्वविद्यालय** **डॉ. अरविन्द कुमार दुबे, सहायक प्रोफेसर, एसओटीएचएसएम, इग्नू**
12	**टीएस–1 (खण्ड 1, इकाई 3) से ग्रहीत**
13	**डॉ. अरविन्द कुमार दुबे, सहायक प्रोफेसर, एसओटीएचएसएम, इग्नू**

अनुवादक	वर्तनी शोधन एवं पुनरिक्षण	सहायक
श्री प्रांजल धर, कवि मीडिया विशेषज्ञ, अनुवादक न्यू राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली	डॉ. सुरेश कुमार गोहे	श्री विनीत ज़ेस जेएटी, एसओटीएचएसएम इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण दल

श्री तिलक राज
सहायक कुल सचिव (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी.,इग्नू, नई दिल्ली

श्री यशपाल
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी.,इग्नू, नई दिल्ली

सितम्बर, 2019

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, 2019

ISBN : 978-93-89499-33-9

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (चक्र मुद्रण) द्वारा या अन्यथा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के बारे में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी नई, दिल्ली – 110068 स्थित कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से कुल सचिव एम.पी.डी.डी इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेज़र टाइपसेटर : टेसामीडिया एण्ड कंप्यूटर्स, सी–206, ए.एफ.ई.2, जामिया नगर, नई दिल्ली

मुद्रक : मैसर्स ए–वन ऑफसेट प्रिंटर्स, 5/34, कीर्ति नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली–110015 द्वारा मुद्रित।

खंड 4 उद्‌भव और विकास

इस खंड में हम पर्यटन गतिविधि और इसके विकास पर चर्चा करने के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण से आगे बढ़ेंगे। एक नवीन ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन के अवधारणात्मक विकास पर भी चर्चा की गयी है।

इकाई 10 यह इकाई आपको प्राचीन काल में यात्रा के उद्दीपन से और उन कारकों से परिचित कराती है जिन्होंने प्रेरणा के रूप में कार्य किया। इस इकाई में प्राचीन और आधुनिक विश्व के पर्यटन के आश्चर्यों पर भी चर्चा की गयी है।

इकाई 11 यह इकाई ऐतिहासिक यात्रा के माध्यम से आपको ओलम्पिक खेलों, रथ-दौड़ और तलवारबाजों की लड़ाइयों तक ले जाती है। खेल-कूद कोई नवीन परिघटना नहीं है। यह पर्यटन के प्राचीन प्रेरक कारकों में से एक है।

इकाई 12 इस इकाई में पर्यटन के अध्ययन के लिए पर्यटन के इतिहास और आँकड़ों के विभिन्न स्रोतों की आवश्यकता पर चर्चा की गयी है। इकाई प्राचीन साम्राज्यों में यात्रा और पर्यटन गतिविधियों को विस्तार से बताती है। रेशम मार्ग, तीर्थयात्रा, भव्य यात्रा (Grand Tour) और आधुनिक पर्यटन पर भी चर्चा की गयी है।

इकाई 13 एक ज्ञानानुशासन की सैद्धान्तिक समझ, इसके उद्‌भव और अभिलक्षणों पर चर्चा करती है। आप इस ज्ञानानुशासन के विभिन्न उपागमों को समझेंगे तथा यात्रा और पर्यटन के अध्ययन के प्रति, ज्ञानानुशासन के दृष्टिकोण से, अन्तर्दृष्टि प्राप्त करेंगे।

इकाई 10 प्राचीन और मध्यकालीन विश्व में पर्यटन गतिविधि

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 परिचय

10.2 प्राचीन पर्यटन गतिविधि

10.3 प्राचीन यूनान और रोम में यात्रा के उद्देश्य

10.3.1 एक उद्देश्य के रूप में व्यापार और वाणिज्य

10.3.2 धर्म और खेल-कूद सम्बन्धी उद्देश्य

10.3.3 एक उद्देश्य के रूप में स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दे

10.4 विश्व पर्यटन के सात आश्चर्य

10.4.1 प्राचीन विश्व पर्यटन के सात आश्चर्य

10.4.2 आधुनिक विश्व पर्यटन के सात आश्चर्य

10.5 सारांश

10.6 शब्दावली

10.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप इस योग्य हो जाएँगे कि आप :

- यूनान और रोम में प्राचीन यात्रियों के विभिन्न उद्देश्यों को समझ सकें;
- पर्यटन के प्राचीन और आधुनिक उद्देश्य में अन्तरों को खोज सकें;
- विश्व के आश्चर्यों की अवधारणा की सराहना कर सकें;
- प्राचीन विश्व के सात आश्चर्यों के बारे में जान सकें; और
- आधुनिक विश्व के सात आश्चर्यों के बारे में जान सकें।

10.1 प्रस्तावना

एक गतिविधि के रूप में पर्यटन के महत्व को एक आधुनिक परिघटना माना जाता है, लेकिन इस सिद्धान्त से अनुसन्धानकर्ता और विद्वान सहमत नहीं हैं। उनका विचार है कि अपने विभिन्न प्रकारों और संरचनाओं में पर्यटन प्राचीन काल में भी उपलब्ध था। अपनी परिकल्पना के औचित्य की स्थापना के लिए विद्वानों ने प्रमाण भी प्रस्तुत किए हैं। कुछ का दृष्टिकोण है कि मध्यकाल में पर्यटन का विकास प्रगतिशील यातायात की आधारभूत संरचना और फुर्सत के समय की उपलब्धता का परिणाम था। सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी के दौर को भव्य यात्रा का दौर भी कहा जाता है क्योंकि इस अवधि में कुलीन यात्रा में वृद्धि देखी गयी।

10.2 प्राचीन पर्यटन गतिविधि

जब हम प्राचीन यात्रियों के उद्देश्यों की तुलना आधुनिक पर्यटकों के उद्देश्यों से करते हैं तो यात्रा करने का एकसमान कारण पाते हैं क्योंकि लोग व्यापार और वाणिज्य, धर्म, खेलकूद, स्वास्थ्य और शिक्षा के लिए ही यात्रा नहीं करते थे, बल्कि फुर्सत और आनन्द के लिए भी यात्रा करते थे और उनका ध्यान आराम करने के साथ-साथ दृश्यों को देखने और अपरिचित इलाकों के बारे में जानने पर केन्द्रित रहता था। गिर (2012) का मत है कि मिस्र में फैरो शासकों के संरक्षण में फुर्सत, आनन्द और पुनर्सृजन के साथ-साथ शिक्षा जैसे यात्रा के अन्य उद्देश्यों का भी अस्तित्व होता था। परवर्ती काल में, पर्यटन ने विलासितापूर्ण जीवनशैली का आकार ग्रहण कर लिया और लोगों ने ज्ञान, आनन्द और आराम की तलाश में यात्राएँ कीं। कैसन (1994) ने इतिहास में 1500 ई. पू. तक पीछे जाकर पर्यटन का प्रमाण उपलब्ध कराया है और बताया है कि फुर्सत और जिज्ञासा यात्राओं के मुख्य उद्देश्य हुआ करते थे। पेज और कोनेल (2009) का विश्वास है कि प्रारम्भिक यात्री यूनानी और रोमन लोग थे और इन प्रारम्भिक पर्यटकों ने अपने कस्बों और नगरों से बाहर की आरामदायक और आनन्ददायक गतिविधियों से लोगों को परिचित कराया था। इस प्रकार उन्होंने आधुनिक पर्यटन की नींव डाली थी यानी उन्होंने ऐसे स्थल की पहचान की जो दैनिक जीवन से दूर हो और जहाँ कामकाज के किसी उद्देश्य के बिना जाकर गुणवत्तापूर्ण समय बिताया जा सके। यह एक तथ्य है कि प्राचीन यूनानी और रोमन लोगों ने, जो कि सच्चे यात्री थे, अपने भौगोलिक क्षेत्रों में ऐसे स्थलों का विकास करने पर विशेष ध्यान दिया था जो फुर्सत और आनन्द के गन्तव्य के रूप में लोगों को आकर्षित कर सकें। इस प्रकार उन्होंने आधुनिक पर्यटन की नींव डालने की प्रक्रिया को बल प्रदान किया था।

हेरोडोटस, पॉसेनियस और स्ट्रैबो के यात्रा-वृत्तान्त समुद्रपारीय गन्तव्यों तथा उन स्थानों के ज्ञान और संस्कृति के सम्बन्ध में सूचनाएँ उद्घाटित करते हैं जिन्हें उन्होंने प्रस्तुत किया है। यात्राओं के बारे में लिखने वाला हेरोडोटस एक मौसमी यात्री था जिसने अपना सारा जीवन एक पर्यटक के रूप में खर्च कर दिया और अपने समस्त अनुभवों का उपयोग पर्यटन की रक्षा के लिए किया। पॉसेनियस भी हेरोडोटस जैसा ही था और वह भी एक यात्रा-लेखक था। उसने इटली, सीरिया, फिलिस्तीन और मिस्र जैसे देशों की यात्रा की थी। उसका यात्रा-लेखन स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि वह अनेक गैर-धार्मिक स्थलों के साथ-साथ अभ्यारण्य जैसे स्थलों की तरफ आकृष्ट था। यात्रा एक प्राचीन परिघटना है और इसके इतिहास को अतीत में पौराणिक-मिथकीय कालों तक देखा जा सकता है। नए-नए लोगों से मिलने तथा वस्तुओं और अनुभवों का आदान-प्रदान करने और आध्यात्मिकता को पुष्ट करने के लिए मिस्रवासी, बेबीलोनियाई, फिनीशियाई, क्रेटन, यहूदी और यूनानी अपने-अपने भूभागों से बाहर निकलकर पड़ोसी इलाकों तक गए। यूनानियों को प्रारम्भिक महान यात्री माना जाता है जो सिर्फ इसलिए यात्राएँ करते थे ताकि वे अपने उन निष्कर्षों की साझेदारी कर सकें जिनकी खोज वे शेष विश्व की अपनी यात्राओं के दौरान किया करते थे। यूनानियों की यात्रा का उद्देश्य व्यापार और वाणिज्य, धर्म, ओलम्पिक खेल देखने और कुछ बीमारियों का इलाज करवाने तक ही सीमित नहीं रहा करता था बल्कि उन्होंने आनन्ददायक पर्यटन की सम्भावना का अन्वेषण भी किया था। जैसाकि डिलन और गारलैण्ड (2010) ने कहा है, हजारों यूनानी लोग अलग-अलग उद्देश्यों के साथ मिस्र गए थे। उदाहरण के लिए, उनमें से कुछ लोग व्यापार के लिए गए थे, कुछ अभियान के लिए और कुछ लोग उस देश को देखने के लिए गए थे। प्राचीन यूनानी लोग अपने गर्मजोशी भरे आतिथ्य के लिए विख्यात थे क्योंकि अजनबी लोगों के बारे में उनका विचार था कि ये आतिथ्य के देवता जीनियस जेयस के प्रतिनिधि हैं। इस देवता के बारे में यूनानी लोगों का मानना था कि यह अजनबी लोगों की विदेश यात्राओं की रक्षा करता है। प्रारम्भ में यूनानी लोग देवताओं की पूजा

विदेशियों को आतिथ्य प्रदान करके किया करते थे लेकिन बाद में यह उनकी संस्कृति का एक अनिवार्य नियम बन गया। एथेंस जैसे कुछ नगर विदेशी अतिथियों का स्वागत इस बात पर विचार करते हुए किया करते थे कि उनकी प्रतिष्ठा के साथ-साथ इससे सम्बन्धित आर्थिक लाभ का महत्व क्या है। पारम्परिक रोम ने यात्राओं के लिए लोगों में उद्दीपन उत्पन्न किया था और अनेक प्रकार की छुट्टियों को प्रोत्साहन दिया था। इन छुट्टियों के कारण रोमवासियों ने बारम्बार की जाने वाली अपनी यात्राओं के लिए आधारभूत संरचना विकसित की और इसका परिणाम यह हुआ कि 300 ई. तक आते-आते रोम में 90,000 किलोमीटर लम्बी अच्छी सड़कों का एक जाल अस्तित्व में आ गया। परिवहन और सड़क की इन सुविधाओं के अतिरिक्त, अन्य कारकों ने भी रोम में पर्यटन के विकास में योगदान दिया। ये कारक थे दृ मुद्रा की प्रस्तुति, भाषा और उनकी विधिक व्यवस्था जिसके कारण यात्राएँ आसान, सुरक्षित और तीव्र बन गयीं। रोमनों को यह श्रेय भी जाता है कि उन्होंने समुद्र के किनारे आश्रयस्थल निर्मित किए, खासतौर पर उच्च वर्ग के लिए। नैपल्स की खाड़ी एक ऐसा मुख्य भौगोलिक क्षेत्र था जहाँ के अनेक आवासीय घरों में रोमन समाज के धनाढ्य वर्ग के लोग किराया देकर ठहरा करते थे। ये आवासीय घर समुद्र के तटों के पास ही स्थित होते थे और लोग यहाँ पर तटीय रेस्तराँ और मधुशालाओं में आनन्द लिया करते थे। समृद्ध परिवार अपने फुर्सत के समय को मिस्र और यूनान के पुलिनों (Beaches) पर बिताया करते थे और इस शाही रोमन संस्कृति ने जन-पर्यटन के लिए मार्ग खोल दिया।

10.3 प्राचीन यूनान और रोम में यात्रा के उद्देश्य

यद्यपि प्राचीन पर्यटन और आधुनिक पर्यटन के उद्देश्यों में कोई विशिष्ट अन्तर नहीं है। हालाँकि पर्यटन की प्रकृति में परिवर्तन अवश्य हुए हैं, जिन्हें वर्तमान परिदृश्य में विशिष्ट रूप से खास रुचियों वाला पर्यटन कहा गया है। नीचे कुछ कारण दिए गए हैं जिनके चलते प्राचीन काल में यात्राएँ की जाती थीं, खासतौर पर यूनान और रोम में, जो पर्यटन के विभिन्न प्रकारों के संस्थापक हैं।

10.3.1 एक उद्देश्य के रूप में व्यापार और वाणिज्य

किसी दूर स्थित जगह की यात्रा करने के लिए जो लोग सबसे पहले अपना घर छोड़कर बाहर निकले, वे व्यापारी थे। उन्होंने व्यापार और वाणिज्य के नाम पर अपनी यात्राएँ कीं। प्राचीन समय में, ऐसे व्यापार समुद्री मार्गों के जरिये किए जाते थे। इससे यूनानी लोगों को यह सुअवसर मिला कि वे अपनी सीमाओं से बाहर निकलें और दुनिया का पता लगाएँ। उनके समुद्री जहाज भूमध्यसागर तक पहुँचे और इस प्रकार उनके सम्पर्क स्थापित हुए। इन सम्पर्कों ने पर्यटन के और अधिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया। मार्ग अब सुरक्षित हो गए थे क्योंकि जलदस्युओं पर नियन्त्रण कर लिया गया था। रोमन काल में व्यापारियों के लिए स्थलीय मार्ग को भी उन्नत बनाया गया। तीसरी शताब्दी ई. पू. तक दुपहिया गाड़ी और चौपहिया मालवाहक गाड़ियों से लोग परिचित हो चले थे। इन गाड़ियों को गधे और खच्चर खींचते थे और इनसे व्यापारियों को माल ढोने में सुविधा हुई। अमीर यात्री घोड़ों पर बैठकर यात्रा करना पसन्द करते थे जबकि कमजोर वर्ग के लोग पैदल चलकर। लम्बी दूरी की यात्रा पर भी यह बात लागू होती थी। यह उल्लिखित है कि एथेंस से ओलम्पिया पहुँचने के लिए लोग पाँच या छह दिनों तक पैदल चला करते थे। यह एक ऐसी गतिविधि थी जिसमें बहुत सारा समय खर्च होता था और जो खतरनाक भी थी। सड़क मार्ग से यात्रा करना एक खतरनाक प्रक्रिया थी जिसमें न केवल दुर्गम पर्वतीय इलाकों और नदियों के ऊपर बने विरल पुलों से गुजरना होता था, बल्कि इस प्रक्रिया में यात्रियों को लुटेरों द्वारा पीड़ित किए जाने का भी खतरा मौजूद रहता था। साहित्य बताता है कि लोग झुण्ड बनाकर

चला करते थे और अपने साथ आभूषण बहुत कम ही रखते थे तथा सहयोग के लिए अपने दासों को साथ लेकर चला करते थे। यात्रा के दौरान डाकू लोग यात्रियों पर हमला किया करते थे, उनका अपहरण कर लेते थे और उन्हें मार डालते थे। एक आम आदमी जब यात्रा करता था तो उस पर जीवन का गम्भीर खतरा मँडराता रहता था। रोमवासियों ने सरायें भी बनवायी थीं, लेकिन यात्रियों ने शायद ही कभी इन सरायों में ठहरना पसन्द किया हो। ठहरने के लिए सरायों में जो कमरे होते थे, वे आरामदायक नहीं होते थे और उनमें वेश्याओं और खटमलों का अतिक्रमण रहा करता था। यात्रियों पर भोजन स्वयं पकाकर खाने का भी बोझ रहा करता था। समय के साथ, ठहरने की सुविधाओं में वृद्धि भी हुई लेकिन उनका स्तर बहुत निम्न और असन्तोषजनक होता था। इन सारी बाधाओं के बावजूद, रोमवासियों ने उन्हें "आवश्यक बुराई" का आनन्द लेने के लिए कभी रोका नहीं तथा परिवहन के साधनों, ठहरने के प्रबन्ध, भोजन और सड़क की गुणवत्ता को कभी महत्व नहीं दिया।

10.3.2 धर्म और खेलकूद सम्बन्धी उद्देश्य

प्राचीन यूनान में बहुत सारे लोग धार्मिक कामनाओं के उद्देश्य से यात्राएँ किया करते थे। इन यात्राओं के दौरान वे धार्मिक महत्व के प्राचीन लोकप्रिय स्थलों तक जाया करते थे; जैसे - मिस्र में फिलाई द्वीप पर अवस्थित आइसिस का मन्दिर तथा यूनान में डेल्फी में स्थित अपोलो का देवालय। ऐसी यात्राओं को तीर्थयात्रा की श्रेणी में रखा जाता था क्योंकि लोग इन स्थलों पर उपासना करने के लिए जाते थे। प्राचीन काल में यूनान में की जाने वाली अधिकांश तीर्थयात्राएँ व्यक्तिगत रूप से उन लोगों द्वारा निष्पादित की जाती थीं जो विशिष्ट दैवीय स्थलों तक अनेक वजहों से जाया करते थे तथा इस तरीके की संगठित तीर्थयात्रा प्राचीन यूनानियों के जीवन का अहम हिस्सा हो गयी। प्राचीन यूनानियों ने अपने जीवन को धार्मिक उत्सवों के लिए समर्पित कर दिया था।

प्राचीन यात्रियों के विवरण मिस्र और यूनान में देवताओं की उपासना के आलोक में अनेक कार्यक्रमों के आयोजनों की प्रथा को भी रेखांकित करते हैं। सर्व-यूनानी (पैन-हेलेनिक) उत्सव यूनानियों के जीवन जीने के तरीके बन गए और उपासकों के अधिकारों की रक्षा की जाती थी। इस अवधि के दौरान चार महत्वपूर्ण उत्सव लोकप्रिय थे। ये थे - ओलम्पिया में आयोजित होने वाले ओलम्पिक खेल, डेल्फी के पाइथियन (Pythian) खेल, कोरिन्थ के इस्थमियान (Isthmian) खेल और नेमियन (Nemean) खेल। ये उत्सव सम्पूर्ण यूनान के बहुत सारे दर्शकों, कलाकारों, खिलाड़ियों और अधिकारियों को आकर्षित किया करते थे। यहाँ तक कि ओलम्पिक और पाइथियन खेलों में भाग लेने के लिए अत्याचारी शासक और राजा भी अपने रथों को भेजा करते थे। डेल्फी में सिर्फ यूनानी लोगों की ही भीड़ नहीं जमा होती थी, बल्कि यहाँ बहुत सारे विदेशी लोग भी आया करते थे। आम लोगों के साथ-साथ राजा, सैनिक लोग और नगर के अधिकारी डेल्फी के मुख्य प्रतिभागियों में शामिल होते थे। प्रत्येक व्यक्ति की चाहत, इस आध्यात्मिक केन्द्र की यात्रा के जरिये, अपोलो का आशीर्वाद पाने की होती थी। प्रचुर सम्पदा और युद्धों के दौरान प्रदर्शित खजानों को देखकर दर्शकों को बहुत आश्चर्य हुआ करता था। यूनान का यह एक आपवादिक स्थल था, जहाँ इतना सारा स्वर्ण और भौतिक समृद्धि व गौरव विद्यमान था। स्कुलियन (2007) के शब्दों में, डेल्फी का उभार सिर्फ धार्मिक उत्सवों और समृद्ध पौराणिकता के कारण ही नहीं हुआ था, बल्कि यह अपनी पुरातनता और उच्च प्रतिष्ठा के कारण भी लोकप्रिय था। रोमन काल में डेल्फी द्वारा पर्यटकों को आकर्षित किया जाना जारी रहा और इसका परिणाम यह हुआ कि पर्यटन व्यवसाय में तेजी आयी। विक्रेताओं ने स्मृति-चिन्हों (Souvenirs) और मार्गदर्शकों (Guides) के लिए अतिरिक्त मूल्य लेना शुरू कर दिया जिसका प्रभाव अच्छा नहीं पड़ा और लोग आरामपूर्वक जाकर दृश्यों को देखने से परहेज करने लगे। व्याख्यायित करके स्थलों के बारे

में बताने का उनका तरीका भी बहुत ही संक्षिप्त हो गया और आगन्तुकों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। सबसे बड़ी बात कि शिलालेखों और समाधि-लेखों के बारे में जिन महत्वपूर्ण विवेचनों को बताया जाना चाहिए था, उन्हें छोड़ दिया जाने लगा। ओलम्पिया ने अनेकता में एकता को प्रोत्साहित किया। ओलम्पिक खेल यूनान के स्वतन्त्रजनों के लिए ही थे (दासों के लिए नहीं) और इससे राष्ट्रीय दृष्टिकोण से लोगों के एकत्रित होने का अवसर बना। यद्यपि यूनान राज्यों, सीमावर्ती क्षेत्रों, राजनीतिक प्रणाली, पर्वतों, समुद्रों और पारस्परिक युद्धों में विभाजित था लेकिन तब भी यह सत्य है कि ये सभी लोग एक ही यूनानी जगत के अन्तर्गत आते थे। ओलम्पिया के साथ-साथ जीअस (Zeus) देवालय के अवशेष भी खोजे गए। प्रारम्भ में यह स्थल ओलम्पिक खेलों का रूपरेखा-स्थल हुआ करता था किन्तु बाद में अपनी पवित्र युद्धविराम-सन्धि के कारण यह सर्व-यूनानी (पैन-हेलेनिक) के रूप में लोकप्रिय हुआ। इस स्थल पर खेलकूद की पर्याप्त आधारभूत संरचनाएँ हुआ करती थीं। यहाँ एक स्टेडियम की सुविधा थी जिसमें बैठने वाली कुर्सियाँ मिट्टी की बनी होती थीं और चालीस हजार लोग इस स्टेडियम में बैठकर खेलों का आनन्द ले सकते थे। आधिकारिक अतिथियों के स्वागत के लिए एक विलासितापूर्ण होटल भी बनाया गया था जिसका नाम "लियोनिदाइयोन (Leonidaion)" था। यह नाम इस होटल के लिए धनराशि का दान देने वाले एक व्यक्ति के नाम पर रखा गया था जो चौथी शताब्दी ई.पू. में नैक्सोस द्वीप पर निवास किया करता था। खेलों के दौरान यह क्षेत्र जीवन्त हो उठता था क्योंकि यहाँ खाद्य और पेय पदार्थ बेचने वाले बहुत सारे फेरीवाले मौजूद होते थे, स्मृति-चिन्ह बेचने वाली बहुत सारी दुकानें हुआ करती थीं तथा अनेक मार्गदर्शक और विक्रेता भी उपस्थित रहा करते थे। इस क्षेत्र में भाँति-भाँति के आगन्तुक आते थे; उदाहरण के लिए, कुछ आगन्तुक खेल देखने आते थे जबकि कुछ आगन्तुक धार्मिक उद्देश्यों के साथ-साथ प्रख्यात दार्शनिकों और लेखकों के भाषण सुनने भी आया करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि अतिथि-सत्कार से जुड़ी सेवाएँ खराब थीं क्योंकि गन्तव्य-स्थल तक जाने के लिए आगन्तुकों को अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता था, उन्हें कड़ी धूप का और बीच-बीच में अचानक होने वाली बारिश का सामना करना पड़ता था, उन्हें तम्बुओं में या खुले आसमान के नीचे रात बिताने के लिए विवश किया जाता था तथा स्वास्थ्य-देखभाल और स्वच्छता की व्यवस्था खराब हुआ करती थी। इन खराब सुविधाओं के बावजूद कुछ आगन्तुक लोग ऐसे थे जो नियमित रूप से बारम्बार इस स्थल पर खेल देखने आया करते थे। रोमन काल में मन्दिरों के साथ-साथ यूनानी देवालय आकर्षण के केन्द्र बने। ये देवालय कला के एक संग्रहालय के रूप में हुआ करते थे जहाँ वेदियाँ और मूर्तियाँ गढ़ी जाती थीं और उनका अभिकल्पन (Design) किया जाता था। ऐसे स्थलों पर आगन्तुक लोग ऐतिहासिक इमारतों और स्मारकों को देखने की जिज्ञासा लेकर आया करते थे। उदाहरण के लिए, ओलम्पिया रास्ते में पड़ता था और तमाम यात्री यहाँ शैक्षिक अनुभव की दृष्टि से आया करते थे। इतिहास रोमन पर्यटकों का मुख्य उद्देश्य बना। अनुसन्धानकर्ताओं का तर्क है कि ऐसे यात्रियों को पर्यटक नहीं कहा जा सकता, बल्कि इन्हें धार्मिक पर्यटकों के रूप में वर्गीकृत करना समीचीन होगा क्योंकि उनकी यात्राओं में पर्यटन और तीर्थयात्रा – दोनों – के तत्व शामिल रहा करते थे।

10.3.3 एक उद्देश्य के रूप में स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दे

एक अन्य उद्देश्य, जो प्राचीन यात्रियों के लिए प्रेरणा के एक स्रोत के रूप में उभरता है, चिकित्सा है। प्राचीन समय में लोग बहुत दूर तक की यात्राएँ इसलिए किया करते थे ताकि उनकी कुछ बीमारियों का इलाज किया जा सके। अनेक साहित्यिक स्रोतों से यह सिद्ध हो चुका है कि अनेक बीमारियों के इलाज के लिए प्राचीन यूनान में उन दवाइयों का प्रयोग किया जाता था जो मिस्र में बनायी जाती थीं। कोस (Kos) और नाइडस (Knidos) में

अवस्थित अपने दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण चिकित्सकीय विद्यालयों के साथ प्राचीन यूनान अनेक तर्कसंगत औषधियों का घर हुआ करता था। यूनानी साहित्य में "एक्लीपायस (Asclepios)" नामक एक देवता का उल्लेख किया गया है जो अनन्य रूप से चिकित्सा और रोगमुक्ति का देवता है। उसकी उत्पत्ति उसकी स्थिति को सिर्फ एक देवता के रूप में ही नहीं सिद्ध करती, बल्कि उसे मानवता से भी सम्बद्ध करती है। इसका परिणाम यह हुआ कि उसे पवित्र और लौकिक (secular) औषधियों के मिश्रण के रूप में घोषित किया गया। अनेक यूनानी कस्बे चिकित्सा और रोगमुक्ति के देवता एक्लीपायस के गृहनगर बन गए। पाँचवीं शताब्दी ई.पू. में एथेंस में प्लेग फैला। अगली शताब्दी में देवालयों का पुनरुत्थान हुआ और तब एपीडाउरस (Epidaurus) ने अपना "कैटागोजियान (Katagogeion)" प्राप्त किया जिसमें दो तलों पर कुल मिलाकर 160 कमरे थे और दरबार के साथ-साथ शहतीरें भी थीं। हजारों रोगग्रस्त लोग एपीडाउरस के पास यह आशा लेकर आते थे कि "ऐबेटन (abaton)" नामक विशाल कक्ष में उन्हें सोने का अवसर मिलेगा और जब वे सोएँगे, तो उनके शरीर के जिस हिस्से में दर्द है, उसे स्पर्श करवा लेने से या अगले दिन खायी जाने वाली दवाइयों के बारे में जानकारी ले लेने से वे रोगमुक्त हो जाएँगे। अनेक बीमार लोग सचमुच पूर्णतः स्वस्थ हो गए थे क्योंकि प्रमाण बताते हैं कि अपनी आधी नेत्रदृष्टि गँवा चुकी एक महिला को उसकी पूरी नेत्रदृष्टि वापस मिल गयी थी, एक गूँगे बालक का इलाज कर दिया गया था और उसकी बोलने की शक्ति वापस आ गयी थी और एक व्यक्ति की आँत के छालों (Ulcer) को ठीक कर दिया गया था। बाद में, इसे रोमन शासकों और डाकुओं द्वारा लूटकर नष्ट कर दिया गया।

रोगमुक्ति प्रदान करने वाले इस देवालय ने अनेक लोगों को अपनी तरफ आकृष्ट किया था। आकृष्ट होने वाले लोगों की सूची में समृद्ध रोगी भी शामिल हुआ करते थे जो साम्राज्य के सभी हिस्सों से यहाँ आया करते थे और इनके मन्नतपूर्ण प्रस्तावों को देवालयों की दीवारों पर प्रदर्शित किया जाता था ताकि इन देवालयों की रोगमुक्ति क्षमता के प्रमाण की सनद रहे। ऐसा प्रतीत होता है कि ये देवालय लघु शल्यक्रियाओं के केन्द्र के रूप में भी लोकप्रिय हुए थे। इसके प्रमाण के तौर पर शल्यक्रिया में प्रयुक्त होने वाले कुछ चिकित्सकीय उपकरण एपीडाउरस के संग्रहालय में प्रदर्शित किए गए हैं। प्राचीन यूनानियों ने चिकित्सकीय अवधियों के बारे में भी बताया था। उन्होंने रोमवासियों को इन चिकित्सकीय अवधियों के औषधीय महत्व के बारे में सिखाया। रोमन काल में यह खनिज स्रोतों तक जाने का एक सामाजिक आयोजन था, जिसमें लोग आगन्तुकों के साथ घुलते-मिलते और समाजीकृत हुआ करते थे। यात्री खनिजयुक्त जल का उपयोग किया करते थे और रोमन काल में खनिज स्रोतों के लिए लोकप्रिय केन्द्रों में से कुछ केन्द्र आज भी विद्यमान हैं; जैसे दृ एक्वा कैलिडाई (Calidae), एक्वा सेक्सटियाई (Sexitiae), एक्वा सुलिस (Sulis) और एक्वा मैटियासेई (Mattiacae)।

जहाँ तक तुलनात्मक विवेचन का प्रश्न है, यात्रा के प्राचीन उद्देश्यों और यात्रा के आधुनिक उद्देश्यों के बीच कोई बड़ा अन्तर नहीं है। इसने ऐसी यात्राओं को जन्म दिया जो आधुनिक पर्यटन की आवश्यकता और उद्देश्य से बहुत मेल खाती हैं। धर्म, चिकित्सा, खेलकूद और संस्कृति के प्राचीन रूप अब धार्मिक पर्यटन, चिकित्सकीय पर्यटन, खेलकूद सम्बन्धी पर्यटन और सांस्कृतिक पर्यटन का आकार ग्रहण कर चुके हैं और आधुनिक युग में इन्होंने अपने लिए सम्भावनाओं की एक खिड़की खोली है। प्राचीन यात्राओं की कठिनाइयाँ अब विलासिताओं और सुविधापूर्ण साधनों के रूप में बदल चुकी हैं जिनका मुख्य जोर व्यवसाय, स्वास्थ्य, धर्म और खेलकूद जैसी विशिष्ट रुचियों पर है।

बोध प्रश्न 1

1) रोम और यूनान में यात्रा के विभिन्न उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्राचीन और आधुनिक पर्यटन के उद्देश्यों में क्या कोई अन्तर है?

.....

.....

.....

.....

.....

10.4 विश्व पर्यटन के सात आश्चर्य

यह सामग्री दो भागों में विभाजित है :

क) प्राचीन विश्व पर्यटन के सात आश्चर्य

ख) आधुनिक विश्व पर्यटन के सात आश्चर्य

उपरोक्त सामग्रियों पर नीचे विस्तार से चर्चा की गयी है।

10.4.1 प्राचीन विश्व पर्यटन के सात आश्चर्य

यूनान के प्राचीन ग्रन्थों से यह स्पष्ट होता है कि यूनानी कवि एण्टीपेटर (Antipater) ने सबसे पहले कुछ चयनित उत्कृष्टतम कृतियों का उल्लेख किया और उन्हें सात आश्चर्यों का नाम दिया। कवि एण्टीपेटर आधुनिक लेबनान के एक नगर का रहने वाला था और उसने अपनी आश्चर्यों की यह सूची 140 ई. पू. के लगभग प्रस्तुत की थी। इसीलिए ऐसा आकलन किया गया है कि ऐसी प्रथम सूची कम से कम 2155 वर्ष पुरानी है। तब से लेकर आज तक इस दिशा में अनेक प्रयास किए गए और इसका परिणाम यह हुआ कि अनेक भवन और स्मारक इस सूची में शामिल हो गए। चूँकि सूची में शामिल मदों की संख्या बढ़ती चली गयी, इसलिए कोई भी व्यक्ति किसी भी सूची के बारे में यह दावा नहीं कर सकता कि संसार के सात आश्चर्यों की घोषित सूची यही है। हालाँकि इस विषय पर जनता की राय यूनानियों द्वारा बनायी गयी सूची के साथ है और जनता इस सूची को अन्य स्रोतों पर वरीयता देती है। यदि हम विश्व के उस प्राचीन दौर पर ध्यान दें, जो हमें किसी सीमा तक ज्ञात था, तो अनेक सात आश्चर्य उभरते हैं। इन आश्चर्यों का गौरवशाली अतीत रहा है और इन्होंने विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं की यात्रा तय की है। ये आश्चर्य अपने देवताओं का आदर करने की और अपने विश्व पर अमिट प्रभाव छोड़ने की इन प्राचीन समाजों की दृढ़ इच्छा और संकल्प-शक्ति का प्रदर्शन आज भी करते हैं।

शताब्दियों से, नगरों, स्मारकों, भवनों, मन्दिरों, मस्जिदों, मकबरों, गिरजाघरों और अन्य संरचनाओं का सृजन और उनका निर्माण करने की मनुष्यों की प्रवृत्ति रही है ताकि उनकी विजयों और उनके अन्य कार्यों की स्मृतियों को सँजोया जा सके। इसने आने वाली पीढ़ियों को भी विविध तरीकों से प्रेरित किया। जहाँ तक प्राचीन विश्व के सात आश्चर्यों का सम्बन्ध है, ये सभी आश्चर्य स्थापत्य, मानवीय सृजनात्मकता और अभियान्त्रिकी की उत्कृष्टतम रचनाएँ हैं। वे कारीगर इतने अधिक कुशल थे कि अगर आधुनिक युग के कलाकार भी उन रचनाओं की प्रतिकृति (Replica) बनाने का प्रयास करें तो उनके लिए यह बहुत ही कठिन होगा। मानव-निर्मित इन उत्कृष्टतम कृतियों का निर्माण शास्त्रीय (क्लासिकल) काल के दौरान किया गया था और ये स्मारक उस पूरे भौगोलिक क्षेत्र में मौजूद हैं जिन्हें आज पश्चिमी जगत कहा जाता है। ऐसे स्मारकों के सन्दर्भ हेरोडोटस और कैलीमेकस के साहित्यिक कार्यों में उपलब्ध हैं और विद्वानों ने सात आश्चर्यों की सूची सूक्ष्मतापूर्वक प्रस्तुत की है। ये आश्चर्य शास्त्रीय पुरातनता को चित्रित करते हैं। प्राचीन विश्व के सात आश्चर्यों की जो सूची हमारे पास वर्तमान में उपलब्ध है, उस सूची को मध्यकाल में बनाया गया था। इस सूची में ऐसे स्थान शामिल हैं जिनका यूनानियों द्वारा या तो अन्वेषण किया गया था या विजित किया गया था। इन सभी उत्कृष्टतम कृतियों का कालखण्ड 2650 ई. पू. से तीसरी शताब्दी ई.पू. के बीच पड़ता है। ये कृतियाँ अनेक उद्देश्यों को पूर्ण करती थीं। इन उत्कृष्टतम कृतियों में से कुछ कृतियाँ शक्तिशाली राजाओं के मकबरे और महान देवी-देवताओं की मूर्तियाँ हैं जो प्रारम्भिक मानवता की तकनीकी और सभ्य सामर्थ्य पर टिप्पणी करती हैं। प्राचीन विश्व के आश्चर्यों के सम्बन्ध में यद्यपि कुछ और सूचियाँ भी मौजूद हैं किन्तु हेरोडोटस के कार्यों पर आधारित एकमात्र आधिकारिक सूची ही प्रामाणिक है और यह सूची विश्व के प्राचीन आश्चर्यों का विशिष्ट रूप से उल्लेख करती है।

विश्व पर्यटन के उन सात प्राचीन आश्चर्यों का विस्तृत विवरण नीचे दिया गया है :

1) **बेबीलोन के हैंगिंग गार्डेन्स :** बेबीलोन के हैंगिंग गार्डेन्स का निर्माण बेबीलोनिया (आधुनिक इराक) के लोगों द्वारा 600 ई. पू. में फरात (Euphrates) नदी के निकट कराया गया था। हैंगिंग गार्डेन की बाहरी दीवारें 56 मील लम्बी, 80 फीट मोटी और 320 फीट ऊँची थीं। इस तथ्य की प्रामाणिकता कभी भी पुरातात्विक खोजों द्वारा सिद्ध नहीं हुई है। यहाँ पर सिंचाई की एक ऐसी प्रणाली मौजूद थी जिसे जलाशय के साथ-साथ पानी खींचने वाले यन्त्र (पम्प) और घिरनी (Wheel) से सुसज्जित किया गया था ताकि पानी फरात नदी से बगीचे तक लाया जा सके। यह दावा किया गया है कि राजा नेब्जुकेदनेजर (Nebuchadnezzar) द्वित्तीय ने इस बगीचे (गार्डेन) का निर्माण इसलिए कराया था ताकि उसकी पत्नी को अपने माता-पिता की याद कम सताए लेकिन प्रथम शताब्दी ई. पू. में एक भूकम्प के कारण यह नष्ट हो गया और आधुनिक विद्वानों के लिए इसकी सटीक अवस्थिति जानने का कोई भी प्रमाण शेष नहीं बचा।

2) **ओलम्पिया में जीअस की प्रतिमा :** स्वर्ण और हाथीदाँत से सुसज्जित इस प्रतिमा का निर्माण मूर्तिकार फिडियस द्वारा 435 ई. पू. में ओलम्पिया में किया गया था। इस प्रतिमा का नाम यूनानी देवता जीअस (Zeus) के नाम पर रखा गया है। जीअस की यह प्रतिमा लगभग 40 फीट ऊँची थी और यह बैठी हुई मुद्रा की प्रतिमा थी। इसके नीचे से होकर एक गलियारा ओलम्पिया के देवालय की तरफ जाता था। इस देवालय का सृजन विशेषरूप से इस प्रकार किया गया था कि इसमें आश्चर्यजनक मूर्तियाँ रखी जा सकें। प्रतिमा की लम्बाई इस प्रकार रखी गयी थी कि यह मन्दिर के शिखर को लगभग स्पर्श करती थी। यह प्रतिमा वहाँ पर आठवीं शताब्दी ई.पू. तक कायम रही तथा ईसाइयत के प्रादुर्भाव के साथ ही चौथी शताब्दी ई. पू. में इसे बन्द कर दिया

गया। ऐसा विश्वास है कि पाँचवीं और छठवीं शताब्दी ई. पू. के दौरान आग लगने के कारण यह गिर गयी और नष्ट हो गयी।

3) **हैलीकारनेसस में मकबरा (Mausoleum) :** आधुनिक तुर्की के पश्चिमी भाग में फारसी इलाके के एक राजप्रमुख (गवर्नर) मासोलस का मकबरा स्थित था। यह 135 फीट ऊँचा मकबरा (मॉसोलियम) था और इसका निर्माण 351 ई. पू. में फारसी और यूनानी वास्तुविदों द्वारा किया गया था। मकबरे में सफेद संगमरमर से बनी हुई तीन परतें हैं जिनसे प्रतीत होता है कि इसमें लीसियन (Lycian), मिस्री और यूनानी स्थापत्य की शैलियाँ अपनायी गयी हैं। इस मकबरे का मुख्य आकर्षण यह था कि इसमें 60 फुट के पत्थरों की सीढ़ियाँ थीं, 36 आयोनिक (वास्तुकला की एक विशिष्ट शैली) स्तम्भ थे और पिरामिड के आकार की 24 स्तर की छत थी जिसके शिखर पर रथ की एक प्रतिमा रखी हुई थी और चार घोड़े इस रथ को खींचते हुए दिखाए गए थे। शताब्दियाँ बीतने के साथ-साथ यद्यपि विभिन्न भूकम्पों ने इसकी नींव को हिला दिया था और परिणामस्वरूप एक भयंकर भूकम्प ने 1494 ई. पू. में इसे पूर्ण रूप से तबाह कर दिया। इसके अवशेषों का पुनः उपयोग इसी के निकट स्थित एक किले की दीवार बनाने में किया गया।

4) **आर्टेमिस (Artemis) का मन्दिर :** इस मन्दिर का निर्माण-कार्य लीडिया (Lydia) के क्रोएशस (Croesus) ने शुरू करवाया था और इसे पूर्ण होने में 120 वर्ष लगे थे। आर्टेमिस के मन्दिर का निर्माण "एफेसस (Ephesus)" (आधुनिक तुर्की) नामक यूनानी नगर में किया गया था। प्राकृतिक आपदाओं के साथ-साथ आक्रमणों के कारण यह मन्दिर अनेक बार नष्ट हुआ और साहित्य के अनुसार अपने मूल स्थल पर ही इसका पुनर्निर्माण तीन बार किया गया। 401 ई. में ईसाई बिशप सेण्ट जॉन क्राइसोस्टोम की देखरेख में भीड़ ने अन्ततः इस मन्दिर को नष्ट कर दिया लेकिन सन् 1869 में जब जॉन टर्टल वुड ने मन्दिर के स्तम्भों की दुबारा खोज की तो इसे "केस्टर (Cayster)" नदी में दफना दिया।

5) **सिकन्दरिया (अलेक्जेण्ड्रिया) का प्रकाश स्तम्भ :** यह प्रकाश स्तम्भ मानव-निर्मित संरचनाओं में से सबसे ऊँची संरचना के रूप में कई शताब्दियों तक इस पृथ्वी पर खड़ा रहा। इसकी ऊँचाई 390 फीट से 450 फीट के बीच थी। इसका निर्माण तीसरी शताब्दी ई. पू. में टॉलेमेइक राज्य द्वारा किया गया था और यह सिकन्दरिया के नगर में स्थित था। इस प्रकाश स्तम्भ का मुख्य वास्तुकार सोस्ट्रैटोज़ (Sostratos) था, जो एक यूनानी था। इसकी स्थापना के पीछे मुख्य उद्देश्य यह था कि उन जहाजों को दिशा प्रदान की जाए जो नील नदी के पोताश्रय के लिए जाते हों। पुरातत्वविदों द्वारा खोजे गए सिक्कों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ है कि यह एक त्रि-स्तरीय संरचना थी जिसका आधार गोल था, मध्य भाग अष्टभुजाकार था और उच्चतम भाग बेलनाकार था। शिखर के चरम स्थल पर सोलह फीट ऊँची एक प्रतिमा थी जो शायद टॉलेमी द्वित्तीय यानी सिकन्दर महान की थी। तीन लगातार भूकम्प इनके विनाश के कारण थे और बचे हुए अवशेषों का पुनर्प्रयोग तेरहवीं शताब्दी में इसी स्थल पर एक किले के निर्माण में किया गया। सन् 1994 में पुरातत्वविदों ने इस प्रकाश स्तम्भ के अवशेषों को सिकन्दरिया पोताश्रय के निकट नदी की गहराई में से खोज निकाला और वर्तमान समय में यह उन गोताखोरों के लिए आकर्षण का एक प्रमुख केन्द्र बन गया है जो इस प्रकाश स्तम्भ के अवशेषों को देखने में रुचि रखते हैं।

6) **रोड्स का कोलोसस :** प्राचीन विश्व के सात आश्चर्यों की पंक्ति में अगला नाम यूनानी देवता हेलियोस की 100 फीट ऊँची एक विशाल प्रतिमा का है। इसका निर्माण हेलेनिस्टिक यूनान में 292 ई. पू. से 280 ई. पू. के दौरान कराया गया था और इसका अभिकल्पन (डिज़ाइन) लिण्डोस के चारेस (Chares) ने किया था। यह अपने समय की सर्वाधिक ऊँची प्रतिमा थी। यह प्रतिमा सूर्य देवता को समर्पित है। रोड्स के कोलोसस की यह प्रतिमा नंगी खड़ी हुई है, इसके एक हाथ में टॉर्च है और दूसरे हाथ में बरछी। यह 226 ई. पू. में एक भूकम्प में नष्ट हो गयी। परवर्ती काल में, रोड्स पर आक्रमण के पश्चात अरब सेनाओं ने इसे जब्त कर लिया और कोलोसस के मलबे को बेच दिया तथा प्रतिमा के स्थान के प्रमाण को पूरी तरह से हटा दिया।

7) **गीजा के पिरामिड :** यह एक तथ्य है कि प्राचीन विश्व के आश्चर्यों में से केवल गीजा के महान पिरामिड ही हैं, जिनका अस्तित्व आज भी बचा हुआ है। इनका निर्माण प्राचीन मिस्रवासियों द्वारा 2650 ई. पू. से 2500 ई. पू. के बीच किया गया था और ये "फैरो" शासकों के मकबरे हैं। विशाल पिरामिडों के केन्द्र मिस्र में गीजा, खुफू, खाफरा और मेनकाउरा के निकट स्थित हैं। इन तीन केन्द्रों में से खुफू बहुत लोकप्रिय है और यह महान पिरामिड की स्थली के रूप में व्यापक रूप से विख्यात है। यह तेरह एकड़ में विस्तृत है और इसमें पत्थरों के करीब बीस लाख टुकड़े हैं। इन टुकड़ों में से प्रत्येक का भार दो से तीस टन के बीच है। यह कहा जाता है कि अपने निर्माण के समय पिरामिड सफेद पत्थरों से ढका हुआ था और शिखर पर रखे जाने वाले पत्थर के साथ स्वर्ण भी रखा गया था। किन्तु काफी समय पहले आक्रमणकारियों ने इन सबको लूट लिया। गीजा के पिरामिड की विशिष्टता इसकी तकनीक है जो भारी पत्थरों को उचित स्थान पर रखने से सम्बन्धित थी। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इन पत्थरों को रखने के लिए लॉग-रोलर और बिना पहियों वाली गाड़ी का इस्तेमाल किया जाता था।

10.4.2 आधुनिक विश्व पर्यटन के सात आश्चर्य

ऐसे बहुत सारे आश्चर्य हैं जिन्हें हम विश्व के आश्चर्य कहते हैं। प्राचीन विश्व के प्राचीन सात आश्चर्यों ने उद्देश्य को पूरा जरूर किया लेकिन मिस्र में स्थित गीजा के पिरामिडों के अलावा उनमें से किसी का भी अस्तित्व आज नहीं है। इस प्रकार यह सोचा गया कि एक सूची बनायी जानी चाहिए ताकि उसमें ऐसे स्मारकों को शामिल किया जा सके जो उत्कृष्टतम कृतियाँ हैं और जो अपने विध्वंस की अवस्था में हैं। इसके महत्व का विश्लेषण करते हुए, विश्व के नवीन सात आश्चर्यों की पहचान और उनकी घोषणा करने के लिए सन् 2007 में लाखों लोगों ने इस सम्बन्ध में अपना मत दिया और इस प्रकार सात आश्चर्यों की सूची बनाने की प्राचीन परम्परा को पुनर्जीवित किया। ऐसे स्मारक यूनेस्को के विश्व विरासत स्थलों की सूची में शामिल हैं। यह नयी सूची पुरानी सूची की तरह ही शक्तिशाली है और इसमें रोम के कोलोसियम के साथ-साथ माचू-पिचू के इंका नगर जैसी मानव-निर्मित रचनाएँ सम्मिलित हैं। नीचे सात आश्चर्यों की सूची दी गयी है, जिन्हें आधुनिक विश्व पर्यटन के सात आश्चर्य माना जाता है और उनका वर्णन भी नीचे दिया गया है :

1) **चीन की महान दीवार :** चीन की महान दीवार का निर्माण पाँचवी शताब्दी ई. पू. और सोलहवीं शताब्दी ई. के बीच किया गया। यह मिट्टी और पत्थरों से बनायी गयी एक किलेबन्दी है जिसका मुख्य उद्देश्य आक्रमणकारियों से चीन की सीमाओं को सुरक्षित रखना था। वास्तव में, चीन की महान दीवार अनेक दीवारों की एक श्रृंखला है जिसका विस्तार लगभग चार हजार मील तक है। यह संसार की सबसे लम्बी मानव-निर्मित रचना है।

2) **क्राइस्ट द रेडिमर की प्रतिमा :** यह ब्राजील के रियो-डि-जेनेरो में स्थित है। क्राइस्ट द रेडिमर की इस प्रतिमा का निर्माण सन् 1931 में कॉर्कोवाडो पर्वत पर किया गया था और इसकी ऊँचाई 131 फीट है। प्रतिमा के निर्माण में डेको (Deco) शैली को अपनाया गया है और ऐसा प्रतीत होता है कि महान क्राइस्ट ब्राजीलियाई लोगों के पास ही मँडरा रहे हैं और उन्हें अपना शाश्वत आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं। प्रतिमा का निर्माण कंक्रीट और सेलखड़ी से किया गया है। प्रतिमा का मुख्य वास्तुकार हाइटर द सिल्वा कोस्टा (Heitor da Silva Costa) था। इसके निर्माण में लगाए गए खर्च का अनुमान ढाई लाख अमरीकी डॉलर था। इस राशि का अधिकांश हिस्सा दान और चन्दे में मिला था। यह प्रतिमा रियो और ब्राजील के लिए एक आदर्श प्रतिमा बन गयी है।

3) **माचू पिचू :** इंका साम्राज्य को समर्पित यह नगर दो पर्वतों के शिखरों के बीच खतरनाक तरीके से स्थित था। माचू पिचू की स्थापना 1400 ई. के मध्य में "शानदार ग्रेनाइट" के रूप में की गयी थी लेकिन बाद में इंका लोगों ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। सन् 1911 में पुरातत्वविद हीरम बिंघम ने इस स्थल की दुबारा खोज की और इस स्थल ने अपने अतीत के गौरव को बनाए रखा था। इस स्थल पर रेलगाड़ी द्वारा या पैदल या हेलीकॉप्टर द्वारा जाया जा सकता है।

4) **चिचेन इत्जा :** यह स्थल मेक्सिको में स्थित है और माया संस्कृति की स्थापना के लिए प्रसिद्ध है। चिचेन इत्जा के शानदार अवशेष माया संस्कृति की कहानी स्वयं कहते हैं। इस नगर का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह केवल ऐसा नगर ही नहीं था जो व्यापार और वाणिज्य के एक केन्द्र के रूप में सुविख्यात हो, जो 800 ई. से 1200 ई. तक निरन्तर फूला-फला हो और जहाँ दासों के साथ-साथ कपड़ा, शहद और नमक भी बेचा जाता हो, बल्कि यह ऐसा नगर भी था जो माया सभ्यता का एक राजनीतिक और आर्थिक केन्द्र था। इसके प्रसिद्ध अवशेषों में से जिसकी तरफ पर्यटकों का सर्वाधिक ध्यानाकर्षण किया जाता है, वह इसकी खगोलीय वेधशाला है।

5) **रोमन कोलोसियम :** यह अपनी दीर्घवृत्ताकार संरचना के लिए विख्यात है जिसमें तलवारबाजी, जानवरों के शिकार, फाँसी और लड़ाइयों के पुनर्प्रारम्भ से सम्बन्धित आयोजनों को देखने के लिए पचास हजार दर्शक एक साथ आकर बैठा करते थे। इस कोलोसियम का निर्माण 78 ई. से 80 ई. के बीच किया गया था और पाँच सौ वर्षों तक इसका उपयोग होता रहा। भूकम्प और पत्थरों को लूटने वाले डाकुओं की वजह से यह स्मारक बर्बाद हो गया लेकिन कोलोसियम के एक छोटे-से हिस्से को पर्यटकों के लिए खोला गया है। अपनी स्थापना के दो हजार वर्षों के पश्चात भी इसका अभिकल्पन (डिजाइन) आधुनिक निर्माणकर्ताओं को प्रभावित करता है।

6) **ताजमहल :** यह मुगल सम्राट शाहजहाँ की पत्नी मुमताज महल को समर्पित एक कब्र है जिसका निर्माण 1632 ई. से 1648 ई. के बीच यमुना नदी के तट पर किया गया था। ताजमहल सफेद संगमरमर में बनायी गयी अपनी संरचनाओं के लिए उल्लेखनीय है। इसके साथ ही इसमें फारसी, इस्लामी, तुर्की और भारतीय स्थापत्य की उल्लेखनीय शैलियाँ भी मौजूद हैं। ताजमहल का अहाता उभरे हुए मार्गों के बगीचों से लबरेज है और यहाँ पानी में डूबी हुई फुलवारी है और एक सीधा रैखिक चमकदार तालाब भी है।

7) **पेट्रा :** पेट्रा नगर नबाटियन (Nabataean) राजवंश की राजधानी रहा और इस पर राजा एरेटस (Aretas) चतुर्थ ने शासन किया था। इस नगर का अस्तित्व 9 ई. पू. से लेकर 40 ई. पू. तक रहा। यह छद्म मरुद्यान की रचना करने वाली जल तकनीक,

जटिल सुरंगों के निर्माण और जल चैम्बरों के लिए विख्यात था। इस सभ्यता की विशेषता पत्थरों पर भाँति-भाँति की संरचनाओं के रूप में की गयी नक्काशी है जो देखने वाले का मन मोह लेती है। 4000 लोगों के बैठ सकने की क्षमता से युक्त एक अखाड़े के साथ-साथ अल-दाइर (El-Deir) नाम का एक मठ यहाँ के कुछ ऐसे उल्लेखनीय स्थलों में शामिल हैं जिनसे नगर की शोभा बढ़ जाया करती थी।

बोध प्रश्न 2

1) विश्व पर्यटन के सात आश्चर्यों से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) "गीजा के महान पिरामिड" पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) आधुनिक विश्व पर्यटन के आश्चर्यों के महत्व का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

10.5 सारांश

प्राचीन और मध्यकाल में यात्रियों के उद्देश्य, विशेष रूप से रोम और यूनान में, विविधतापूर्ण थे। पर्यटन के प्रारम्भिक चरण ने अपना विकास व्यापार और वाणिज्य, धर्म, खेलकूद और स्वास्थ्य के रूप में देखा। यह रोमन सम्राट ही थे जिन्होंने पर्यटन उत्पादों की प्रचुरता के एक केन्द्र के रूप में भूमध्यसागरीय क्षेत्र का विकास किया। ठीक ही कहा गया है कि जहाँ चाह होती है, वहाँ राह होती है और यह बात तब बिल्कुल सत्य सिद्ध होती है जब हम पर्यटन के विकास में रोमन साम्राज्य के योगदान का मूल्यांकन करते हैं। यह एक तथ्य है कि प्राचीन यूनानी और रोमन लोगों ने, जो कि सच्चे यात्री थे, अपने भौगोलिक क्षेत्रों में ऐसे स्थलों का विकास करने पर विशेष ध्यान दिया था जो फुर्सत और आनन्द के गन्तव्य के रूप में लोगों को आकर्षित कर सकें। इस प्रकार उन्होंने आधुनिक पर्यटन की नींव डालने की प्रक्रिया को बल प्रदान किया था। धार्मिक छुट्टियों के कारण रोमवासियों ने बारम्बार की जाने

वाली अपनी यात्राओं के लिए आधारभूत संरचना विकसित की और इसका परिणाम यह हुआ कि 300 ई. तक आते-आते रोम में 90,000 किलोमीटर लम्बी अच्छी सड़कों का एक जाल अस्तित्व में आ गया। रोमनों को यह श्रेय भी जाता है कि उन्होंने समुद्र के किनारे आश्रयस्थल (Resorts) निर्मित किए, खासतौर पर उच्च वर्ग के लिए। इस शाही रोमन संस्कृति ने जन-पर्यटन के लिए मार्ग खोल दिया। रोमन लोग यूनान की यात्रा इसके स्मारकों, इसके उल्लेखनीय आख्यानों, ओलम्पिक खेलों और अन्य उत्सवों के लिए किया करते थे। कुछ कुलीन रोमनों ने दूसरी शताब्दी ई.पू. के आसपास यूनान की यात्रा की थी, ऐसे स्थल आधुनिक पर्यटकों के यात्रा-कार्यक्रमों के अंग बन गए। सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी के दौर को भव्य यात्रा का दौर भी कहा जाता है क्योंकि इस अवधि में कुलीन यात्रा में वृद्धि देखी गयी। यूनानियों को प्रारम्भिक महान यात्री माना जाता है जो सिर्फ इसलिए यात्राएँ करते थे ताकि वे अपने उन निष्कर्षों की साझेदारी कर सकें जिनकी खोज वे शेष विश्व की अपनी यात्राओं के दौरान किया करते थे। यूनानियों की यात्रा का उद्देश्य व्यापार और वाणिज्य, धर्म, ओलम्पिक खेल देखने और कुछ बीमारियों का इलाज करवाने तक ही सीमित नहीं रहा करता था बल्कि उन्होंने आनन्ददायक पर्यटन की सम्भावना का अन्वेषण भी किया था।

यात्रा के प्राचीन उद्देश्यों और यात्रा के आधुनिक उद्देश्यों के बीच कोई बड़ा अन्तर नहीं है। इसने ऐसी यात्राओं को जन्म दिया जो आधुनिक पर्यटन की आवश्यकता और उद्देश्य से बहुत मेल खाती हैं। धर्म, चिकित्सा, खेलकूद और संस्कृति के प्राचीन रूप अब धार्मिक पर्यटन, चिकित्सकीय पर्यटन, खेलकूद सम्बन्धी पर्यटन और सांस्कृतिक पर्यटन का आकार ग्रहण कर चुके हैं और आधुनिक युग में इन्होंने अपने लिए सम्भावनाओं की एक खिड़की खोली है। प्राचीन यात्राओं की कठिनाइयाँ अब विलासिताओं और सुविधापूर्ण साधनों के रूप में बदल चुकी हैं जिनका मुख्य जोर व्यवसाय, स्वास्थ्य, धर्म और खेलकूद जैसी विशिष्ट रुचियों पर है।

जहाँ तक प्राचीन विश्व के सात आश्चर्यों का सम्बन्ध है, ये सभी आश्चर्य स्थापत्य, मानवीय सृजनात्मकता और अभियान्त्रिकी की उत्कृष्टतम रचनाएँ हैं। वे कारीगर इतने अधिक कुशल थे कि अगर आधुनिक युग के कलाकार भी उन रचनाओं की प्रतिकृति (Replica) बनाने का प्रयास करें तो उनके लिए यह बहुत ही कठिन होगा। प्राचीन विश्व के सात आश्चर्यों की जो सूची हमारे पास वर्तमान में उपलब्ध है, उस सूची को मध्यकाल में बनाया गया था। इस सूची में ऐसे स्थान शामिल हैं जिनका यूनानियों द्वारा या तो अन्वेषण किया गया था या विजित किया गया था।

यह सोचा गया कि एक सूची बनायी जानी चाहिए ताकि उसमें ऐसे स्मारकों को शामिल किया जा सके जो उत्कृष्टतम कृतियाँ हैं और जो अपने विध्वंस की अवस्था में हैं। इसके महत्व का विश्लेषण करते हुए, विश्व के नवीन सात आश्चर्यों की पहचान और उनकी घोषणा करने के लिए सन् 2007 में लाखों लोगों ने इस सम्बन्ध में अपना मत दिया और इस प्रकार सात आश्चर्यों की सूची बनाने की प्राचीन परम्परा को पुनर्जीवित किया। ऐसे स्मारक यूनेस्को के विश्व विरासत स्थलों की सूची में शामिल हैं।

10.6 शब्दावली

यात्रा के उद्देश्य : यात्रा करने का कारण।

प्राचीन आश्चर्य : बेबीलोन के हैंगिंग गार्डेन्स, ओलम्पिया में जीअस की प्रतिमा, हैलीकारनेसस में मकबरा, आर्टेमिस का मन्दिर, सिकन्दरिया

का प्रकाश स्तम्भ, रोड्स का कोलोसस, गीजा का महान पिरामिड आदि विश्व पर्यटन के प्राचीन आश्चर्य हैं।

आधुनिक आश्चर्य : चीन की महान दीवार, क्राइस्ट द रेडिमर की प्रतिमा, माचू पिचू, चिचेन इत्जा, रोमन कोलोसियम, ताजमहल, पेट्रा आदि विश्व पर्यटन के आधुनिक आश्चर्य हैं।

10.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उप-भाग 10.3.1, 10.3.2 और 10.3.3 देखिए।

2) भाग 10.3 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 10.4 देखिए।

2) उप-भाग 10.4.1 देखिए।

3) उप-भाग 10.4.2 देखिए।

इकाई 11 पर्यटन और दर्शनीय खेल-कूद

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 पर्यटन और दर्शनीय खेल-कूद

11.3 ओलम्पिक खेल

11.4 रथदौड़

11.5 तलवारबाजों की लड़ाइयाँ

11.6 सारांश

11.7 शब्दावली

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप इस योग्य हो जाएँगे कि आप :

- पर्यटन और दर्शनीय खेलकूद के सम्बन्ध को समझ सकें;
- ओलम्पिक खेलों के कारण और महत्व को खोज सकें;
- रथदौड़ की प्रक्रिया से परिचित हो सकें; और
- तलवारबाजी का अर्थ जान सकें।

11.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने प्राचीन और मध्यकालीन विश्व में यात्रा और पर्यटन गतिविधि पर चर्चा की है। विश्व के आश्चर्यों के साथ-साथ हमने प्राचीन यूनान और रोम में पर्यटन के प्रेरक कारकों पर भी चर्चा की है। वर्तमान इकाई में हम प्राचीन और मध्यकालीन विश्व की उन गतिविधियों पर चर्चा करेंगे जो खेलकूद पर्यटन, मनोरंजन और साहसिक पर्यटन के विकास के लिए उत्तरदायी रहीं। इन गतिविधियों की चर्चा हम ओलम्पिक खेलों, रथदौड़ और तलवारबाजों की लड़ाइयों के माध्यम से करेंगे। खेलकूद पर्यटन एक नवीन परिघटना प्रतीत होता है किन्तु इसकी जड़ें प्राचीन यूनान में निहित हैं। खेलकूद में सहभागिता करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक लोगों के जाने का इतिहास अतीत में 776 ई. पू. तक जाता है जब ओलम्पिक खेल शुरू हुए थे और ये खेल आज भी जारी हैं।

दूसरी शताब्दी ई. स्वर्णिम काल सिद्ध हुई क्योंकि इस समय तक रोमवासियों की राजनीतिक व्यवस्था स्थायी हो चुकी थी। इस दौर में, रोमन लोग यूनान की यात्रा इसके स्मारकों, इसके उल्लेखनीय आख्यानों, ओलम्पिक खेलों और अन्य उत्सवों के लिए किया करते थे। एक रोमन सम्राट हैड्रियन (Hadrian) को "थीसियस का एथेंस (Theseus's Athens)" कहकर सम्मानित किया जाता है क्योंकि उसने एथेंस को नए और शानदार भवनों से सुसज्जित करके सुन्दर बनाया। इसकी पुष्टि उसके सम्मान में बनाए गए विजय स्मारक में उल्लिखित शिलालेखों से होती है। रोमवासी अत्यधिक भ्रमण करने वाले यात्री थे जिन्होंने चर्चों और

कैथेड्रलों के लिए यूनान की छानबीन की और लगभग प्रत्येक मन्दिर तक गए। कुछ कुलीन रोमनों ने दूसरी शताब्दी ई.पू. के आसपास यूनान की यात्रा की थी, ऐसे स्थल यूनान का भ्रमण करने वाले आधुनिक पर्यटकों के यात्रा-कार्यक्रमों के अंग बन गए। कुछ साहित्यिक स्रोतों में यह उल्लेख किया गया है कि रोमन पर्यटकों के साथ पर्यटक-मार्गदर्शक (टूरिस्ट गाइड) हुआ करते थे और मन्दिर की कलाकृतियों की सुरक्षा के लिए पुलिस को नियुक्त किया जाता था। हेरोडोटस और पॉसेनियस ने भी कुछेक अवसरों पर मार्गदर्शकों द्वारा प्रदान की गयी सेवाओं की गुणवत्ता का उल्लेख करते हुए मार्गदर्शकों की सेवाओं की पुष्टि की है। पर्यटक-मार्गदर्शक इसके लिए उत्तरदायी थे कि वे स्थान-विशेष पर घटित घटनाओं की कहानियाँ सुनाते हुए पर्यटकों को उल्लेखनीय प्रतीक, मन्दिर और मूर्तियाँ दिखाएँ तथा स्थानीय रीति-रिवाजों और प्रथाओं के बारे में बताएँ। इस प्रकार मार्गदर्शक लोग सांस्कृतिक दलाल हो गए और उन्होंने सिद्ध किया कि रोम में पर्यटन के विकास के पहले भी पर्यटन का अस्तित्व हुआ करता था। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन यात्रियों और आधुनिक यात्रियों के बीच बहुत सारी समानताएँ मौजूद रही हैं। जिस प्रकार आधुनिक पर्यटक अपनी उपस्थिति के चिन्ह के रूप में स्मारकों पर "भित्तिचित्र (Graffiti)" उत्कीर्ण कर देते हैं, उसी प्रकार मिस्र में भी उच्चवर्गीय यात्रियों के लिए शिलालेखों के रूप में ऐसे चिन्हों की पहचान की गयी थी। रोमन पर्यटक अपनी यात्रा को यादगार बनाने के लिए स्मृति-चिन्ह खरीदा करते थे तथा अपने मित्रों और सगे-सम्बन्धियों के लिए प्रतीकस्वरूप उपहार भी वे खरीदा करते थे। पर्यटन का प्राचीन रूप विशुद्ध तरीके से कला और स्थापत्य की रुचियों से प्रेरित हुआ करता था और अनेक शताब्दियों के उपरान्त इसने भव्य पर्यटन का आकार ग्रहण किया।

11.2 पर्यटन और दर्शनीय खेलकूद

खेलकूद पर्यटन एक नवीन परिघटना प्रतीत होता है किन्तु इसकी जड़ें प्राचीन यूनान में निहित हैं। वर्तमान परिदृश्य में, खेलकूद पर्यटन को पर्यटन का एक वैकल्पिक रूप माना जाता है। यह दर्शक ही होते हैं जिनके भरोसे किसी आयोजन को सफल बनाया जा सकता है। दर्शनीय खेलकूद में शामिल होने के क्रम में लोग दूर स्थित किसी जगह पर या तो इसलिए जाते थे कि वे खेलकूद की गतिविधियों को देखकर उनका आनन्द ले सकें या फिर इसलिए जाते थे कि खेलकूद की उन गतिविधियों में व्यक्तिगत रूप से वे भाग ले सकें। प्राचीन यूनान में ओलम्पिया जैसे महत्वपूर्ण स्थान खेलकूद की गतिविधियों का आयोजन करने वाले सुविख्यात पर्यटक स्थल थे। यद्यपि ऐसे आयोजनों में सहभागिता करने का मुख्य उद्देश्य खेलकूद ही होता था क्योंकि ये स्थल खेलकूद की गतिविधियों के केन्द्र हुआ करते थे लेकिन तीर्थयात्रा या धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक पर्यटन जैसे अन्य आकर्षणों की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। आगन्तुक लोग खेलकूद पर्यटन के लिए प्राचीन यूनान के प्रसिद्ध स्थलों, जैसे डेल्फी, ओलम्पिया, नीमिया आदि की यात्रा भी किया करते थे। ये केन्द्र अपनी कला और स्थापत्य, स्मारकों, भवनों और मूर्तिकला आदि के लिए भी विख्यात थे और यूनानी (हेलेनिस्टिक) तथा रोमन कालों के दौरान भव्य पर्यटन में भाग लेने वाले सम्भ्रान्त वर्गों के लिए डेरा डालने वाले एक स्थल के रूप में भी इन्होंने पर्यटकों को आकर्षित किया था। जिन विशेष भौगोलिक क्षेत्रों में इन खेलों का आयोजन होता था उनका विकास अपने-आप ही हो गया क्योंकि खेलकूद की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करने के लिए भारी संख्या में प्रतिभागी यहाँ आते थे, इन खेलों को देखने के लिए अनेक दर्शक यहाँ आते थे और इन स्थलों पर खेलकूद का एक जीवन्त वातावरण हुआ करता था। इसके साथ ही यहाँ खाने-पीने की सुविधाएँ भी उपलब्ध होती थीं तथा स्मृति-चिन्हों के साथ-साथ अन्य वस्तुओं की खरीदारी के लिए यहाँ दुकानें भी हुआ करती थीं। ओलम्पिया जैसे खेलकूद के स्थलों

को बौद्धिक और साहित्यिक गतिविधियों के सन्दर्भ में यह श्रेय भी जाता है कि इन स्थलों ने लेखकों और चिन्तकों को अपने विचार और कार्य साझा करने के लिए एक मंच भी उपलब्ध कराया क्योंकि ओलम्पिक खेल यूनान के विभिन्न कोनों से बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित किया करते थे। हालाँकि परिवहन और ठहरने की सुविधाओं की खराब गुणवत्ता और दमघोंटू गर्मी जैसी चीजें भी खेलप्रेमी भीड़ को कभी हतोत्साहित नहीं कर सकी।

खेलकूद में सहभागिता करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक लोगों के जाने का इतिहास अतीत में 776 ई. पू. तक जाता है जब ओलम्पिक खेल शुरू हुए थे और ये खेल आज भी जारी हैं। ओलम्पिक नाम ओलम्पिया नामक एक स्थल के नाम से लिया गया है जहाँ ओलम्पिक खेल आयोजित हुआ करते थे। इन खेलों को देखने और इनमें सहभागिता करने के लिए यूनान के विभिन्न क्षेत्रों से बहुत सारे लोग ओलम्पिया में एकत्रित हुआ करते थे ताकि वे दर्शक और प्रतिभागी के रूप में खेलों के इस उत्सव का आनन्द ले सकें। इन ओलम्पिक खेलों के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व को समझते हुए ओलम्पिक खेलों के परवर्ती चरण में अनेक चीजों का विकास किया गया; जैसे – परिवहन की गुणवत्ता में वृद्धि करने के लिए सड़कों पर साइनबोर्डों का निर्माण किया गया, ठहरने की बेहतर सुविधाओं को लागू किया गया और उन विशिष्ट उत्सवों की पहचान की गयी जिनका आयोजन ओलम्पिक खेलों के साथ-साथ किया जा सकता था।

11.3 ओलम्पिक खेल

प्राचीन ओलम्पिक खेल यूनान में "ओलम्पिया" नामक स्थान पर 776 ई. पू. में आयोजित किए गए थे। यह स्थल पवित्र माना जाता था और यह देवताओं के राजा जीअस को समर्पित था। "ओलम्पिया" स्थल एक अलग-थलग इलाके में स्थित था और यहाँ तक पहुँचना आसान नहीं था। बहुत सारे लोगों को एथेंस से 340 किलोमीटर पैदल चलकर यहाँ तक जाना पड़ता था। जलपोतों से अपनी यात्रा के दौरान इन पोतों के टूटने या दुर्घटनाग्रस्त होने की स्थिति में बहुत सारे दर्शकों को अपनी जान तक गँवानी पड़ती थी। इतनी सारी खामियों और कठिनाइयों के बावजूद यूनानी लोगों का जुनून इन खेलों के लिए वैसा ही हुआ करता था जैसा हिन्दुओं को चारों धाम की यात्रा करने का या मुसलमानों को मक्का की यात्रा करने का होता है। यूनान के प्रत्येक नागरिक से यह उम्मीद की जाती थी कि अपने जीवन में कम से कम एक बार वह ओलम्पिक खेल देखने जरूर जाए, हालाँकि नागरिकों के ऊपर ऐसा करने का कोई दायित्व नहीं डाला गया था। ओलम्पिक खेलों के अस्तित्व के बारे में एक रोचक मिथक है। एक मिथक में यह कहा गया है कि जगह हासिल करने के लिए क्रोनोस और जीअस में ओलम्पिया में ही लड़ाई हुई थी और ओलम्पिक खेल जीअस की विजय का स्मरण कराते हैं। एक दूसरे सन्दर्भ में यह उल्लेख किया गया है कि ओलम्पिया की स्थापना हिप्पोडैमिया के साथ अपने विवाह का जश्न मनाने के लिए पेलोप्स ने की थी। हालाँकि ओलम्पिक खेलों के लिए मूल स्थान ओलम्पिया ही था और यहाँ ओलम्पिक खेल लगातार लगभग 293 बार आयोजित किए गए थे। लगभग चालीस हजार दर्शकों ने इन ओलम्पिक खेलों में अपनी रुचि का प्रदर्शन किया था और खेल देखने के लिए इस स्थल पर प्रवेश पाना लगभग शुल्कमुक्त था। खेल देखते समय सभी दर्शकों को अधिकांश समय तक खड़े ही रहना पड़ता था क्योंकि बैठने के लिए वहाँ कुर्सियाँ नहीं थीं और दुर्भाग्य से अगर कोई दर्शक किनारे बने तटबन्धों पर बैठ भी जाता था तो भीड़ के कारण उसके लिए खेल को देख पाना ही बहुत कठिन हो जाता था। ओलम्पिया में कोई होटल, रेस्तराँ और सार्वजनिक परिवहन के साधन मौजूद नहीं थे लेकिन जब वहाँ खेलों के आयोजन नहीं हो रहे होते थे, तब देखभाल करने वाले कुछ लोगों और पुजारियों द्वारा यह जगह ले ली जाती थी। वहाँ पर केवल एक ही सराय थी और उसकी सेवाएँ महत्वपूर्ण

और प्रतिष्ठित लोगों के लिए आरक्षित थीं। दर्शकों की अधिकांश संख्या खुले आसमान के नीचे अपनी रात बिताया करती थी जबकि कुछ अमीर वर्ग के लोग अपनी रातें तम्बुओं में बिताया करते थे। ओलम्पिया शहर बहुत भीड़-भाड़ भरा था और यहाँ का वातावरण भी बहुत असुविधाजनक और अरुचिकर था, साज-सज्जा की बहुत कमी थी लेकिन फिर भी यहाँ होने वाले खेलों का प्रदर्शन इतना अधिक गुणवत्तापूर्ण होता था कि लोग इन स्थितियों को सहन कर लिया करते थे। विक्रेता यहाँ मदिरा, पनीर, रोटी और जैतून बेचा करते थे और जल की व्यवस्था भारी करों के अधीन थी। मध्यग्रीष्म में जब नदियों में पानी सूख जाया करता था, तब जल की आपूर्ति खच्चरों के जरिये की जाती थी और यह चुनौती बनी रहती थी कि कोई दर्शक उस पानी से स्नान न कर ले। उचित स्वच्छता और साफ-सफाई तथा जलापूर्ति के अभाव के कारण कभी-कभी लोग बुखार और निर्जलीकरण के कारण मर जाया करते थे। सेवाओं की उन्नत गुणवत्ता हेरोडेस (Herodes) ने शुरू की थी जो यूनान का सबसे धनी व्यक्ति था और उसका प्राथमिक ध्यान ओलम्पिया में तार्किक और उचित कचरा प्रबन्धन पर था।

प्राचीन ओलम्पिक खेल 776 ई. पू. से लेकर 393 ई. पू. तक प्रत्येक चार वर्ष पर आयोजित होते रहे और आधुनिक ओलम्पिक खेल भूमध्यसागरीय क्षेत्र में एक महान परिवर्तन के साक्षी बने। उपलब्ध स्रोतों से ज्ञात होता है कि प्राचीन ओलम्पिक खेल पाँच दिनों तक चलते थे। इनमें से पहला और आखिरी दिन क्रमशः उद्‌घाटन और समापन समारोहों के लिए आरक्षित रहा करता था और बीच के सिर्फ तीन दिनों के दौरान ही प्रमुख प्रतिस्पर्धाएँ आयोजित की जाती थीं। दूसरे दिन सभी प्रकार की दौड़ और मैदान में होने वाली प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन किया जाता था, घुड़दौड़ और रथदौड़ का आयोजन तीसरे दिन होता था तथा चौथे दिन कुश्ती और बॉक्सिंग की सारी प्रतिस्पर्धाएँ आयोजित की जाती थीं। प्रत्येक प्रतिस्पर्धा में भाग लेने वाले खिलाड़ियों की संख्या वर्ष-दर-वर्ष बदलती रहती थी। वास्तव में, यहाँ लगभग तीन सौ खिलाड़ी हुआ करते थे जो पन्द्रह से अठारह प्रतिस्पर्धाओं में हिस्सा लिया करते थे। दौड़ने वाली और व्यायाम आदि से सम्बन्धित प्रतिस्पर्धा स्टेडियम में आयोजित की जाती थी जबकि रथों और घोड़ों की दौड़ का आयोजन घुड़दौड़ के मैदान (Hippodrome) में किया जाता था।

एथलेटिक्स के लिए यह अनिवार्यता थी कि केवल पुरुष लोग ही, बिना कपड़ों के, इन प्रतिस्पर्धाओं में हिस्सा ले सकते थे। यद्यपि प्रतिस्पर्धाओं को जीतने में लगने वाले समय की गणना करने के लिए कोई विराम घड़ी (स्टॉप वॉच) नहीं हुआ करती थी लेकिन प्रतिस्पर्धाओं के साथ-साथ विजेताओं के नामों को बहुत सावधानीपूर्वक दर्ज किया जाता था। यह भी उल्लेख किया गया है कि इन प्रतिस्पर्धाओं में प्रवेश पाने के लिए कोई शुल्क नहीं लगता था लेकिन मन्दिरों और भवनों के निर्माण के लिए प्रतिस्पर्धाओं के आयोजकों द्वारा अमीर संरक्षकों से दान स्वीकार किए जाते थे। इसके अतिरिक्त दान के रूप में लूट के माल को भी स्वीकार किया जाता था जिसे पड़ोसी राज्यों से युद्धों के दौरान लूटकर लाया जाता था। महिलाओं को पुरुषों की प्रतिस्पर्धाएँ देखने की मनाही थी और यदि कोई महिला ऐसा अपराध करती थी तो प्रावधान यह था कि उसे पर्वत की चोटी से नीचे फेंक दिया जाता था। निःसन्देह, ओलम्पस में आयोजित होने वाले ओलम्पिक खेलों ने प्राचीन यूनान में आधारभूत संरचना और उत्कृष्ट संरचना के विकास में अपना योगदान दिया था। इसने ऐसे अन्य स्थलों के लिए प्रेरणास्रोत का कार्य किया जो अपने यहाँ ऐसी प्रतिस्पर्धाएँ आयोजित करने की इच्छा रखते थे। मर्सिन को यहाँ एक उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है जहाँ भूमध्यसागरीय खेलों का आयोजन किया गया था और बहुत कम समय में ही इस जगह का रूप-रंग निखर गया था तथा रातोंरात यह स्थल लोकप्रिय हो गया था। वास्तव में, ओलम्पिक खेलों ने कल्पना से परे जाकर मानवीय अन्तरक्रिया के रास्ते खोले।

जब ऐसी खेल प्रतिस्पर्धाओं के आयोजन के पीछे उद्देश्यात्मक पहलू की बात आती है तो हम पाते हैं कि अनुसन्धानकर्ताओं के मत इस विषय पर अलग-अलग हैं। उनका विचार है कि यह एक तरीके का बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण था क्योंकि चिकित्सकीय रूप से दुरुस्त व्यक्ति ही इस प्रक्रिया के जरिये सेना में नियुक्ति पा सकते थे जबकि अनुसन्धानकर्ताओं का एक दूसरा समूह यह उल्लेख करता है कि यह जीअस देवता ही थे जो विजेताओं (चैम्पियन्स) को उत्पन्न करते थे और जो लोग इन खेलों में विजेता बनते थे, वे जीअस की कृपा से ही विजयी होते थे। इसलिए ऐसी प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन करके यूनानी लोग इस बात पर बल देना चाहते थे कि मनुष्यों पर जीअस की शक्ति और प्रभाव होता है।

इतिहास के कनाडाई संग्रहालय के अनुसार, 400 ई. तक आते-आते इन ओलम्पिक खेलों पर ईसाइयों और रोमन शासकों द्वारा प्रतिबन्ध लगा दिया गया क्योंकि उनके अनुसार ये खेल मूर्तिपूजा-उत्सवों को उल्लेखनीय मानते थे। रोमनों ने जब यूनान पर कब्जा कर लिया, तो ओलम्पिक खेलों के लिए यह अपशकुन ही साबित हुआ। यूनान में युवा लोगों का रुझान पुस्तकों और कलाओं की तरफ मोड़ दिया गया और इसका एक परिणाम यह हुआ कि वे खेलों की तरफ से उदासीन हो गए। सुकरात की धारणाओं ने, जो उनके साहित्यिक कार्यों में उल्लिखित हैं, युवाओं को खेलों से अलग रहने के लिए प्रेरित किया। रोम पर अधिकार करने के बाद रोमवासियों ने स्टेडियमों को अखाड़ों में बदल दिया और खिलाड़ियों को जंगली जानवरों से लड़ने के लिए दासों में परिवर्तित कर दिया गया।

ओलम्पिक खेलों को दुबारा प्रारम्भ करने के प्रयास शुरू किए गए और बैरन पियरे डि कूबर्तिन (Baron Pierre de Coubertin) के प्रयास सन् 1896 ई. में फलदायी रहे जब एथेंस में ओलम्पिक खेल आयोजित किए गए। शुरू में तेरह देश थे जिन्होंने मैदान और धावन-पथ से जुड़ी प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया था। अपने ध्येयवाक्य "साइटियस, अल्टियस, फोर्टीस (Citius, Altius, Forties)", जिसका अर्थ "तेज, ऊँचा, मजबूत" है, के साथ आधुनिक ओलम्पिक खेलों ने प्राचीन अतीत के गौरव को बरकरार रखा है तथा दो सौ देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले दस हजार से अधिक खिलाड़ी इन खेलों में आयोजित होने वाली तीन सौ से अधिक प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेते हैं।

बोध प्रश्न 1

1) दर्शनीय खेलों से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) दर्शनीय खेलों के अन्तर्गत आने वाली प्रमुख प्रतिस्पर्धाएँ (events) कौन-कौन सी हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) प्राचीन रोम के दर्शनीय खेलों के सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक योगदान का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) ओलम्पिक खेल क्यों आयोजित किए जाते थे?

.....

.....

.....

.....

.....

11.4 रथदौड़

रथदौड़ प्राचीन यूनान के सर्वाधिक लोकप्रिय खेलों में से एक था तथा रोमवासियों और बिजेण्टियन शासकों द्वारा इसे बढ़ावा दिया गया था। रथदौड़ को एक घातक प्रतिस्पर्धा माना जाता था क्योंकि इसमें चालक और घोड़े दोनों को खतरा रहता था। यद्यपि यह एक खतरनाक प्रतिस्पर्धा थी लेकिन इस खेल में दर्शकों के लिए रोमांच और उत्साह बहुत हुआ करता था। महिलाओं को इस खेल में दर्शक के रूप में सहभागिता करने की अनुमति थी क्योंकि कुछ प्रतिस्पर्धाएँ ऐसी भी थीं, जिन्हें देखने के लिए महिलाओं पर प्रतिबन्ध था। रोमन काल में, रथदौड़ आर्थिक रूप से सहयोग प्रदान करने वाले समूहों के लिए अहं का प्रश्न बन चुका था क्योंकि जो टीमें इसमें भाग लेती थीं वे उन समूहों का प्रतिनिधित्व किया करती थीं और कई बार चालकों को दूसरे कुशल चालकों की तुलना में अपनी सर्वश्रेष्ठता सिद्ध करनी पड़ती थी। फुटबाल मैचों में दर्शक अपने सामाजिक और धार्मिक विचारों के आधार पर अपनी रुचि की टीम को अन्धसमर्थन प्रदान किया करते थे और उस टीम के भाग्य से स्वयं को जोड़ लिया करते थे और कभी-कभी तो दर्शक हिंसक भी हो जाते थे। यही दशा रथदौड़ की प्रतिस्पर्धाओं की भी थी जिसमें दर्शक विरोधी टीम का समर्थन करने वाले लोगों से झगड़ा कर लिया करते थे। कभी-कभी ये प्रतिद्वन्द्विताएँ राजनीति का आकार ग्रहण कर लिया करती थीं और इसी कारण रोमन और बिजेण्टाइन सम्राट अपनी टीम के संरक्षक बन जाया करते थे तथा उन टीमों की देखरेख के लिए अधिकारियों को भेजा करते थे। रोमन साम्राज्य के पतन के उपरान्त पश्चिम में खेलों का महत्व समाप्त हो गया लेकिन इनका अस्तित्व बिजेण्टाइन साम्राज्य के काल तक बना रहा। रोमन उपन्यासों की प्रथा अनेक शताब्दियों तक जारी रही और उनकी प्रतिद्वन्द्विता नीका के दंगों के दौरान चरम पर पहुँच गयी जो इस खेल के पतन के लिए उत्तरदायी बना।

रथदौड़ के प्रारम्भ की सटीक तिथि तो स्पष्ट नहीं है लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि यह खेल उतना ही पुराना है, जितना पुराना रथों का अस्तित्व है। मिट्टी के बर्तनों पर बनाए गए कलात्मक चित्रों से प्राप्त प्रमाण हमें इस बात की जानकारी देते हैं कि रथदौड़ माइसीनियन (Mycenaean) जगत में प्रचलित था। लेकिन यह होमर का साहित्य ही है जो सबसे पहले

रथदौड़ का वर्णन करता है। होमर ने उल्लेख किया है कि डायोमिडीज (Diomedes) ने रथदौड़ जीती थी और उसे एक महिला दास के रूप में पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इस बात का भी उल्लेख किया गया है कि ओलम्पिक खेलों के दौरान रथदौड़ एक महत्वपूर्ण प्रतियोगिता हुआ करती थी और आख्यानों के अनुसार राजा ओइनोमास (Oenomaus) पर अपनी विजय की स्मृति को बनाए रखने के लिए पेप्लोस ने इस प्रतियोगिता को ओलम्पिक खेलों में शामिल करवाया था। प्राचीन ओलम्पिक खेलों और अन्य सर्वयूनानी (Pan Hellenic) खेलों के दौरान दो प्रकार के रथों को प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमित थी। ये थे, चार घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथ और दो घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथ। रथदौड़ की प्रतिस्पर्धा को ओलम्पिक खेलों में सबसे पहले 680 ई. पू. में शामिल किया गया था। प्रारम्भ में यह प्रतिस्पर्धा एक दिन तक चलती थी लेकिन बाद में इसका विस्तार करके इसे दो दिन का कर दिया गया था। इन दौड़ों का आयोजन घुड़दौड़ के मैदान (Hippo-drome) में किया जाता था जो रथदौड़ और घुड़दौड़ दोनों के लिए उपयुक्त होते थे। एक घोड़े की दौड़ को "कीलीज (Keles)" कहा जाता था। दौड़ का मार्ग दो पथों में विभाजित रहता था जिनके बीच में पत्थर या लकड़ी की दीवार हुआ करती थी। दर्शकों की सुविधा के लिए इसे प्राकृतिक या मानवनिर्मित बाड़ों द्वारा घेर दिया जाता था। निर्णायकों के लिए एक विशिष्ट स्थान आरक्षित होता था ताकि वे रणनीतिक महत्व के इन स्थानों से खेल को देख सकें और अपने निर्णय दे सकें। पूर्व दिशा की ओर जाने वाले एक पथ पर घोड़े और रथ दौड़ा करते थे। प्रतिस्पर्धा के हिसाब से तय की जाने वाली दूरियाँ भिन्न-भिन्न हुआ करती थीं। दौड़ के प्रारम्भ से पहले घुड़दौड़ के मैदान में एक जुलूस का आयोजन किया जाता था और इसी दौरान एक उद्घोषक चालकों और रथ-मालिकों के नामों की घोषणा करता था। प्रतिस्पर्धा को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए प्रारम्भ-द्वार जैसी अनेक यान्त्रिक युक्तियाँ होती थीं। इन प्रारम्भ-द्वारों का उपयोग एक अवरोध के रूप में किया जाता था ताकि अन्तिम घोषणा होने से पहले कोई भी घोड़ा या रथ आगे न बढ़ सके। प्रत्येक रथ से यह उम्मीद की जाती थी कि वह अन्तिम द्वार पर एक-दूसरे के अगल-बगल कतारबद्ध होकर खड़ा हो।

प्रतिस्पर्धाओं के आयोजकों ने बाज और डाल्फिनों (कांसे पर की हुई इन जानवरों की नक्काशी) की भी शुरुआत की थी जिससे दौड़ के प्रारम्भ होने की सूचना मिलती थी और साथ ही इसकी सहायता से यह याद रखना भी आसान होता था कि कुल कितने चक्कर लगाने हैं। जब नक्काशी वाला यह प्रतीक ऊपर उठा हुआ होता था तो इसका तात्पर्य यह होता था कि दौड़ प्रगति पर है और जब इस प्रतीक को नीचे कर लिया जाता था तो इसका अर्थ यह होता था कि अभी कुछ चक्कर बचे हुए हैं जिन्हें पूरा किया जाना आवश्यक है। सारथी या तो रथ-मालिक के परिवार का सदस्य हुआ करता था या कोई दास या फिर किराया देकर लिया गया कोई पेशेवर चालक। दौड़ वाले रथों को चलाने के लिए बहुत अधिक कौशल और साहस की आवश्यकता पड़ती थी। दौड़ने वाले लोग पूरी बाँह के कपड़े पहनते थे। इन कपड़ों को "जिस्टिस (Xystis)" कहा जाता था जो आमतौर पर शरीर को एड़ियों या टखनों तक ढक लेते थे। कमर पर इन कपड़ों को बाँधने के लिए एक बेल्ट होती थी। इन कपड़ों को शरीर पर बाँधने के लिए दो तसमों (straps) का प्रयोग किया जाता था ताकि दौड़ के दौरान कपड़ों के अन्दर हवा न भर जाए और वे गुब्बारों की तरह कहीं फूल न जाएँ। दौड़ के प्रयोजन के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले रथ युद्धों में प्रयोग किए जाने वाले रथों के परिवर्तित रूप होते थे। ये रथ अनिवार्य रूप से लकड़ी के बने होते थे। इनमें दो पहिये होते थे और इनका पिछला हिस्सा खुला हुआ होता था। सारथी अपनी टाँगों को एक जगह स्थिर कर लिया करता था लेकिन धुरी पर टिके हुए ये रथ दौड़ के दौरान उछाल खाया करते थे। रथदौड़ का सर्वाधिक उत्साहपूर्ण हिस्सा वह होता था जब रथ घुड़दौड़ के मैदान के अन्त में पहुँचकर मुड़ते थे। यह मोड़ बहुत घातक और खतरनाक

सिद्ध होते थे क्योंकि अक्सर इन मोड़ों पर रथ उलट जाया करते थे या अन्य रथों द्वारा टकराकर नष्ट हो जाया करते थे। यद्यपि विरोधी के रथ को जान-बूझकर नष्ट करना गैर-कानूनी था लेकिन तब भी रथ दुर्घटनाओं के कारण नष्ट तो होते ही थे।

रोमवासियों ने इट्रुस्केन (Etruscans) लोगों से बुनियादी आधारभूत संरचनाओं को उधार लेते हुए इस खेल का प्रारम्भ किया। सम्राट रोमुलस ने 753 ई. पू. में ज्यों ही रोम नगर की स्थापना की, रथदौड़ शुरू करवा दिया। रथदौड़ के साथ-साथ घुड़दौड़ को शामिल करते हुए उसने कौंसुलिया (Consulia) का उत्सव मनाया था। रथदौड़ अनेक रोमन उत्सवों और समारोहों का एक अंग बन गयी थी और इस रथदौड़ के बाद एक परेड हुआ करती थी जिसमें सारथी, संगीत, नर्तक और देवताओं के चित्र शामिल हुआ करते थे। चर्च फादर्स के प्रादुर्भाव के साथ ऐसी प्रथाओं को रोक दिया गया क्योंकि वे इसे मूर्तिपूजक शासकों की एक पारम्परिक प्रथा मानते थे। रोमन काल में घुड़दौड़ का आयोजन "सर्कस (Circus)" नामक स्थान पर हुआ करता था। यह स्थान पैलाटाइन पहाड़ी और एवेण्टाइन पहाड़ी के बीच स्थित था और यहाँ लगभग ढाई लाख लोग दर्शकों के रूप में एक साथ आया करते थे। एक बार जब चलने ही वाला होता था तो सारथी अपने विरोधियों के रथ को नष्ट करने के लिए बाधा उत्पन्न कर दिया करते थे। रोमन युग में रथदौड़ यूनानी युग से बहुत मिलती-जुलती थी। आमतौर पर प्रतिदिन 24 दौड़ें आयोजित की जाती थीं और एक दौड़ में सिर्फ सात चक्कर लगाने होते थे। रोमवासियों ने रथदौड़ के जरिये पैसा भी कमाया। वे दौड़ने वाले लोगों (रेसर्स) को किराये पर लेते थे जो बहुत ही अधिक व्यावसायिक हुआ करते थे तथा दर्शकों के बीच शर्त लगायी जाती थी। दो और चार घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथों का भी प्रावधान था लेकिन प्राथमिकता चार घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथों को ही दी जाती थी। हालाँकि, यदि सारथी अपने कौशल का प्रदर्शन करना चाहे तो उसे दस घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथों का उपयोग करने की छूट थी जो व्यावहारिक रूप से असम्भव प्रतीत होता है। रथदौड़ के समय रोमन चालक लगाम को अपनी कमर में लपेट लिया करते थे। दुर्घटनाओं के दौरान वे सर्कस के चारों तरफ तब तक भूमि पर घिसटते रहते थे, जब तक उनकी मृत्यु नहीं हो जाती थी या जब तक वे स्वयं को छुड़ा नहीं लेते थे। वे अपने पास चाकू रखते थे ताकि दुर्घटनाओं के दौरान वे लगाम को काट सकें और भूमि पर घिसटते चले जाने से बच सकें। वे हेल्मेट और अन्य सुरक्षात्मक उपकरणों का प्रयोग किया करते थे। इस बात के भी प्रमाण मिले हैं कि सारथी एकजुट होकर विरोधी सारथियों के विरुद्ध समूह बना लेते थे और यह समूह रथ-चालक के ध्यान को भटका दिया करता था ताकि वह वरीय पथों से बाहर हो जाए। कभी-कभार तो दर्शक भी विरोधी पर नाखून जड़े हुए ताबीज फेंक दिया करते थे।

रोमन काल में सारथी को स्वयं विजेता घोषित किया जाता था क्योंकि वे दास हुआ करते थे। लॉरेल (एक चमकदार पौधा) की पत्तियों के साथ-साथ उन्हें कुछ नकद पुरस्कार भी दिया जाता था। अगर ऐसी दौड़ों में उनका जीतना जारी रहता था तो उनके स्वामियों द्वारा उन्हें मुक्त कर दिया जाता था। अपने घोड़ों के साथ चालक यदि मृत्यु से बच जाते थे तो वे पूरे साम्राज्य में एक शानदार जीवन का आनन्द लेते थे। रोमवासी प्रसिद्ध घोड़ों के नामों, उनकी नस्लों और वंशावलियों का अभिलेख रखा करते थे। सर्कस में सीटें दो भागों में विभाजित होती थीं। एक भाग निर्धन लोगों के लिए बनाया गया था जिन्हें ये सीटें मुफ्त में दी जाती थीं जबकि दूसरा भाग धनी और कुलीन लोगों के लिए बनाया गया था और यहाँ बैठने के लिए शुल्क लगता था। दूसरे भाग में सीटों के ऊपर छत हुआ करती थी और प्रतिस्पर्धा यहाँ से बहुत स्पष्ट तरीके से दिखायी देती थी और सम्भवतः दूसरे भाग में बैठने वाले लोग शर्त लगाने के लिए बाहर भी निकल सकते थे। सर्कस ही वह स्थान होता था जहाँ सम्राट एकत्रित भीड़ के सामने प्रकट होता था और इस मंच का उपयोग वह भीड़ को सम्बोधित करने के लिए किया करता था।

बिजेण्टाइन साम्राज्य के काल तक रथदौड़ की परम्परा जारी रही। हालाँकि उन लोगों ने अभिलेखों के रखरखाव और आँकड़ों का अनुरक्षण करने की प्रथा का अनुसरण नहीं किया जबकि रोमन लोग इस प्रथा का अनुसरण किया करते थे। एनास्तेसियस (Anastasius), टायर के जूलियानस (Julianus), फास्टीनस (Faustinus), कांस्टैण्टिनस (Constantinus), यूरेनियस (Uranius) और पोरफाइरियस (Porphyrius) जैसे कुछ बिजेण्टाइन सारथियों की विजयों को यादगार बनाने के लिए बिजेण्टाइन लोगों ने छोटे-छोटे सुभाषित गढ़ लिए थे। कांस्टैण्टाइन ने तलवारबाजी के मुकाबले रथदौड़ को काफी बढ़ावा दिया था। थियोडोसियस के काल में ओलम्पिक खेलों का अन्त हो गया लेकिन लोगों के हृदय में रथदौड़ का स्थान बना रहा। बिजेण्टाइन काल के दौरान ईसाइयत के प्रभाव के बावजूद रथदौड़ के साथ-साथ जंगली जानवरों के रक्तरंजित शिकार जैसे मनोरंजन के कुछ अन्य रूप मौजूद रहे। बिजेण्टाइन काल में रथदौड़ की अभिव्यंजना को भी महसूस किया गया था क्योंकि यह सामाजिक और राजनीतिक उद्देश्यों के सुदृढ़ीकरण का स्रोत बन गया था। सम्राट के जन्मदिनों पर आयोजित किए जाने वाले समारोहों में रथदौड़ का स्थान उल्लेखनीय था।

बिजेण्टाइन काल तक आते-आते रथदौड़ का खेल भ्रष्टाचार का शिकार होने लगा। ऐसे प्रमाण मौजूद हैं जो बताते हैं कि रथों में यान्त्रिक छेड़छाड़ की जाती थी, विरोधियों को अपशब्द कहे जाते थे, रथों को रणनीतिक महत्व के स्थानों पर अवस्थित कर दिया जाता था और दौड़ के खेल को फिक्स करने के लिए रिश्वत दी जाती थी। इस काल में यह एक चलन हो गया कि लोग अपनी पसन्दीदा टीम के रंगों के कपड़े पहनने लगे। बिजेण्टियन सम्राट के काल में रथदौड़ ने रोमन रेसिंग क्लबों को पेश किया और युग्मित गठबन्धनों की व्यवस्था कायम की गयी। नीले और हरे रंग वालों का उभार हुआ ताकि श्वेत और लाल रंग वाले बाकी दो धड़ों को परास्त किया जा सके। बिजेण्टियन सम्राट के दौरान रथदौड़ सार्वजनिक धन के स्रोत बन गए और इनका आयोजन नियमित अन्तरालों पर कराया जाने लगा। ऐसा प्रतीत होता है कि सार्वजनिक धन के सहयोग से रथदौड़ आयोजित कराने का प्रमुख उद्देश्य लागत को घटाना था जिसके कारण दौड़ सम्बन्धी संगठनों के माध्यम से कोष की पूरी उपयोगिता सुनिश्चित हो जाती थी। चार धड़ों में से एक का समर्थन तो सम्राट स्वयं करता था क्योंकि वह या तो नीले या हरे रंग वालों से सम्बन्धित रहा करता था। समर्थक भी अपने मनपसन्द सारथी के रंग को अपनाते थे जो धड़े के किसी विशिष्ट रेसर के प्रति कृतज्ञता और निष्ठा का प्रतीक हुआ करता था। समर्थक कभी-कभार अलग-अलग तरीके के केशविन्यास रखा करते थे और उच्छृंखल किस्म के कपड़े पहना करते थे ताकि दर्शकों का ध्यानाकर्षण किया जा सके। प्रमाण दर्शाते हैं कि ये युवा लोग ही रथदौड़ों के दौरान पैदा होने वाली गुटीय प्रतिद्वन्द्विता और हिंसा के मुख्य स्रोत हुआ करते थे, ठीक उसी तरह जैसे फुटबाल मैचों के दौरान यह प्रतिद्वन्द्विता और हिंसा दिखायी पड़ती थी। नीले और हरे रंग वाले लोग अब खेलने वाली टीमों का हिस्सा नहीं रह गए, बल्कि उन्हें सेना के साथ-साथ राजनीति में भी लोकप्रियता हासिल करने में सफलता मिली। नीले और हरे के बीच की प्रतिद्वन्द्विता का अस्तित्व धार्मिक विवाद के कारण हुआ था और बाद में परिस्थितियों ने इस्लाम के उभार का मार्ग खोल दिया। जब अरब लोगों ने इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया तो सातवीं शताब्दी तक बिजेण्टाइन दौर समाप्त हो गया और इस प्रकार रथदौड़ की लोकप्रियता घट गयी। नीले और हरे रंग वाले अब राजनीति में नहीं रहे, बल्कि वे पारम्परिक शाही समारोहों में दिखने लगे। साधुओं के विरुद्ध अपने अभियान में मूर्तिपूजा के विरोधी सम्राट कांस्टैण्टाइन ने गुटों का समर्थन माँगा और अनेक अवसरों पर कैदियों को फाँसी दिए जाने में वे सहायक हुआ करते थे। घुड़दौड़ के मैदान का आकर्षण बारहवीं शताब्दी तक जारी रहा क्योंकि दौड़ों, खेलों और सार्वजनिक समारोहों के आयोजन बारहवीं शताब्दी तक होते रहे। लेकिन 1204 ई. में, जब चौथा धर्मयुद्ध घटित हुआ था, नगर को धर्मयुद्धकर्ताओं

द्वारा लूट लिया गया और अन्ततः क्वाड्रिगा (Quadriga) की मूर्ति को सर्कस से हटा दिया गया। इसके पश्चात नगर में स्थित घुड़दौड़ को लावारिस छोड़ दिया गया और अवशेष के नाम पर वहाँ कुछ दीवारें और सर्पिलाकार स्तम्भ बचे जो दर्शकों के जमावड़े की सटीक तरीके से याद दिलाते हैं।

11.5 तलवारबाजों की लड़ाइयाँ

तलवारबाज यानी ग्लेडिएटर शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द "ग्लेडियस (Gladius)" से हुई है जो तलवार को या तलवार चलाने वाले मनुष्य को निर्दिष्ट करता है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि तलवारबाज अपनी लड़ाइयों को सिर्फ तलवारों के माध्यम से ही लड़ते थे बल्कि तलवारबाजी की प्रतियोगिता में वे अनेक तरीके के हथियारों का उपयोग किया करते थे। वे हेलमेट का प्रयोग करते थे, कवच पहना करते थे, जिन्हें महान कारीगरों द्वारा बनाया जाता था। इस प्रकार, प्राचीन रोम में तलवारबाज व्यावसायिक लड़ाके हुआ करते थे। प्रारम्भ में, तलवारबाज लोग अपना प्रदर्शन इट्रुस्केन (Etruscan) लोगों के अन्तिम संस्कार के अवसर पर इस धारणा के साथ किया करते थे कि इस तरह श्रद्धांजलि देने से मृत व्यक्ति को अगले जगत में हथियारों से लैस परिचारक प्राप्त होंगे। उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार, 264 ई. पू. में ब्रूटस के अन्तिम संस्कार के समय तीन जोड़ों के छोटे आकार वाली तलवारबाजों की प्रदर्शनी लगायी गयी थी जो जूलियस सीजर के समय तक बढ़कर तीन सौ जोड़ों की हो गयी थी। इस प्रकार, प्रदर्शनों का विस्तार एक दिन से बढ़ाकर सौ से भी अधिक दिनों तक का कर दिया गया। यहाँ तक कि इन्हें स्थानान्तरित करके आसपास के नगरों तक भी ले जाया गया और अखाड़ों के अवशेषों की उपलब्धता इस तथ्य को सिद्ध करती है। धीरे-धीरे तलवारबाजों के प्रदर्शन सिर्फ अन्तिम संस्कार के सन्दर्भ तक ही सीमित नहीं रह गए बल्कि अब इनका विस्तार समाज के अमीर लोगों की शक्ति और उनके प्रभाव को दर्शाने वाले एक मंचीय प्रदर्शन तक कर दिया गया।

एक बुनियादी प्रश्न यहाँ खड़ा होता है कि ये तलवारबाज कौन थे? वास्तव में, मुख्यतः वे आपराधिक पृष्ठभूमि वाले दास लोग थे लेकिन यह सम्भव था कि सामाजिक हैसियत वाला एक बर्बाद व्यक्ति स्वयं को तलवारबाज के रूप में ढाल ले और ऐसा करके वह अपनी दो वक्त की रोटी की व्यवस्था कर ले। कुछ तलवारबाज स्वतन्त्र रूप से पैदा हुए स्वयंसेवक भी थे। जब वे तलवारबाज होने की शपथ लेते थे, तो उन्हें नकद के रूप में कुछ धनराशि मिलती थी। यह शपथ उल्लेखनीय होती थी क्योंकि तलवारबाज के जीवन पर स्वामी का अन्तिम अधिकार होता था। एक सफल तलवारबाज आकर्षण का केन्द्र हुआ करता था जिसे समाज की महिलाओं के साथ रहने का आनन्द मिला करता था। ऐसे प्रमाण उपलब्ध हैं जो बताते हैं कि राजा डोमिटियन (Domitian) विशिष्ट लक्षणों वाले तलवारबाजों को किराये पर लिया करता था, जैसे बौनों को, महिलाओं को और कभी-कभार पागल मनुष्यों को। ईसाइयत के प्रादुर्भाव के साथ, तलवारबाजों के प्रदर्शनों में पतन की स्थिति आ गयी। 325 ई. तक सम्राट कांस्टैण्टाइन ने तलवारबाजी से जुड़ी सारी गतिविधियों पर रोक लगा दी, हालाँकि यह बिना किसी बड़ी क्षति के जारी रहा लेकिन अन्ततः सम्राट आनरियस (Honourius) के शासनकाल के दौरान इसका अन्त ही हो गया।

तलवारबाजों की बहुत सारी श्रेणियाँ हुआ करती थीं जिन्हें न सिर्फ लड़ने के उनके विशेष कौशलों के माध्यम से, बल्कि उनके द्वारा रखे जाने वाले हथियारों के जरिये भी पहचाना जा सकता था। तलवारबाजों की पहली श्रेणी सैमनाइटों (Samnites) की थी। विशाल आयताकार ढाल, पंखनुमा हेल्मेट, एक छोटी तलवार और टोपी का छज्जा उन विशिष्ट उपकरणों में शामिल थे, जिनका उपयोग लड़ाइयों के दौरान सैमनाइट लोगों द्वारा किया जाता था। इन यन्त्रों को रोमन साम्राज्य के राष्ट्रीय शस्त्रों के रूप में भी घोषित किया गया

था। तलवारबाजों की दूसरी श्रेणी थ्रेसेस (Thraces) की थी जो छोटे आकार के गोल कवच पहना करते थे और अपने पास हँसिये की तरह की कटार रखा करते थे। ये तलवारबाजों की तीसरी श्रेणी में आने वाले मुर्मिलों (Murmillo) के विरुद्ध लड़ा करते थे। मुर्मिल मत्स्य-लड़ाकों के रूप में भी जाने जाते थे क्योंकि अपनी उपस्थिति के निशान के रूप में वे अपने हेल्मेट पर मत्स्य के आकार के प्रतीक-चिन्ह का प्रयोग किया करते थे। वे प्राचीन गैलिक (Gallic) लोगों की तरह के हेल्मेट और कवच पहना करते थे तथा अपने साथ तलवार भी रखते थे। अपनी सुरक्षा के लिए वे एक लम्बा आयताकार कवच पहना करते थे जो उनके शरीर को कन्धों से लेकर पिण्डलियों तक ढक लिया करता था। तलवारबाजों की अगली श्रेणी रेटियारियस (Retiarius) की थी जो बिना हेल्मेट के लड़ा करते थे। हेल्मेट की जगह वे कन्धों को ढकने के लिए गद्देदार तख्तीनुमा टुकड़ों का प्रयोग किया करते थे और अपने साथ एक भारी जाल रखा करते थे। अपने विरोधी का शिकार करने के लिए उनके ऊपर पहले वे उस जाल को फेंकते थे और बाद में तलवार से उसे मार डाला करते थे। तलवारबाजों का एण्डाबेटाइ (Andabatae) नामक एक और वर्ग था जो घोड़े की पीठ पर बैठकर लड़ाई किया करते थे। वे हेल्मेट पहनते थे और उनका चेहरा टोपी के अग्रिम छज्जे से ढका रहता था। डिमाचायरी (Dimachaeri) लोगों के पास दो चाकू हुआ करते थे, जो दो तलवारें लेकर चला करते थे। एसेडराइ (Essedarii) ऐसे तलवारबाज होते थे जो रथ पर बैठकर लड़ा करते थे, एक अन्य वर्ग होप्लोमाची (Hoplomachi) का हुआ करता था जो पूरे शरीर पर कवचनुमा कपड़े पहनकर लड़ा करते थे।

तलवारबाजों की लड़ाइयों में नियमों का बहुत महत्व था और अलग-अलग शैली की लड़ाइयों के लिए अलग-अलग नियम होते थे। तलवारबाज अलग-अलग तरीके के हथियारों का समुच्चय धारण करते थे। प्रत्येक समुच्चय अपनी लड़ाई की शैली को प्रकट करता था। मुर्मिलो के समुच्चय में एक कवचनुमा टोपी (thraex) शामिल होती थी। लड़ाइयों के दौरान अपनी सुरक्षा करने के लिए मुर्मिलो के पास एक विशाल आयताकार कवच हुआ करता था लेकिन यह कवच बहुत भारी होता था जबकि उनके विरोधी यानी "थ्राएक्स (thraex)" के पास एक छोटा वर्गाकार कवच हुआ करता था ताकि वे अपने शरीर के ऊपरी हिस्से की सुरक्षा कर सकें। इन दोनों तरीके के लड़ाके टाँगो की सुरक्षा करने वाले कवच भी पहना करते थे लेकिन इस लड़ाई का महत्व इस तथ्य में था कि अपने कवचों के भारी और विशाल होने के कारण लड़ाई की अलग तकनीकों की आवश्यकता पड़ती थी। लड़ाई में रेटियारियस सुभेद्य हुआ करते थे क्योंकि वे जाल लेकर लड़ने वाले लोगों में थे और अपनी सुरक्षा के लिए वे अपने बाएँ हाथ पर बाजूबन्द (gelarus) पहना करते थे। वे भारी शस्त्रों से लैस "सेक्यूटर (Secutor)" लोगों के विरुद्ध लड़ा करते थे। सेक्यूटर लोग अपने कवचों के अत्यधिक भार के नीचे दबे रहते थे। यह आवश्यक नहीं था कि सभी तलवारबाज दाहिने हाथ से ही लड़ाई करें। बाँये हाथ से लड़ने वाले तलवारबाज भी होते थे जिन्हें दाहिने हाथ से लड़ाई करने वाले तलवारबाजों के विरुद्ध लड़ने के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण दिया जाता था। ऐसा प्रतीत होता है कि रोमवासी विभिन्न परिस्थितियों के अन्तर्गत जो लड़ाइयाँ लड़ा करते थे, उसी के परिणामस्वरूप उन्होंने लड़ाई की विभिन्न शैलियों का विकास किया होगा। बाद में, तलवारबाज को लड़ाई की नृजातीय शैलियों में भी प्रशिक्षित किया जाता था जो उस तलवारबाज के मूल निवास स्थान की शैली से बहुत भिन्न हुआ करती थी।

प्रदर्शनों का आयोजन करने से पहले इसके बारे में, बहुत पहले से ही, भलीभाँति प्रचार किया जाता था। प्रचार करने के लिए निजी और सार्वजनिक सम्पत्तियों पर टिप्पणियाँ चिपकायी जाती थीं और बाजार में विवरणिकाएँ बेची जाती थीं। यहाँ तक, कि इन प्रदर्शनों का प्रचार करने के लिए पेशेवर प्रतीक-लेखकों की सेवाएँ भी किराये पर ली जाती थीं जो रणनीतिक महत्व के स्थलों पर स्थित दीवारों पर लड़ाइयों के चित्र बनाया करते थे। ये

टिप्पणियाँ और विवरणिकाएँ आपस में लड़ने वाले तलवारबाजों के बारे में सूचनाएँ प्रदान किया करती थीं; जैसे – लड़ाई की तारीख, देने वाले का नाम और लड़ाई का प्रकार। प्रदर्शन में हिस्सा लेने वाले तलवारबाजों की संख्या से जुड़ी जानकारी महत्वपूर्ण हुआ करती थी क्योंकि यदि यह संख्या अधिक होती थी तो इस बात की सम्भावना भी अधिक होती थी कि अधिक से अधिक दर्शक और अधिक से अधिक प्रायोजक आकर्षित होंगे। अन्तिम प्रदर्शन के आयोजन से पहले एक जुलूस में तलवारबाजों के चित्र लगाए जाते थे और इसकी कार्यवाहियाँ एक छद्‌म युद्ध के साथ खोल दी जाती थीं, जिसमें लकड़ी की तलवारें और भाले हुआ करता था। लड़ाई के प्रारम्भ का संकेत तुरही बजाकर किया जाता था और त्रुटिकर्ताओं (भयभीत लोगों) को लाल गर्म लोहे की छड़ों के साथ अखाड़े में लाया जाता था। लड़ाई के दौरान जब किसी तलवारबाज को गहरे घाव लग जाते थे तो दर्शकों से दया की भीख माँगने के लिए वह अपनी उँगलियाँ ऊपर उठा दिया करता था। यह निर्णय दर्शकों को लेना होता था कि उसे जीवनदान दिया जाए या मार डाला जाए। यदि दर्शकों को तलवारबाज पर दया दिखानी होती थी तो वे अपने रूमालों को छोड़ दिया करते थे लेकिन यदि दर्शकों की यह इच्छा होती थी कि हारे हुए तलवारबाज को मार डाला जाए तो वे अपने अँगूठे को नीचा करके इशारा कर दिया करते थे। विजयी व्यक्ति को नकद पुरस्कार देकर या पॉम नामक वृक्ष की पत्तियाँ देकर सम्मानित किया जाता था। यदि कोई तलवारबाज अनेक लड़ाइयों के बाद भी जीवित बचा रहता था तो उसे लड़ाइयों से मुक्त कर दिया जाता था या अगर वह स्वयं चाहे तो उसे लड़ाइयाँ जारी रखने की अनुमति भी प्रदान कर दी जाती थी। अनेक अवसरों पर इन तलवारबाजों को राजनीतिक महत्व प्रदान किया जाता था क्योंकि उन्हें महत्वपूर्ण व्यक्तियों के अंगरक्षकों के रूप में नियुक्त कर दिया जाता था।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है तलवारबाजी की गतिविधियाँ शक्ति और कौशल के प्रदर्शन के अतिरिक्त और कुछ नहीं थीं। इनका उद्देश्य नायकत्व का प्रदर्शन करना होता था। रोमन साम्राज्य के अधीन यह कला रोमन जगत के समस्त सामाजिक और आर्थिक मामलों को आपस में सूत्रबद्ध करने में सहायक हो गयी।

बोध प्रश्न 2

1) रथदौड़ पर एक टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) तलवारबाज से और तलवारबाजों की लड़ाई से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

11.6 सारांश

खेलकूद पर्यटन एक नवीन परिघटना प्रतीत होता है किन्तु इसकी जड़ें प्राचीन यूनान में निहित हैं। खेलकूद में सहभागिता करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक लोगों के जाने का इतिहास अतीत में 776 ई. पू. तक जाता है जब ओलम्पिक खेल शुरू हुए थे। यह स्थल पवित्र माना जाता था और यह देवताओं के राजा जीअस को समर्पित था। "ओलम्पिया" स्थल एक अलग-थलग इलाके में स्थित था और यहाँ तक पहुँचना आसान नहीं था। ओलम्पिक खेलों के लिए मूल स्थान ओलम्पिया ही था और यहाँ ओलम्पिक खेल लगातार लगभग 293 बार आयोजित किए गए थे। लगभग चालीस हजार दर्शकों ने इन ओलम्पिक खेलों में अपनी रुचि का प्रदर्शन किया था और खेल देखने के लिए इस स्थल पर प्रवेश पाना लगभग शुल्कमुक्त था। ओलम्पिया शहर बहुत भीड़-भाड़ भरा था और यहाँ का वातावरण भी बहुत असुविधाजनक और अरुचिकर था, साज-सज्जा की बहुत कमी थी लेकिन फिर भी यहाँ होने वाले खेलों का प्रदर्शन इतना अधिक गुणवत्तापूर्ण होता था कि लोग इन स्थितियों को सहन कर लिया करते थे। विक्रेता यहाँ मदिरा, पनीर, रोटी और जैतून बेचा करते थे और जल की व्यवस्था भारी करों के अधीन थी। दर्शनीय खेलकूद में शामिल होने के क्रम में लोग दूर स्थित किसी जगह पर या तो इसलिए जाते थे कि वे खेलकूद की गतिविधियों को देखकर उनका आनन्द ले सकें या फिर इसलिए जाते थे कि खेलकूद की उन गतिविधियों में व्यक्तिगत रूप से वे भाग ले सकें। प्राचीन यूनान में ओलम्पिया जैसे महत्वपूर्ण स्थान खेलकूद की गतिविधियों का आयोजन करने वाले सुविख्यात पर्यटक स्थल थे। ओलम्पिया जैसे खेलकूद के स्थलों को बौद्धिक और साहित्यिक गतिविधियों के सन्दर्भ में यह श्रेय भी जाता है कि इन स्थलों ने लेखकों और चिन्तकों को अपने विचार और कार्य साझा करने के लिए एक मंच भी उपलब्ध कराया क्योंकि ओलम्पिक खेल यूनान के विभिन्न कोनों से बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित किया करते थे। इकाई में रथदौड़ों और उनकी प्रक्रियाओं पर तथा तलवारबाजों की लड़ाइयों पर भी चर्चा की गयी है।

11.7 शब्दावली

दर्शनीय खेलकूद : ऐसे खेल जो कुछ निर्धारित स्थलों पर लोगों को लुभाया करते थे। दर्शनीय खेलकूद में शामिल होने के क्रम में लोग दूर स्थित किसी जगह पर या तो इसलिए जाते थे कि वे खेलकूद की गतिविधियों को देखकर उनका आनन्द ले सकें या फिर इसलिए जाते थे कि खेलकूद की उन गतिविधियों में व्यक्तिगत रूप से वे भाग ले सकें।

रथदौड़ : रथदौड़ प्राचीन यूनान के सर्वाधिक लोकप्रिय खेलों में से एक था तथा रोमवासियों और बिजेण्टियन शासकों द्वारा इसे बढ़ावा दिया गया था। रथदौड़ को एक घातक प्रतिस्पर्धा माना जाता था क्योंकि इसमें चालक और घोड़े दोनों को खतरा रहता था। यद्यपि यह एक खतरनाक प्रतिस्पर्धा थी लेकिन इस खेल में दर्शकों के लिए रोमांच और उत्साह बहुत हुआ करता था।

ओलम्पिक खेल : प्राचीन ओलम्पिक खेल यूनान में "ओलम्पिया" नामक स्थान पर 776 ई. पू. में आयोजित किए गए थे। यह स्थल पवित्र माना जाता था और यह देवताओं के राजा जीअस को समर्पित था।

तलवारबाजी : तलवारबाज यानी ग्लेडिएटर शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द "ग्लेडियस (Gladius)" से हुई है जो तलवार को या तलवार चलाने वाले मनुष्य को निर्दिष्ट करता है। तलवारबाज ऐसे लड़ाके होते थे जो प्रतियोगिता में भाँति-भाँति के हथियारों का प्रयोग करते हुए अपनी लड़ाइयों के माध्यम से दर्शकों का मनोरंजन किया करते थे।

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 11.2 देखिए।
2) भाग 11.2 और 11.3 देखिए।
3) भाग 11.1 और 11.2 देखिए।
4) भाग 11.3 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 11.4 देखिए।
2) भाग 11.5 देखिए।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 12 ऐतिहासिक उद्‌भव और विकास

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 पर्यटन के इतिहास की आवश्यकता

12.3 आंकड़ों के स्रोत

12.3.1 सांख्यिकी ब्यौरे

12.3.2 गौण स्रोत

12.4 काल निर्धारण और अवधारणाएं

12.5 प्राचीन काल

12.6 आरंभिक साम्राज्य

12.6.1 मिश्र सभ्यता और फोएनिसिआई

12.6.2 फारसी साम्राज्य

12.6.3 यूनानी साम्राज्य

12.6.4 रोमन साम्राज्य

12.6.5 भारत

12.7 रेशम मार्ग

12.8 तीर्थ यात्रा

12.9 शानदार यात्रा (ग्रैंड टूर)

12.10 आधुनिक पर्यटन में संक्रमण

12.11 भारत में आधुनिक पर्यटन

12.12 सारांश

12.13 शब्दावली

12.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- पर्यटन के इतिहास लेखन के विभिन्न मुद्दों को रेखांकित कर सकेंगे;
- पर्यटन इतिहास लेखन के विभिन्न स्रोतों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे; और
- आधुनिक पर्यटन के जन्म की कहानी से परिचित हो सकेंगे।

12.1 प्रस्तावना

इतिहास का सामान्य अर्थ है अतीत को जानना। आपके मन में यह सवाल उठ सकता है कि अतीत का अध्ययन हम क्यों करें? वस्तुतः अपने इतिहास या अतीत को जानना इसलिए आवश्यक है क्योंकि अतीत की कोख से वर्तमान का जन्म होता है और अपने भविष्य को

बेहतर ढंग से नियोजित करने के लिए हमें अतीत और वर्तमान दोनों का आलोचनात्मक विश्लेषण करना होता है। यह अलग बात है कि इस प्रक्रिया में विभिन्न प्रविधियों, दृष्टिकोणों और व्याख्याओं का सहारा लिया जाता है। इतिहास लेखन के दौरान वैचारिक रुझान और रुचि भी अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, यूरोपीय इतिहास लेखन में काफी लंबे समय तक एक क्षेत्र विशेष की घटनाओं को आधार बनाया गया। उन्होंने इतिहास को राज्य के सत्ताधारी वर्ग के दृष्टिकोण से देखा और लिखा। इस प्रकार विश्व इतिहास को शासकों, राजाओं और कुलीन तंत्र के इतिहास के रूप में देखा गया है। इसके बाद इतिहास लेखकों और सामाजिक वैज्ञानिकों ने इतिहास लेखन की विषयवस्तु को बदलने की कोशिश की। उन्होंने इसके लिए भौतिक विज्ञानों की प्रविधि अपनाई।

इसके तहत यह कहा गया कि सभी लोगों का अपना एक इतिहास होता है और विश्व के विभिन्न क्षेत्रों का अलग-अलग इतिहास होता है। इसके बाद ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत विकसित हुआ जिसमें बताया गया कि इतिहास सामाजिक संगठन में निचले से उच्चतम स्वरूपों तक बदलाव की एक अपरिहार्य प्रक्रिया है। मनुष्य और प्रकृति के बीच एक द्वंद्वात्मक संबंध है। यह द्वंद्व मनुष्य द्वारा प्रकृति के उपयोग और अपने जीवन को सभ्य बनाने के लिए आवश्यक आवश्यकताओं के उत्पादन के तरीके में भी विद्यमान होता है। अतः शासक वर्ग के इतिहास के बजाय जनता के इतिहास की बात की जानी चाहिए। आज इस प्रविधि पर भी प्रश्नचिन्ह लग गया है।

हम यहां इन प्रविधियों पर कोई बहस या इनका कोई मूल्यांकन प्रस्तुत नहीं करना चाहते हैं। हम बस इतना बताना चाहते हैं कि इतिहास लेखन में विभिन्न दृष्टिकोण, विधियां और प्रवृत्तियां मौजूद हैं।

इस इकाई में पर्यटन के इतिहास की चर्चा की गई है। इस इकाई में हमने काल निर्धारण अर्थात् काल के आधार पर इतिहास विश्लेषण के विभिन्न स्रोतों पर भी विचार किया है। भारतीय परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए हमने भ्रमण से आधुनिक पर्यटन तक ही यात्रा की भी चर्चा की है। इस इकाई में हमने यह भी बताया है कि एक पर्यटन विशेषज्ञ. या पेशेवर व्यक्ति के लिए पर्यटन के इतिहास की क्या प्रासंगिकता है?

12.2 पर्यटन के इतिहास की आवश्यकता

लंबे समय तक पर्यटन का इतिहास यूरोपीय पर्यटन का इतिहास रहा है। यह माना जाता रहा है कि पर्यटन का ज्यादातर विकास यूरोप में ही हुआ था। इतिहासकारों का एक दल ऐसा भी है जो पर्यटन के इतिहास लेखन में अर्थशास्त्र, सांख्यिकी, वैज्ञानिक प्रविधि, मानवविज्ञान और समाजशास्त्र को मिलाकर अन्तर-अनुशासनिक दृष्टिकोण अपनाने पर बल देता है। पर उनकी यह प्रविधि एक समय के भीतर ही कारगर हो सकती है. क्योंकि पर्यटन का सांख्यिकी अध्ययन अभी हाल में शुरू हुआ है। पर जिन कालों की सांख्यिकी उपलब्ध नहीं है उन कालों के अध्ययन का तरीका भी उन्होंने निकाल लिया है। इस प्रकार इन तरीकों का इस्तेमाल करके हम अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन के इतिहास का विकास कर सकते हैं।

पर्यटन के इतिहास के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य एक खास समय के खास समाज के संदर्भ में, इस परिघटना को समझना है। यहां हम यह भी जानने की कोशिश करते हैं कि.किन कारकों ने पर्यटन को बढ़ावा दिया और किन कारकों ने अवरोध खड़े किए। इसके अलावा पर्यटन के इतिहास का अध्ययन कर हम पर्यटन विकास का एक जीवंत प्रारूप बना सकते हैं। पर्यटन की भूमिका का मूल्यांकन करने के साथ-साथ इसके परिणाम को समझने के लिए हम विभिन्न अवधारणाओं की स्थापना भी कर सकते हैं।

इस प्रकार हम केवल अतीत की घटनाओं, चरित्रों का पुनर्निर्माण ही नहीं करते हैं बल्कि आम धारणा भी विकसित करते हैं जो पर्यटन परिघटना के वर्तमान स्वरूप को समझने में ज्यादा कारगर सिद्ध हो सकती है। पर्यटन के इतिहास से सैद्धांतिक ढांचा निर्मित करने और इससे पर्यटन संबंधी आंकड़ों को जांचने-समझने में मदद मिलती है।

सरलीकरण या सामान्यीकरण से बचने के लिए पर्यटन-इतिहास संबंधी आंकड़ों को सावधानी से जांचना चाहिए। प्राचीन इतिहास में होटल, सराय, अतिथि गृहों और परिवहन साधनों के अवशेष प्राप्त हुए हैं पर इस प्रकार की सूचनाओं की अवधि हजारों वर्षों में फैली हुई है। इसके अलावा सभी देशों और कालों के संबंध में सभी विषयों की सूचनाएं हमेशा एक रूप में उपलब्ध नहीं होती हैं। उदाहरण के लिए, फ्रांसीसियों ने सबसे पहले पर्यटन के इतिहास पर काम करना शुरू किया पर उन्होंने केवल कुलीनतंत्रों द्वारा छुट्टी मानने की पद्धति को ही ध्यान में रखा। अंग्रेजों ने जीवनस्तर, खाली समय, सस्ता परिवहन, स्वास्थ्य गृह और समुद्र तटीय आराम गृहों (रिसॉर्ट) जैसे मुख्य कारकों और घटनाओं को ध्यान में रखा और इनका संबंध औद्योगिक विकास, श्रमिक .बल, सामाजिक कानून, और स्थानीय रीति रिवाजों के साथ जोड़ा। पर आज हम पर्यटन को एक व्यवस्था के रूप में देखते हैं। अतीत और वर्तमान के आपसी संबंध को समझने के लिए इसमें भौतिक, आर्थिक, तकनीकी, पर्यावरणीय, सामाजिक-राजनैतिक और सांस्कृतिक कारकों का अध्ययन किया जाता है। और इन सबका भविष्य के विकास के लिए उपयोग किया जाता है।

पर्यटन के इतिहास ने दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नई शुरुआत की है :

1) आंकड़ों के स्रोतों की पहचान
2) लिखित और मौखिक दोनों प्रकार के इतिहासों का उपयोग

ऐतिहासिक प्रक्रिया के आलोचनात्मक परीक्षण से नए आयाम खुलते हैं जिनके बीच से कोई भी रुचि का क्षेत्र विकसित हो सकता है।

अगर पर्यटन का इतिहास सामने ही तो इसे एक शैक्षिक विधा के रूप में स्थापित करने में काफी मदद मिलेगी। अभी भारत में इसकी शुरुआत भर हुई है।

12.3 आंकड़ों के स्रोत

पर्यटन इतिहास के स्रोत में काफी विविधता है और ये अलग-अलग समयों के लिए प्रासंगिक हैं। उदाहरण के लिए, प्राचीन काल से संबद्ध स्रोत निम्नलिखित हैं :

1) साहित्यक ब्यौरे
2) अभिलेख
3) भित्ति चित्र
4) कागजी दस्तावेज/पांडुलिपियां
5) मुहरें
6) पुरातत्व प्रमाण, चित्रित मिट्टी के बर्तन
7) राजनैतिक ब्यौरे
8) संग्रहालय, निजी और सार्वजनिक
9) मौखिक इतिहास और लोक संस्कृति, परंपरागत और व्यक्तिगत आदि

12.3.1 सांख्यिकी ब्यौरे

ये प्राथमिक स्रोत हैं और इनका उपयोग अभी हाल में शुरू हुआ है। पर्यटन के आर्थिक महत्व को समझने के बाद ही इससे संबद्ध सांख्यिकी और गणितीय आंकड़े इकट्ठे किए जाने लगे। 1914 के पहले की पर्यटन संबंधी सांख्यिकी मौजूद नहीं है। उसके पहले पर्यटन के विकास को समझने के लिए स्वास्थ्य, सुरक्षा, पुलिस, देशांतरण, करारोपण और जनसंख्या ब्योरों जैसे गौण स्रोतों का उपयोग किया जाता था।

1920 के बाद से पर्यटन के क्षेत्र में सांख्यिकी की मौजूदगी बढ़नी शुरू हो जाती है। 1921 में, ब्रिटेन में पर्यटन सांख्यिकी इकट्ठी की जाती है और 1945 से यह काम लगभग सभी देशों में शुरू हो जाता है। भारत में 1960 के दशक के बाद पर्यटन संबंधी सांख्यिकी इकठ्ठी करने का काम शुरू हुआ। इसके पहले पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के संदर्भ में पर्यटक सांख्यिकीय इकट्ठी की जाती थी। औपनिवेशिक शासन और उसके बाद भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन के कारण 1947 के पहले के पर्यटन की सांख्यिकी को संयोजित करना कठिन है।

आधिकारिक पर्यटन संगठनों के अंतर्राष्ट्रीय संघ के उदय के साथ-साथ पर्यटन सांख्यिकी की मात्रा में वृद्धि हुई। राष्ट्रीय पर्यटन निकायों के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन संगठनों ने भी आंकड़े संबंधी मानकीकरण स्थापित किए हैं पर अक्सर इनकी विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह लगाया जाता है। इसका कारण यह है कि पूरी दुनिया में पर्यटन और पर्यटक की 42 परिभाषाएं मौजूद हैं। 1920 के पहले रेलवे रिकार्ड, डाक विभाग और जहां संभव हो वहां पासपोर्ट और वीसा विभाग से पर्यटन संबंधी आंकड़े प्राप्त किए जाते थे। इस प्रकार के ब्यौरों से।

- यात्रियों की संख्या मालूम की जा सकती थी
- यात्रा का समय जाना जा सकता था, और
- गंतव्य स्थानों का पता लग सकता था।

नौकरी पेशा लोगों के छुट्टी बिताने के तरीके की जानकारी जनगणना रिपोर्टों और "भुगतान के साथ अवकाश'' को देख रहे. नागरिक सेवा आयोगों से मिलती है। इस प्रकार हम विभिन्न स्रोतों और आंकड़ों से पर्यटन संबंधी सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं। पर्यटन एक बहु-विधात्मक गतिविधि है और आंकड़ों के स्रोत भी काफी फैले हुए हैं परंतु सभी मामलों में इन आंकड़ों का उपयोग नहीं किया जा सकता है।

12.3.2 गौण स्रोत

इस श्रेणी में निम्नलिखित स्रोत आते हैंः

i) डायरी, पत्रिकाएं और शिक्षित यात्रियों, शिक्षाविदों और बुद्धजीवियों के निजी दस्तावेज।

ii) लोगों तक सूचना पहुंचाने और उन्हें रिझाने के लिए उपयोग किए गए विभिन्न प्रकार के जन संचार साधन, जैसे, समाचार-पत्र, पत्रिकाएं, विज्ञापन्न, गाइड बुक आदि।

इन स्रोतों का उपयोग यात्रा कार्यक्रम, महत्वपूर्ण घटना और छुट्टी बिताने के तरीके के रूप में पर्यटन की एक तस्वीर बनाने के लिए किया जाता है।

बोध प्रश्न 1

1) पर्यटन में सांख्यिकी ब्यौरों का क्या महत्व है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) अतीत का अध्ययन क्यों आवश्यक है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) पर्यटन के इतिहास के अध्ययन का क्या उद्देश्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

12.4 काल निर्धारण और अवधारणाएं

समय के साथ-साथ पर्यटन से जुड़े वर्गों में भी परिवर्तन आया। पर्यटन का जनतंत्रीकरण हुआ और इसके साथ-साथ सुविधाओं में एक समानता तो नहीं आ पाई परंतु एक मानक रूप अवश्य स्थापित हो गया। आराम पसंद वर्ग के उदय की अवधारणा का उपयोग करते हुए हमें पर्यटन को भ्रमण के अन्य रूप से अलग करना होगा, इसके बाद हम पर्यटन के इतिहास को छह कालों में विभाजित कर सकते हैं।

1) प्राचीन काल

2) साम्राज्यों का काल

3) तीर्थ यात्रा

4) महान यात्राओं का दौर

5) संक्रमण काल

6) आधुनिक युग

लगभग इन सभी कालों में निम्नलिखित अवधारणाओं का एक समान उपयोग किया गयाः

I) **प्रेरणा :** अनुभव में बदलाव आता रहा है। पहले, कई बार जिंदा रहने के लिए यात्रा करनी पड़ती थी, आज जीवन स्तर में सुधार के लिए यात्रा की जाती है। इसमें निम्नलिखित पक्ष शामिल है।

क) उत्सुकता-जानी पहचानी जगह से अनजानी जगह पर जाना।

ख) अनुमान-आप जो पाना, देखना और करना चाहते हैं। उत्सुकता और खोजी प्रवृत्ति और प्रत्येक नए अनुभव का मूल्यांकन।

ग) भविष्य-दुनिया में जानने के लिए क्या-क्या था और आपने क्या अनुभव किया।

II) **छुट्टी :** इस शब्द के दो स्रोत हैं: (क) धार्मिक और (ख) धर्म निरपेक्ष

क) यूरोप में, काम करने के दिनों के बाद एक दिन पूजा पाठ के लिए नियत होता था, इसीलिए इस दिन को Holi Day (पवित्र दिन) कहा गया है। समय के साथ-साथ धार्मिक उत्सवों में छुट्टी मनाने का रिवाज सा बन गया। इस दिन कोई काम नहीं किया जाता है और सभी कोई मौज मस्ती करते हैं।

ख) धर्मनिरपेक्ष परम्परा राजशाही व्यवस्था का एक हिस्सा है। इस दिन राजशाही की शान में सार्वजनिक अवकाश रखा जाता था। इस दिन कोई काम नहीं होता था और लोग अच्छा भोजन करते थे और उत्सव में हिस्सा लेते थे।

इस अवसर पर सार्वजनिक रूप से खेलकूद का आयोजन किया जाता था।

समय के साथ-साथ धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष परंपराएं एक दूसरे में मिल गई छुट्टी सभी समाजों का एक अंग बन गया।

III) **परिवहन साधन :** परिवहन के साधनों के ताने बाने और मार्गों, सवारियों, यात्रा लागत, दस्तावेजीकरण और सुरक्षित यात्रा, सड़कों के किनारे उपलब्ध सुविधाओं और यात्रियों की सहूलियत की दृष्टि से यह अत्यंत संगठित व्यवस्थायें थीं।

IV) **पर्यटन प्रभाव :** पर्यटन के प्रभाव से केवल लोगों की जीवन शैली ही नहीं बल्कि इसके प्रभाव से उपभोग और उत्पादन के साथ-साथ धन वैभव में भी परिवर्तन आया।

12.5 प्राचीन काल

अभिलेखों, मुहरों और गुफा/भित्ति चित्रकला आदि से प्राचीन कालीन यात्राओं के प्रमाण मिलते हैं। इन प्रमाणों से पता चलता है कि उस जमाने में यात्रा कठिन भी थी और खतरनाक भी। एक बार जो घर से बाहर निकलता था उसके सुरक्षित लौटने की संभावना कम मानी जाती थी। यात्राएं जमीन के रास्ते भी होती थीं और समुद्र के रास्ते भी, परंतु यात्रा की गति बहुत धीमी थी और रास्ते भी विकसित नहीं थे। मार्ग के आस पास सुविधाओं के अभाव के कारण यात्रा की लागत भी बहुत ज्यादा थी। मनुष्य अभी भी प्रकृति के वश में था और हर मौसम में यात्रा नहीं की जा सकती थी। इसके बावजूद तीन महत्वपूर्ण परिवर्तनों से भ्रमण को बढ़ावा मिलाः

i) नये-नये रास्तों और मार्गों का निर्माण और विकास जिसका उपयोग मुख्य रूप से व्यापारी और तीर्थयात्री और शायद साहसी व्यक्ति करते थे।

ii) जल और थल पर चलने वाले विशेष वाहनों का विकास।

iii) नदी और समुद्र के किनारे शहरी केंद्रों और बाद में नगरों का विकास मेसोपोटामिया, चीन और भारत में इस प्रकार के केंद्रों की स्थापना की जानकारी मिलती है। नगरों का विकास होने पर राजनैतिक और आर्थिक संपर्क भी स्थापित हुआ होगा और पत्रवाहकों, भार, वाहकों और कारवाँ की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई होगी।

जैसे-जैसे भ्रमण व्यवस्थित होने लगा और इसकी एक पद्धति बन गई वैसे-वैसे इन रास्तों के किनारे सराय और भोजनालय बनने लगे। जल्द ही ये ठहराव स्थल, बाजार-शहर या एक वाणिज्यिक केंद्र के रूप में विकसित होने लगे जिसके कारण दुनिया के कोने-कोने में भ्रमण का क्षेत्र और संभावना बढ़ गई। दुनिया के विभिन्न भागों के लोगों के बीच संपर्क स्थापित होने से उपभोग और भ्रमण की प्रकृति में बदलाव आने लगा। परिणामतः इसमें भी विशेषज्ञता आने लगी। मसलन, सामान ढोने के लिए गाड़ी और यात्रियों की सवारी के लिए रथ।

वाहनों के विशेषीकरण के साथ-साथ सड़कों और मार्गों में भी सुधार हुआ, मार्गों को समतल बनाया गया और जगह-जगह पर मील के पत्थर और छायादार पेड़ लगाए गए। अच्छे रास्तों के निर्माण से दूर दराज के देशों की समृद्धि और वैभव की जानकारी मिलने लगी। इसके कई परिणाम सामने आए, व्यापार और वाणिज्य में भी विकास हुआ और साथ ही दूरस्थ स्थानों पर युद्ध और बढ़ाई भी शुरू हुई।

बोध प्रश्न 2

1) छुट्टी की अवधारणा कैसे विकसित हुई ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) भ्रमण में होने वाले परिवर्तनों का विवेचन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

12.6 आरंभिक साम्राज्य

पश्चिम में, पर्यटन की स्थापना सबसे पहले मिश्र में हुई और रोमन साम्राज्य के काल में यह अपने उत्कर्ष पर पहुंच गया। पूरब की ओर चीन के तटीय साम्राज्य और भारत का मौर्य साम्राज्य यात्रियों और आगंतुकों के आवागमन और आवश्यगत के लिए प्रसिद्ध थे। सड़कों का तानाबाना सुनियोजित ढंग से बनाया गया था और परिवहन की समुचित व्यवस्था थी। सभी मार्ग राजमार्ग से जुड़ते थे और व्यापार तथा पथिकों के लिए अलग से पथ निर्माण किया गया था। यात्रा के लिए आवश्यक कारवां सरायों, भोजनालयों, अतिथिगृहों,

धर्मशालाओं और पंथागारों की स्थापना की गई थी। कुएं खोदे गए थे, जगह-जगह पर सुरक्षा टुकड़ियां तैनात की गई थीं और डाक चौकियां बनाई गई थीं।

इस समय तक भ्रमण और पर्यटन का अंतर स्पष्ट होने लगा था। हालांकि सड़कों के किनारे प्रदान की गई सुविधाएं बहुत अच्छी नहीं थीं और इसके लिए अक्सर राज्य कोई राशि भी नहीं लेती थी, पर संभ्रांत यात्रियों को विशेष सुविधाएं प्राप्त होती थीं। उनके पास रसोइया, नौकर, तंबू, जानवर भोजन और अन्य सामग्रियां, पानी की आपूर्ति आदि का प्रबंध होता था। इस प्रकार बृहद् आयोजन से पता के लोग भ्रमण करते वक्त अपने आराम, शान और मनोरंजन का पूरा ख्याल रखते थे। यात्री केवल यात्रा का आनंद ही नहीं उठाना चाहते थे बल्कि वे अपने घर जैसा आराम भी पाना चाहते थे। ''अतिथि देवो भवः'' की संकल्पना काफी पुरानी है। यह भी माना जाता रहा है कि अतिथि आगमन से समृद्धि बढ़ती है। वह स्थानीय सेवाओं और उत्पादों का उपभोग करता है। एशिया की सभी संस्कृतियों में अतिथि सत्कार की परंपरा मिलती है। लोकगीतों, लोककथाओं, कथाओं और साहित्य की अन्य विधाओं में इसका जिक्र बार-बार किया गया है। आरंभिक काल में यात्री अतिथि का ही सम्मान पाता था।

12.6.1 मिस्र सभ्यता और फोएनिसिआई

मिस्र की सभ्यता ने कई पर्यटकों को अपनी ओर आकृष्ट किया। एलेक्जेंड्रिया के लाइट हाउस को दुनिया के सात महानतम आश्चर्यों में से एक माना जाता है। इससे पता चलता है कि पर्यटन की उत्पत्ति में उत्सुकता और आनंद इन दो कारकों का विशेष महत्व रहा है। यूनानी यात्री हेरोजेटस ने जीवंत यात्राओं का वर्णन किया है जिसमें स्त्रियां करताल बजाती थीं, पुरुष बासरी बजाते थे और उनके साथी यात्री साथ-साथ कोरस गाते और तालियां बजाते रहते थे। यात्रा सम्पन्न होने पर भोज का आयोजन होता था और ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए बलि दी जाती थी। यात्रा के अंत में जमकर शराब पी जाती थी और उत्सव का माहौल होता था।

दीवारों पर बने भित्ति चित्र और संदेश मिस्र की स्मारकों की प्रसिद्धि के प्रतीक हैं। अप्रैल और नवम्बर के बीच दूर-दूर के यात्री मिस्र के विख्यात स्मारकों को देखने आते थे। घर लौटते वक्त अपने दोस्तों को दिखाने के लिए वे स्मृति-चिन्ह ले. जाना नहीं भूलते थे। पर पर्यटन कुछ महीनों तक ही सीमित था और केवल शीत मौसम में ही यात्रा की जा सकती थी।

परंतु फोनेशियन वास्तविक रूप में साहसी थे। उन्होंने 11 शताब्दी ई. पू. में ही दुनिया की सैर शुरू की और वे पश्चिम में एटलांटिक तक और दक्षिण में अफ्रीका तक पहुंच गये। उन्होंने स्थल भार्ग की सुविधाएं विकसित कीं। और नदियों को पार करने के लिए भी निपुणता हासिल की और लंबे-लंबे मार्गों का निर्माण किया। उन्होंने सबसे पहले विनिमय के लिए मुद्रा का इस्तेमाल किया। इससे यात्री कम सामान लेकर यात्रा कर सकते थे। अब नौकर और खाद्य सामग्री को ढोने की जरूरत नहीं रही क्योंकि रास्ते में मुद्रा का उपयोग कर कुछ भी खरीदा जा सकता था।

12.6.2 फारसी साम्राज्य

अपने विस्तृत साम्राज्य को संभालने के लिए फारसी शासकों ने यात्रा संबंधी अधिसंरचना विकसित की। उन्होंने सड़कें बनाई और चार चक्कों वाले, ऊपर से ढके हुए वाहन तैयार किये। व्यापारी और अन्य। यात्री भूमध्यसागर क्षेत्र में यात्राएं करने लगे और पर्यटन एक प्रकार से स्थापित हो गया।

12.6.3 यूनानी साम्राज्य

यूनानियों ने पर्यटन के नए आयामों को विकसित किया और अफ्रीका से आगे पूर्व तट तक पहुंच गए। उनका सामुद्रिक अनुभव तटीय क्षेत्रों में नगर राज्यों के विकास पर आधारित था। वस्तुतः पहाड़ों को पार करने की कला न आने के कारण थल मार्गों का निर्माण कठिन था। पर्यटन के क्षेत्र में उनका योगदान सराहनीय है। ये इस प्रकार हैं :

1) उन्होंने मुद्रा विनियम व्यवस्था स्थापित की और कई नगर राज्यों के सिक्के यूनानी राज्यों के बाहर भी मान्य थे।

2) भूमध्यसागर क्षेत्र में यूनानी भाषा आम भाषा हो गई।

3) दुनिया के सभी कोने से लोगों को आकृष्ट करने के लिए यूनानी कई प्रकार के उत्सवों का आयोजन किया करते थे। इस प्रकार के आयोजनों में ओलम्पिक का स्थान सर्वोपरि है। यह आयोजन भगवान जियस् (Zeus) के सम्मान में किया जाता था और इस अवसर पर सृजनात्मक खेलकूद कौशल का प्रदर्शन किया जाता था।

4) यूनानी थियेटर और नाट्य कला का भी विश्व भर में नाम था और दूर दूर से लोग ग्रीक कॉमेडी अवार और ट्रेजेडी के नाटक देखने आते थे। इससे उस समय की सोच और दर्शन का भी पता चलता है।

5) यूनान के विद्वानों, चिकित्सकों और वैज्ञानिकों से विचार विमर्श करने के लिए दूर-दूर से विद्वान लोग यूनान आते थे।

6) नगर-राज्य आगंतुकों के आकर्षण के प्रमुख केंद्र थे। एथेन्स आज से कहीं ज्यादा विश्व प्रसिद्ध था। यहां भोजन, आवास और नृत्य, जुआ आदि मनोरंजन सामग्रियों की पूरी व्यवस्था थी।

7) उस समय यूनानियों ने किराए पर Proxeuros (प्रौक्सेरस) लेने की प्रथा चलाई थी। यह एक प्रकार का देशी गाइड होता था जो पर्यटकों को बताता था कि कहाँ जाना है और किस प्रकार सुरक्षित भ्रमण किया जा सकता है।

12.6.4 रोमन साम्राज्य

रोमवासियों में यूनानी सलीके और जीवन शैली के प्रति अगाध आस्था थी। उन्होंने संगठन की अपनी अपूर्व क्षमता के बल पर ग्रीक वासियों द्वारा विकसित अधिकांश पद्धतियों को परिष्कृत किया। पश्चिम अधिकांश क्षेत्रों पर उनका राजनैतिक और सांस्कृतिक नियंत्रण था। काफी लंबे समय तक रोम की फौज कई देशों में और लोगों पर राज्य करती रही और वहां शांति और समृद्धि का साम्राज्य स्थापित किया। परिणामस्वरूप न केवल रोमन संभ्रांत वर्ग बल्कि मध्यवर्गीय व्यापारी वर्ग भी समुद्र तटों के किनारे और पहाड़ों पर "विला'' और आराम गृह बनाने लगा। वहां दास अर्थव्यवस्था प्रचलित थी और दुनिया के सभी हिस्सों की कलात्मक वस्तुएं यहां मौजूद थीं।

इस काल में निम्नलिखित कारणों से पर्यटन का विकास हुआः

1) पूरे साम्राज्य में रोमन सिक्के सरकारी मुद्रा के रूप में स्वीकृत थे।

2) पूरे साम्राज्य में "एप्पियन वे'' के नाम से प्रसिद्ध सड़कों का बेहतरीन और सुनियोजित ताना बाना मौजूद था और साम्राज्य के सभी हिस्सों में जल मार्ग से भी यात्री की जा सकती थी।

3) पश्चिम में स्कॉटलैंड और पूर्व में यूफरेट्स तक फैले इस बृहद् साम्राज्य की सरकारी भाषा यूनानी और लैटिन थी।

4) रोमन नागरिकों का धन और वैभव बढ़ा और वे आनंद प्राप्ति, उत्सुकता पूर्ति के साथ-साथ अपने अधीनस्थ लोगों की संस्कृतियों की ओर उन्मुख हुए।

5) ऊब और थकान मिटाने के लिए खेलकूद विकसित किए गए। खेलकूद और तलवार बाजी की प्रतिस्पर्धा लोकप्रिय आयोजन थे।

6) पर्यटक यूनानी मंदिरों, समाधि स्थलों और कलात्मक वस्तुएं देखने जाते थे। इससे स्थल-दर्शन यात्राओं और घूमने फिरने जैसे आयामों का विकास हुआ। मिस्र और एशिया माइनर (आधुनिक तुर्की) अपनी इमारतों के लिए प्रसिद्ध थे और ये लोकप्रिय पर्यटन स्थल थे। विद्वानों ने दुनिया के सात आश्चर्यों की सूची बना दी और रोमन यात्री इनकी ओर आकृष्ट हुए।

7) गर्म झरनों तक जाना और नहाना या जिसे आज हम स्वास्थ्य पयर्टन कहते हैं, भी उस समय की एक प्रमुख गतिविधि थी। इन झरनों के पास तीर्थस्थल भी होते थे, अतः तीर्थयात्री भी यहां आया करते थे।

8) साहित्य में वर्णित मनोरम प्राकृतिक स्थलों की ओर शिक्षित पर्यटक आकर्षित हुए।

12.6.5 भारत

अपने आरंभिक दिनों से भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है और यहां से अनाज का निर्यात किया जाता रहा है। इस प्रकार व्यापार के जरिए दूसरे देशों से संबंध कायम किया जाता रहा है। उत्तरवैदिक काल में लोहे से इस्पात और उससे अस्त्र बनाने की कला विकसित हो चुकी थी। भारतीय औजार और कपड़े विश्व प्रसिद्ध थे। समकालीन यूनानी और हिन्दू विद्वानों ने भारत को सोने की चिड़िया कहकर इसके छिपे धन का उल्लेख किया है।

एशिया और यूरोप को जोड़ने वाले प्रमुख मार्ग भारत से होकर गुजरते थे इसलिए भारतीय सामुदायिक जीवन में व्यापार और यात्रा आम बात थी। इस काल में कारवां सरायों की स्थापना हुई। छंदों और महाकाव्यों से पता चला है कि खेलकूद और आनुष्ठानिक बलिदान लोकप्रिय उत्सव थे।

महाभारत में इस प्रकार के उत्सवों, राजाओं की उपस्थिति और पेश किए गए नजरानों का रोचक वर्णन मिलता है।

अर्थशास्त्र में व्यापारियों को दिए जाने वाले संरक्षण और भारतीय समाज में उनकी ऊंची हैसियत का जिक्र हुआ है। सामान का बीमा और सुरक्षित यात्रा, मूल्य नियंत्रण, तौल और माप और विनिमय के लिए सोने, चांदी और तांबे के उपयोग से सुविकसित, व्यापार और भ्रमण का पता चलता है।

शाही राजधानियां प्रमुख व्यापारिक और औद्योगिक केंद्र थीं और इनके सहयोग के लिए मजबूत ग्रामीण व्यवस्था और बस्तियां मौजूद थीं। थल और जल, दोनों मार्गों से व्यापार होता था। सेनाओं के लिए बनाए मार्गों से व्यापारियों के आवागमन में तीव्रता आ गई और अब वे शीघ्रता से विलासी वस्तुएं राजमहल तक पहुंचा सकते थे। ब्राह्मण गांव विद्या केंद्रों के रूप में विकसित हुए और वहां बाहर से यात्री और विद्वान आने लगे। इसी समय बौद्ध संघों ने तीर्थयात्रा की परंपरा स्थापित की, इसमें बौद्ध भिक्षु गांव से गांव और राजदरबार से राजदरबार घूमकर मध्यमार्ग के महत्व का प्रतिपादन करते थे। ये भिक्षु-यात्री विश्राम गृहों या पंथागारों में ठहरते थे। भिक्षु, व्यापारी और आम जनता मठों और विहारों की यात्रा करते थे।

कई राजे-महाराजे यूनान से फारस या मेसोपोटामिया होते हुए भारत पहुंचे। परंतु ऐसे यात्रियों का उल्लेख कम मिलता है। यूनानी ब्यौरों से पता चला है कि भारत में रथों के चलने लायक मार्गों का निर्माण किया गया था और घोड़े, हाथी और ऊँट परिवहन के आम साधन थे। सड़क के किनारे छायादार वृक्ष लगाए जाते थे। कुओं, विश्राम गृहों और सुरक्षा की व्यवस्था की जाती थी। अर्थशास्त्र में राज्य के लिए भ्रमण अधिसंरचना के महत्व पर प्रकाश डाला गया है और मार्गों का वर्गीकरण और वाहनों के प्रकारों का भी उल्लेख किया गया है। इससे स्पष्ट है कि भारत में सेना, व्यापारियों और नागरिकों के लिए यात्रा की पूर्ण विकसित व्यवस्था मौजूद थी। देश के भीतर जल मार्ग से यात्रा करने वाले यात्रियों को भी राज्य सुरक्षा और संरक्षण प्रदान करता था।

शहरों में बाजार लगते थे और वहां देहातों और दूरदराज के इलाकों से लाया गया सामान बिकता था। विदेशियों को नगर द्वार पर बने सरायों में ठहराया जाता था जहां उन्हें हर प्रकार की सुविधाएं प्रदान की जाती थीं। इन यात्रियों के आवागमन पर कड़ी नजर रखी जाती थी। एक इलाके से दूसरे इलाके में जाने के लिए इन्हें सुरक्षा अनुमति पत्र प्राप्त करना पड़ता था। उनके मनोरंजन के लिए उन्हें मदिरालय और नृत्य गृहों में जाने की छूट थी परंतु यहां भी निरीक्षक उनके व्यवहार पर कड़ी नजर रखते थे। जुआ खेलना वैध था और यह राज्य की आय का प्रमुख स्रोत था।

राजा महाराजाओं ने नौका विहार और पहाड़ों पर जाने की परंपरा की शुरुआत की। पर उनके साथ दरबार से जुड़े और भी लोग शहर के कोलाहल से दूर शांत इलाकों और ठण्डे प्रदेशों में आते जाते थे। इस प्रकार की यात्राओं में अन्य लोगों की भी रुचि पैदा हुई। यहां, मुगल बादशाहों के उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं। वे प्रकृति प्रेमी थे और इसके लिए उन्होंने काफी यात्राएं कीं। आज के रिसॉर्ट विकास में उनकी अहम भूमिका है। कश्मीर के शालीमार और निशात बाग इसके उत्तम उदाहरण हैं। वस्तुतः जहांगीर हमेशा गर्मी कश्मीर में और जाड़ा विंध्य पार क्षेत्र में बिताता था।

कोस मिनार (मील का पत्थर), बावली, सराय और विस्तृत सड़कों और जल मार्गों का ऐसा तानाबाना बुना गया था कि कोई व्यक्ति भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक आ जा सकता था। इतनी व्यापक व्यवस्था भारतवासियों के भ्रमण-प्रेम का ही परिचायक है।

बोध प्रश्न 3

1) पर्यटन के विकास में यूनानियों के योगदान पर विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) निम्नलिखित में से सही कथन के आगे (√) का और गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए।

   i) पर्यटकों को आकृष्ट करने के लिए यूनानियों ने उत्सव आयोजित किए।

   ii) फीनेशियन्स नदी पार करने की कला नहीं सीख पाए थे।

iii) किराए पर देशी गाइड रखने की परम्परा की शुरुआत भारत में हुई।

iv) मुगल शासकों ने पर्यटन स्थलों का विकास किया।

3) अर्थशास्त्र में वर्णित यात्रियों के लिए उपलब्ध सुविधाओं का उल्लेख कीजए।

.....

.....

.....

.....

.....

12.7 रेशम मार्ग

पूरब-पश्चिम को जोड़ने में रेशम मार्ग का योगदान अभूतपूर्व है। इसकी शुरुआत 2000 ई. पू. में हुई और आधुनिकीकरण तथा प्राकृतिक कारणों से इसमें समय-समय पर बदलाव होता रहा। रेशम मार्ग इस बात का प्रमाण है कि लोग बेहिचक एक देश से दूसरे देश की यात्रा करते थे और किसी भी प्रकार की असुविधा उनके मार्ग में बाधा नहीं उत्पन्न कर सकती थी।

इसका एक कारण यह भी था कि यात्रा करने से लोगों का अज्ञान और अंधविश्वास दूर हुआ।

यात्रा संबंधी ब्यौरों, दरबारों और राजाओं के लिए लिखे गए इतिहास-वृत्त और अभिलेख और तीर्थयात्रियों के ब्यौरों में रेशम मार्ग का उल्लेख मिलता है। व्यापारी आपस में रेशम, मलमल, बढ़िया कांच, चाय, चावल और मसालों का आदान-प्रदान करते थे। इसके साथ-साथ उनके बीच विश्व के विभिन्न भागों में प्रचलित विचारों और उत्पादन तकनीक की जानकारियों का भी आदान प्रदान होता था। अन्य यात्राओं के समान रेशम मार्ग पर होने वाली यात्राएं:

- रास्ते में निश्चित पड़ावों पर रुक-रुक कर की जाती थीं।
- आमतौर पर शीतकाल में की जाती थी। ऐसा भौगोलिक संरचना और वातावरण को देखते हुए किया जाता था। यह यात्रा काफी कष्टप्रद होती थी इसमें धन कमाने की काफी गुंजाइश थी।
- नदी की धारा के साथ-साथ न चलने की स्थिति में तारों को देखकर दिशा का निर्धारण किया जाता था।
- यात्रियों से कर वसूला जाता था। राज्य की आमदनी का यह एक प्रमुख स्रोत था। यात्री बड़े राज्यों में जाना और टिकना ज्यादा पसंद करते थे। वहां उन्हें अपेक्षाकृत कम कर देना पड़ता था और बेहतर सुविधाएं भी प्राप्त होती थीं। धनी व्यक्तियों को अपने घर, शहर या निवास स्थल पर लौटने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था क्योंकि वे अपने साथ अपार धन-संपदा लाते थे।
- धन और विचारों के अलावा पूर्व-पश्चिम के बीच नई तकनीकों का भी आदान-प्रदान हुआ। उदाहरण के लिए, सिंचाई, पौधों, फूलों, छपाई, कागज और बारूद की जानकारी कई देशों में रेशम मार्ग के जरिए ही पहुंची।

- यात्रियों के अनुभव के आधार पर उनके सोचने-समझने और देखने के ढंग का अनुमान लगाया जा सकता है। उनमें नई जगहों, लोगों, और संस्कृतियों को देखने जानने की उत्सुकता थी, वो अपना ज्ञान बढ़ाना चाहते थे और दुनिया के नए-नएं रूपों से अवगत होना चाहते थे। ऐसा लगता है कि उनके अंदर कहीं न कहीं एक पर्यटक बैठा हुआ था।

साम्राज्यों के पतन होने से व्यापार और वाणिज्य को धक्का पहुंचा। लोगों का आना-जाना भी कम हो गया। केवल तीर्थ यात्रियों और कारीगरों का ही आना जाना होता था। मध्यकाल के आते-आते समुद्र के किनारे बने आराम गृह, पहाड़ों पर बनी बस्तियां और स्वास्थ्य गृह, जो कभी आनंद और मनोरंजन के केंद्र हुआ करते थे, वीरान हो गए। हालांकि, इन वर्षों में पर्यटन संबंधी गतिविधियों के विकास से पर्यटन का एक जटिल स्वरूप अवश्य सामने आया::

1) प्रेरणाओं, आवश्यकताओं और संतुष्टि की जटिलता के कारण पर्यटन परिघटना और प्रथाओं और उनके संबंधों के मिले जुले रूप में विकसित हुआ न कि किसी एक विशेष या अनूठे विचार के तहत।

2) लोगों के एक जगह से दूसरी जगह आने जाने, और, ठहरने के कारण इस प्रकार के अंतर्संबंध विकसित हुए जिसके कारण पर्यटन के विकास के साथ नए आयाम जुड़े।

3) अपने घर और लोगों से दूर रहने पर यात्रियों को अलग ढंग से रहन-सहन हुआ। इससे पर्यटन संबंध गतिविधियों को बढ़ावा मिला।

4) इन यात्राओं के दौरान यात्रियों के मन में सदा एक बात रही थी कि उन्हें घर लौटना है और उनका यह ठहराव अस्थाई है। पर्यटन की अवधारणा से यह तत्व इसी समय से शामिल हो गया।

5) व्यापार, शिक्षा या मनोरंजन के लिए गंतव्य स्थल का चुनाव किया जाता था। यह भी पर्यटन का एक प्रमुख तत्व है।

12.8 तीर्थ यात्रा

अपनी विभिन्न इच्छाओं की पूर्ति के लिए मनुष्य लगातार एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा करता रहा है। मनुष्य लगातार अपनी क्षमताओं का विकास करता रहा है परंतु उसे सामने कुछ ऐसी बाधाएं आ जाती हैं जिसके समक्ष वह अपने को निरूपाय महसूस करता है। मानवशास्त्रीय प्रतीकों से लेकर धर्म सिद्धांतों के विकास तक में: प्रकृति के नियमों से परे किसी असीम शक्ति या सत्ता से प्रार्थना की जाती रही है। तीर्थयात्रा, वस्तुतः अपने भौतिक और आध्यात्मिक जीवन को सार्थक बनाने के लिए की गई एक यात्रा है। विशेष सांस्कृतिक संदर्भ में कुछ मान्यताएं और धारणाएं प्रचलित होती हैं। इन्हीं मान्यताओं और विश्वासों के तहत तीर्थ यात्राएं की जाती हैं। पवित्र धार्मिक ग्रंथों और अनुष्ठानों में देवी-देवताओं से जुड़े स्थलों का जिक्र किया जाता है और इस प्रकार तीर्थस्थलों का निर्माण होता है और लोगों के बीच उसकी महत्ता बढ़ती है। परंपरागत समाजों में, एक तीर्थयात्री तीर्थाटन कर ईश्वर की अनुकंपा तो प्राप्त करता ही है, साथ ही साथ सामुदायिक जीवन में उसे नैतिक नेतृत्व भी प्राप्त होता है। सभी धर्मों पर यह बात जागू होती है।

पुराने जमाने में प्राकृतिक छटा के बीच गर्म झरनों, नदियों और तालाबों से घिरे देव स्थान तीर्थाटन के केंद्र होते थे। सभी धर्मों के संत-महात्माओं के निवास स्थल और मृत्यु स्थल तीर्थ के केंद्र बन जाते हैं। तीर्थयात्री अपने-अपने धर्मों से जुड़े पवित्र स्थानों की यात्रा करते

हैं। तीर्थयात्रा कर गरीबी, युद्ध, बीमारी अत्याचार और दुख जैसे भौतिक कारणों, जिस पर मनुष्य का कोई वश नहीं चलता से मुक्ति पाने का प्रयास किया जाता था। तीर्थयात्री हमेशा जत्थे में चलते थे और लंबी यात्राएं करते थे। वे व्यापारियों के पास उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग करते थे और धार्मिक स्थलों, पवित्र नदियों और तालाबों के पास लगे मेलों को एक पवित्र स्वरूप प्रदान करते थे। मठों में तीर्थयात्रियों के लिए भोजन और आवास का प्रबंध रहता था। कई बार लोग श्रद्धा या भक्ति के कारण नहीं बल्कि नई-नई जगहों को देखने की उत्कंठा रोमांच और यायावरी के कारण तीर्थयात्रा पर निकलते थे।

भूगोल और संसार की अनेक चीजों से तीर्थ यात्रियों के कारण जानकारी मिली। वे उत्साह. और खोजी तो होते ही थे, साथ ही साथ वे ज्ञानी और सुसंस्कृत भी थे।

आरंभ से ही तीर्थाटन को आध्यात्मिक के साथ-साथ सामाजिक मान्यता भी प्राप्त है और भारत जैसे देशों में तीर्थयात्रियों को राज्य द्वारा कई प्रकार की सुविधाएं भी प्रदान की जाती हैं। ये तीर्थयात्री केवल श्रद्धा और भक्तिभाव से ही तीर्थ यात्रा के लिए निकलते हैं बल्कि उनके मन में नए स्थानों को देखने को इच्छा भी छिपी होती है। वे पुण्य कमाने के साथ-साथ नए-नए लोगों से मिलना भी चाहते हैं। साम्राज्यवाद के युग में कई परम्परागत विश्वासों की अवहेलना की गई परंतु जिन लोगों ने अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को बचाना चाहा उन्होंने तीर्थाटन की ही ओट ली।

दो विश्व युद्धों के बीच घटी राजनैतिक घटनाओं के कारण नैतिकता के नए मानदण्ड निर्मित हुए और धर्म का व्यक्तिकरण और निरपेक्षीकरण हुआ। धर्म व्यक्तिगत अनुभूति और व्यक्तित्व पर आधारित होने लगा और पूर्वी धार्मिक अनुभव और सामुदायिक अस्मिता अपने क्षेत्र से बाहर निकली और पूरे विश्व में फैल गई। भारत में भी धर्म-गुरुओं का उदय हुआ और दुनिया के कोने-कोने से लोग उनके शिष्य बनने आए' (जैसे महेश योगी, रजनीश और सत्य साईं बाबा)। भक्ति और कीर्तन की परम्परा (जैसे हरे कृष्णा आंदोलन) के साथ ध्यान और मनन आकर्षण का केंद्र हो गया। इससे धर्म प्रचार को बढ़ावा मिला परंतु इस बार इसकी दिशा पूर्व से पश्चिम की ओर थी। सामान्य जीवन से कटी पीढ़ी अपने जीवन का अर्थ खोजने का प्रयत्न करने लगी। परंतु यह प्रयास आत्म परीक्षण या तीर्थाटन से ज्यादा रोमांच की आकांक्षा से प्रेरित था। इसका एक कारण यह भी था कि अपने घर से पूरब के आध्यात्मिक स्थल तक पहुंचने के लिए उनके पास बहुत कम पूँजी होती थी।

आजकल के समाजशास्त्रियों ने तीर्थाटन का दायरा व्यापक कर दिया है और इसमें गैर-धार्मिक यात्राओं को भी शामिल कर लिया है। मसलन, अपने आदर्श "नायक'' और विचारक (फिल्म अभिनेता, नेता आदि) के पास जाने, प्रकृति की गोद में और अपने वतन जाने को भी तीर्थाटन में ही शामिल किया जाने लगा है। अपनी जड़ों की खोज करना भी तीर्थाटन का ही एक प्रकार है। इससे प्रेरित होकर कई लोग अपने मूल स्थान की यात्रा करते हैं।

भारत जैसे देश में, जहां पर्यटन लोगों की आर्थिक हैसियत के बाहर की चीज है, तीर्थयात्रा एक प्रमुख और जीवंत अनुभव है। व्यक्तिगत आमदनी स्तर बढ़ने और बेहतर शिक्षा की वजह से लोगों की आस्था और विश्वास में धर्म का प्रभाव कम हो रहा है और तीर्थयात्रा में सुख और आनंद का लक्ष्य प्रमुख होता जा रहा है। इस प्रवृत्ति को मद्देनजर रखते हुए विभिन्न मठ, मंदिर और पूजा स्थल विशेष यात्राओं का आयोजन करती हैं और उसे बड़े पैमाने पर विज्ञापित करती हैं। इससे इन मंदिरों और पूजा स्थलों से जुड़े न्यासों को काफी फायदा होता है। विभिन्न समाधि स्थलों और मजारों पर मेले लगते हैं। इन छोटे-मोटे मेलों के अतिरिक्त उज्जैन, नासिक और इलाहाबाद में कुंभ मेला लगता है। अपने सांस्कृतिक महत्व और अस्मिता के कारण वाराणसी या गंगोत्री जैसे तीर्थस्थल पर्यटन के भी प्रमुख केंद्र बन जाते हैं।

बोध प्रश्न 4

1) तीर्थयात्रा या तीर्थाटन से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) रेशम मार्ग के महत्व पर विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

12.9 शानदार यात्रा (ग्रैंड टूर)

पुराने जमाने में यूरोपीय समाज का अमीर और संभ्रांत वर्ग संस्कृति, शिक्षा और आनंद के ख्याल से पश्चिमी यूरोप के दौरे पर निकलता था और उसका एक पूरा चक्कर लगा लेता था। इसे ही "ग्रैंड टूर'' या शानदार या महान यात्रा के नाम से जाना जाता है। यूरोप के पर्यटन इतिहास में इसका उल्लेख बार-बार किया गया है। अधिकांश आधुनिक अध्ययनों में भ्रमण की परंपरागत छवि प्रस्तुत की गई है। उन्होंने इस तथ्य को नजरअंदाज कर दिया कि विशाल पैमाने पर यह पर्यटकों का पहला ऐसा प्रमाण है जिसके लिखित प्रमाण पर्यटकों के पत्रों, पत्रिकाओं और डायरियों के रूप में मौजूद हैं। इन स्रोतों से पता चलता है कि किसी खास सामाजिक और सांस्कृतिक माहौल में पर्यटकों का आवागमन व्यापक पैमाने पर बढ़ता है, और प्रत्येक देश में शानदार और महान यात्रा का अपना अलग-अलग नजरिया हो सकता है।

कला और बौद्धिक जीवन, सामाजिक और आर्थिक इतिहास के साथ-साथ साहित्य पर इस प्रकार के भ्रमण के प्रभाव को देखते हुए कहा जा सकता है कि इसमें अभिजात वर्ग की भागीदारी ज्यादा थी। लेकिन यहां भी मध्यवर्ग की भूमिका स्पष्ट है। इनके साथ चलने वाले व्यापारी और मुंशियों ने पर्यटकों की यात्रा को लिप्यांकित किया और कलाकारों ने अपने आश्रयदाताओं के लिए अपनी कला और निपुणता के सर्वोत्तम नमूने पेश किए। "ग्रैंड टूर'' के बारे में कई विवादास्पद मान्यताएं प्रचलित हैं, मसलन यह एक खास मार्ग अपनाता है और यह कछुआ गति से आराम करता हुआ आगे बढ़ता है। परंतु हमारे पास इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि इसके लिए कोई बना बनाया तरीका निश्चित नहीं था और इतनी गति भी पर्याप्त तेज थी। इस मान्यता पर भी प्रश्नचिहन लगा हुआ है कि यह शानदार यात्रा ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज के राजनैतिक प्रशिक्षण और भ्रमण कार्यक्रम का एक अनिवार्य हिस्सा था। क्या यह धर्म के निरपेक्षीकरण का परिणाम था? क्या रेलवे के विकास या बदलते सांस्कृतिक मूल्यों और मध्य वर्ग के बढ़ते आकार के कारण इस प्रकार की यात्राओं का चलन समाप्त हो गया। आने वाले दिनों में इस 'ग्रैंड टूर'' - यात्रा कार्यक्रम बनाते समय इन सभी मुद्दों को ध्यान में रखा गया। ''ग्रैंड टूर'' की विशेषताएँ निम्नलिखित है :

1) किस – संदर्भ में, ''ग्रैंड टूर'' को परिभाषित किया जा सकता है। इसके बाद ही स्थान और परिवहन साधन का निर्धारण किया जा सकेगा। मसलन कुलीन वर्ग अपना दरबार पहाड़ी आवास झीलों या समुद्र के किनारे लगाना चाहेगा। अभिजात्य वर्ग और ऊंचे अधिकारी भी इनके साथ जाएंगे पर इसके साथ-साथ वे शिक्षा और ज्ञान के केंद्रों में भी जाना चाहेंगे।

2) यात्रा कार्यक्रम में उल्लिखित गंतव्य स्थलों द्वारा ''ग्रैंड टूर'' को परिभाषित किया जा सकता है, परंतु यात्रा को इस प्रकार की परिभाषा में बांधने से यह कुछ खास वर्गों तक ही सीमित रह जाएगा।

3) ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में ''ग्रैंड टूर'' को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि पहले के जमाने में ''अच्छे घराने'' और ''भाग्यवान'' लोगों के लिए शिक्षा का यह अनिवार्य हिस्सा था। जिसमें यूरोप के प्रमुख शहरों और महलों की यात्रा की जाती थी। यह परिभाषा यूरोप को केंद्र में रखकर प्रस्तुत की गई है और इसकी वर्ग सीमाएं भी स्पष्ट हैं। परतु इस बात से यह पता चलता है कि पश्चिमी यूरोप में महलों और शहरों को देखने जाने की प्रथा थी लेकिन ये यात्राएं केवल शिक्षा और आनंद के लिए ही आयोजित नहीं की जाती थीं।

4) 'ग्रैंड टूर'' के कारण भी अलग-अलग थेः पद प्राप्ति, शिक्षा, संस्कृति, साहित्यिक, स्वास्थ्य, वैज्ञानिक, व्यापार और आर्थिक। सामाजिक स्तर, सांस्कृतिक माहौल और परिवहन तथा आवास की प्रवृत्तियों के अनुसार कई बार एक या एक से अधिक प्रेरणाएं महत्वपूर्ण हो जाया करती हैं।

5) "ग्रैंड टूर'' यात्रा कार्यक्रम का संबंध पर्यटन स्रोतों की उपलब्धता तथा फैशन और सुसाध्यीकरण से होता है। मौसम के अनुसार इनके समय निर्धारणाओं में भी फर्क पड़ता है। इसके साथ-साथ संबद्ध व्यक्तियों की गतिविधियों और घटनाओं का भी इस पर असर पड़ता है। इसी प्रकार विभिन्न स्थलों पर लोगों के ठहराव की अवधि भी इसी प्रकार के विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है।

6) व्यापारी, तीर्थयात्री और पर्यटक अतीत में जिन सुविधाओं का उपयोग करते थे, 19वीं शताब्दी से उनका इंतजाम पर्यटन उद्योग करने लगा और वह पर्यटन के प्रवाह को नियंत्रित भी करने लगा। इस प्रकार शहरों में होटलों, सरायों और किराए के कमरों में रहना आम बात हो गई। नियमित परिवहन सेवाओं की स्थापना की गई। निर्देशिकाएं बनाई गई। गाइड और कुली भी मिलने लगे। साइकिल चलाने और पैदल यात्रा करने को लोकप्रियता प्राप्त हुई। इसके बाद बैंकिंग सुविधा और "नोट'' के आदान-प्रदान से पर्यटकों को एक अतिरिक्त सुविधा प्राप्त हो गई। इस प्रकार थामस कुक जैसे भ्रमण आयोजकों के उदय की पृष्ठभूमि तैयार हो गई जिसने पैकेज टूर बनाकर इस प्रकार की सारी सुविधाएं पर्यटकों को उपलब्ध कराईं।

7) ग्रैंड टूर ने पर्यटन को पारिवारिक आयोजन बना दिया और जल्द ही महिला यात्री भी यात्रा पर निकलने लगीं। पर्यटन के इतिहास के इस चरण से संबद्ध काफी सामग्री उपलब्ध है। समस्या केवल चुनाव और विश्लेषण की है ताकि किसी भी काल और स्थान से संबद्ध तथ्य एक स्थान पर प्राप्त हो सके।

12.10 आधुनिक पर्यटन में संक्रमण

यूरोप में आधुनिक पर्यटन के आगमन के प्रमुख कारण इस प्रकार हैं :

- तकनीकी में क्रांतिकारी बदलाव।
- तीव्र औद्योगीकरण के कारण व्यक्तिगत आमदनी में वृद्धि
- मध्यवर्गीय पेशेवर समुदाय (थामस कुक जैसे) के उद्यम जिन्होंने अनुभवहीन यात्रियों के लिए यात्राओं का आयोजन शुरू किया।

ब्रिटिश शासकों ने अपनी सुख-सुविधा और उन्नति के लिए भारत में पर्यटन को बढ़ावा दिया। गर्मी के मौसम में काम करने के लिए पहाड़ियों पर बस्तियां बसाई गईं और वहीं से प्रशासनिक और व्यापारी संभ्रांत वर्ग अपना कार्य करने लगे। जो लोग समुद्र के किनारे की आबो हवा का आनंद उठाना चाहते थे उनके लिए पूर्वी तट पर पुरी, वाल्तेयर और पश्चिमी तट पर मरीना और जुहू बनाए गए। ब्रिटिश हित को प्रसारित करने के लिए खोजी और उत्साही व्यक्ति, वैज्ञानिक और व्यापारी पहाड़ों और दूर दराज के इलाकों तक गए। रेलवे के विकास से ब्रिटिश पर्यटक और भारतीय संभ्रांत वर्ग के लिए सभी पहाड़ी स्थानों और रिसॉर्ट तक पहुंचने में सहूलियत हो गई। एंग्लो-इंडियन समुदाय द्वारा संचालित रेलवे होटल और अतिथि गृहों से भी इन विश्राम स्थलों (रिसॉर्ट) को बढ़ावा मिला।

मध्यमवर्ग और संभ्रांत वर्ग के पर्यटन-स्वरूप में अंतर था। पहाड़ों पर स्थित स्वास्थ्य गृहों या नदियों के संगम पर स्थित तीर्थस्थान और मंदिरों के शहर'' यात्रियों को आकर्षित करते रहे जिन लोगों का बराबर आना-जाना लगा रहता था उन्होंने वहां अपना दूसरा घर बनाना शुरू कर दिया। दूसरा घर बनाने की इस परिघटना के फलस्वरूप मनाली, ऊटी और दार्जिलिंग जैसे पहाड़ी बस्तियां पुरी, वाल्तेयर और जुहू जैसे ''बीच'' (समुद्र का किनारा) बने।

ब्रिटिश भारतीय प्रशासन, स्कूल, कॉलेज, कोर्ट आदि की संस्थागत पद्धति के फलस्वरूप शांत और दूर दराज इलाकों में इनकी स्थापना की जाने लगी। संपन्न लोग शहर में रहते थे, परंतु गांवों में उनके पास जमीन और सम्पत्ति होती थी। भारत के आजाद होते-होते हमारे यहां मन बहलाव के लिए गांव जाने और यात्रा करने की एक परंपरा सी बन गई।

1948 में, सर जॉन सार्जेंट ने पर्यटन के अंतर्राष्ट्रीय पहलुओं पर विचार करना शुरू किया। यूरोप में ऐसे समर्पित प्राच्यवादी उपस्थित थे जो भारत से अपना संबंध बनाए रखना चाहते थे। इसके अलावा कई अंग्रेज अपने वतन के कठोर माहौल में न लौटना चाहते थे। उन पर अभी भी राज का भूत सवार था, उनकी पूरी जिंदगी भारत में बीत गई थी, वे यहां से अपना संबंध तोड़ने को तैयार नहीं थे। सार्जेंट ने अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के आर्थिक लाभ की ओर भी इशारा किया और भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विदेश - भारतीय दूतावासों और परिवहन मंत्रालय में पर्यटन यातायात विभाग की स्थापना का प्रस्ताव रखा था। 1930 के दशक में नागरिक उड्डयन ने भारत को यूरोप से जोड़ दिया। पूरे देश में रेलवे का जाल फैल गया और यूरोपीय स्तर के आवास, भोजन और मनोरंजन के लिए सर्किट हाउस और डाक बंगले में पर्याप्त व्यवस्था कर दी गई थी। वर्षों से साहब लोगों की खातिर करने वाले प्रशिक्षित "खानसामे'' भी मौजूद थे। इन विश्राम गृहों में टेनिस, क्रिकेट और गोल्फ क्लब, थियेटर और पुस्तकालय की भी व्यवस्था होती थी। अब भारत अपने को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मंच पर प्रस्तुत करने के लिए तैयार था।

बोध प्रश्न 5

1) "ग्रैंड टूर' से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) सार्जेट ने अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकृष्ट करने का सुझाव क्यों दिया?

.....

.....

.....

.....

.....

3) अंग्रेजों ने भारत में किस प्रकार के पर्यटन को प्रोत्साहित किया?

.....

.....

.....

.....

.....

12.11 भारत में आधुनिक पर्यटन

भारत में रेल के विकास के कारण अब ज्यादा से ज्यादा लोग यात्रा कर सकते थे और मौज मस्ती के लिए बाहर निकल सकते थे। अब यह केवल "अधिकारियों और लोगों'' का ही विशेषाधिकार नहीं रह गया था बल्कि अब मध्य वर्ग और कामगार जनता भी यात्रा संस्कृति से जुड़ सकती थी।

देश के कोने-कोने में जाने के लिए 9 निजी वायु सेवाओं को मिलाकर इंडियन एयर लाइन्स के नाम से एक सार्वजनिक उद्यम की स्थापना की गई।

बड़े-बड़े सार्वजनिक उद्यमों ने देश के सभी हिस्से के लोगों को रोजगार प्रदान किया और उन्हें अवकाश भ्रमण रियायत (LTC) की सुविधा उपलब्ध कराई। इससे घरेलू पर्यटन को बढ़ावा मिला। देश के विभिन्न हिस्सों में अध्ययन करने और घूमने के लिए विद्यार्थियों को रियायत उपलब्ध कराई गई।

आर्थिक मुनाफे और विदेशी मुद्रा अर्जन के लिए अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा दिया गया। भारत जैसे विकासशील और औद्योगिकरण की प्रक्रिया से गुजर रहे देश के लिए इस प्रकार के अर्जन की विशेष जरूरत होती है।

1960 के दशक के आरंभ में भारतीय पर्यटन विकास निगम (ITDC) की स्थापना का निर्णय लिया गया। इसका उद्देश्य देश के प्रमुख पर्यटन केंद्रों में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए पश्चिमी सुविधा उपलब्ध कराना था। आई.टी.डी.सी. को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए आधुनिक अधिसंरचना (जैसे फाइव स्टार अशोक होटल) के विकास में उत्प्रेरक की भूमिका अदा करनी थी। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने एयर इंडिया इंटरनेशनल की स्थापना की और लंदन तथा फ्रैंक्फर्ट में पर्यटन प्रोत्साहन कार्यालय खोले नागरिक उड्डयन मंत्रालय के पर्यटन सेल को विभाग में परिणत कर दिया गया। अमीर पर्यटकों को विलासितापूर्ण सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए निजी क्षेत्र का सहयोग लिया गया। मोहन सिंह ओबेरॉय ने इस दिशा में पहल की और उन्होंने शिमला में क्लार्क होटल और कलकत्ता में ग्रैंड होटल की स्थापना की।

साठ के दशक के अंत में नागरिक उड्डयन से पर्यटन विभाग को अलग किया गया और प्रथम पर्यटन महानिदेशक एस.एन. चिब ने भारत की पर्यटन नीति को एक नई दिशा देने का कार्य आरंभ किया। उन्होंने भारत को छुट्टी बिताने की एक जगह के रूप में विकसित करने के लिए आधुनिक भारतीय पर्यटक उत्पादों की पहचान करनी शुरू की ताकि ज्यादा से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों की सहायता ली गई। परिणामस्वरूप गुलमर्ग स्काई रिसॉर्ट और कोवलम बीच रिसॉर्ट की स्थापना हुई। पुर्तगाल शासन से मुक्त होने के बाद गोवा के विकास के लिए निजी उद्यमियों को प्रोत्साहित किया गया। अभी भी पर्यटक भारत को छुट्टी बिताने की जगह के रूप में नहीं देखते और अभी भी उनके लिए दिल्ली-आगरा-जयपुर का स्वर्ण त्रिकोण (Golden Triangle) ही आकर्षण का प्रमुख केंद्र है।

हालांकि भारत अभी तक विश्व बाजार के प्रतियोगी के रूप में नहीं उभर सका है परंतु कश्मीर की अनूठी हाउस बोट संस्कृति और भारत का इतिहास और धर्म प्राच्यवादियों को अभी भी आकृष्ट करता है।

भारत में भी भ्रमण व्यापार अब सक्रिय हो गया है। इंद्र शर्मा द्वारा स्थापित सीटा (SITA) वर्ल्ड ट्रैवेल्स ने भारत आगमन के लिए पैकेज टूर बनाना शुरू किया और आज भ्रमण और यात्रा के क्षेत्र में यह प्रमुख स्थान रखती है। इसके कार्यालय देश के सभी हिस्सों में स्थित हैं। ट्रैवेल एजेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (TAAI), इंडियन एसोसिएशन आफ टूर आपरेटर्स (IATO) आदि संगठनों की भी प्रमुख भूमिका रही है। इसके बावजूद केवल 20% अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक ही भारत भ्रमण के लिए आते हैं। इससे स्पष्ट है तो हमारे देश में अभी पर्यटन को कई मंजिलें तय करनी हैं।

1980 के दशक में पर्यटन को नागरिक उड्डयन मंत्रालय से अलग कर दिया। इससे इसके बढ़ते महत्व का पता चलता है। पर्यटन अधिसंरचना को मजबूत बनाने और पूरे देश के पर्यटन स्थलों में आवासीय और परिवहन सुविधा उपलब्ध कराने के लिए राज्य पर्यटन विकास निगमों की स्थापना की गई। राज्य की पर्यटन नीति के निर्धारण के लिए लगभग प्रत्येक राज्य में पर्यटन विभागों की स्थापना की गई।

1980 तक आते-आते भारतीय पर्यटन नीति में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन का महत्व पहचान लिया गया परंतु अभी तक 10 लाख पर्यटक का लक्ष्य पूरा नहीं किया जा सका। परंतु दूसरी ओर घरेलू पर्यटन, जिसका एक सामाजिक उद्देश्य भी है, के कई आयाम विकसित हुए और इसकी संख्या चार करोड़ तक पहुंच गई। राज्यों से आंकड़े प्राप्त करने का एक छोटा-सा प्रयास किया गया परंतु पर्यटन विकास में घरेलू पर्यटन को कभी भी प्रमुखता नहीं दी गई। इन वर्षों में हमारा देश लगातार भुगतान संतुलन की समस्या से जूझ रहा था, विदेशी पर्यटन पर विशेष बल दिया जाता रहा।

1990 में 10 लाख का लक्ष्य पूरा किया गया परंतु अब तक हम इसके आगे नहीं बढ़ सके हैं। 1992 में एक महत्वाकांक्षी योजना बनाई गई है जिसका लक्ष्य अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारत का हिस्सा दोगुना अर्थात् 0.50 से बढ़ाकर 1% करना है। इसके लिए वर्गीकृत आवासीय क्षेत्र की क्षमता दोगुनी करनी होगी अर्थात् 80,000 कमरों की व्यवस्था करनी होगी और वायु परिवहन और चार्टर फ्लाइटों में मुक्ताकाश (Open Sky) नीति अपनानी होगी। देश के प्रमुख पर्यटन केंद्रों में पुरातनता और आधुनिकता का सामंजस्य स्थापित कर उसे आकर्षित बनाया जा रहा है। रोमांचकारी खेल कूद, मेले और उत्सवों और गोल्फ के साथ परंपरागत सांस्कृतिक आकर्षणों को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। 1992 को पर्यटन वर्ष के रूप में मनाया गया। पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया और पर्यटन के विकास में निजी निवेश को प्रोत्साहित किया गया। 1980 के दशक में पर्यटन शिक्षा और प्रशिक्षण पर बल दिया गया। पर्यटन मंत्रालय में काम करने वाले। पर्यटन प्रशासकों को प्रशिक्षित करने के लिए फूड क्राफ्ट एंड होटल मैनेजमेंट स्कूल और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म एंड ट्रैवेल मैनेजमेंट (अब यह ग्वालियर में है) की स्थापना की गई। कई* विश्वविद्यालयों में व्यवहारोन्मुख पाठ्यक्रम शुरू किए गए और पर्यटन अध्ययन में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और स्नातक स्तर की उपाधियां दी जाने लगीं।

बोध प्रश्न 6

1) आई.टी.डी.सी. की स्थापना क्यों की गई?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन की राष्ट्रीय कार्य योजना का लक्ष्य क्या था?

.....

.....

.....

.....

.....

12.12 सारांश

पर्यटन इतिहास का विकास मुख्य रूप से आरंभिक काल के अप्रत्यक्ष स्रोतों के आधार पर किया गया। 20वीं शताब्दी के बाद ही प्रत्यक्ष रूप से पर्यटन संबंधी आंकड़े और सूचनाएं प्राप्त करने का काम शुरू हुआ।

प्राक-आधुनिक काल में पर्यटन यातायात के विकास में व्यापार और तीर्थाटन ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। आधुनिक तकनीक, बढ़ती आय और आधुनिक उद्यमशीलता के साथ आधुनिक पर्यटन का जन्म हुआ।

12.13 शब्दावली

यूरोप केंद्रित : यरोपीय विचारों, विश्वासों और दृष्टिकोण आदि के आधार पर दुनिया को देखना।

आंतरिक इलाके : शहर और भीड़-भाड़ से दूर स्थान जहां लोग जाकर रहना चाहते हैं। बाज़ार की उपलब्धता या कच्चे माल की आपूर्ति की वजह से ऐसा किया गया।

छुट्टी पद्धति : समाज के विभिन्न वर्गों में अवकाश या छुट्टी बिताने का तरीका।

वैचारिक झुकाव : एक प्रकार या अन्य प्रकार का विश्व दृष्टिकोण।

सामुद्रिक : समुद्र की गतिविधियों से जुड़ा।

12.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 12.3.1 लोगों के आवागमन (संख्या), वर्ष और गंतव्य स्थलों के ब्यौरे प्राप्त करने में सुविधा होती है।

2) देखिए भाग 12.1

3) देखिए भाग 12.2 आप बताएं कि एक खास काल में और एक खास समय में पर्यटन की परिघटना के अध्ययन में यह कितना महत्वपूर्ण है।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 12.4 आप यहां विश्व के विभिन्न धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष स्रोतों का विवेचन कीजिए।

2) देखिए भाग 12.4 और 12.5 तीर्थ यात्रियों के रास्तों और मार्गों के विकास और नदी या समुद्र के किनारे शहरी केंद्रों के उदय का जिक्र कीजिए।

बोध प्रश्न 3

1) देखिए उपभाग 12.6.3 आज व्यापार के विकास और थल मार्गों, मुद्रा, त्यौहारों, संस्कृति और मेजबान तथा गाइड सुविधाओं का उल्लेख कर सकते हैं।

2) i) √; ii) x; iii) x; iv) √

3) उपभाग 12.6.5 देखें। आप उन सुविधाओं का उल्लेख कर सकते हैं जिनकी व्यवस्था यात्रियों के लिए की जाती थी।

बोध प्रश्न 4

1) देखिए भाग 12.8 आप इस तथ्य का उल्लेख कीजिए कि तीर्थयात्रा सांसारिक और अलौकिक सुख प्राप्ति का एक जरिया रहा है।

2) देखिए भाग 12.7 व्यापार, नए विचारों और तकनीकी के विकास और यात्रियों को पर्यटक के रूप में बदलने में रेशम मार्ग की भूमिका का उल्लेख करना अपेक्षित है।

बोध प्रश्न 5

1) देखिए उपभाग 12.9 संस्कृति, शिक्षा और सुख की प्राप्ति के लिए अमीर लोगों द्वारा की गई पश्चिमी यूरोप की पूरी यात्रा को "ग्रैंड टूर" या शानदार यात्रा के नाम से जाना जाता है!

2) देखिए उपभाग 12.10 प्राच्यवादियों के दृष्टिकोण, अंग्रेजों पर अपने भारतीय राज के युग की याद आदि से प्रेरित होकर सार्जेंट ने अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन की संभावनाएं देखीं।

3) देखिए भाग 12.10

बोध प्रश्न 6

1) देखिए भाग 12.11 आप यहां बताएं कि अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन की देखरेख करने के लिए आई.टी.डी.सी. की स्थापना की गई।

2) देखिए भाग 12.11 आप यहां बता सकते हैं कि इस योजना के तहत पर्यटन को उद्योग का दर्जा देकर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अपना हिस्सा बढ़ाने और घरेलू बाजार को समृद्ध करने की कोशिश की जा रही है।

इकाई 13 एक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन का उद्‌भव

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 यात्रा और पर्यटन का मापन

13.3 ज्ञानानुशासन की समझ

13.4 ज्ञानानुशासन का उद्‌भव

13.5 ज्ञानानुशासन के मापदण्ड और विशेषताएँ

13.6 ज्ञानानुशासन और अन्य सम्बन्धित शब्द

13.7 पर्यटन अध्ययन के विभिन्न उपागम

13.8 अनुशासनिक उपागम

- 13.8.1 बहु-अनुशासनिक
- 13.8.2 अन्तर-अनुशासनिक
- 13.8.3 ट्रांस-अनुशासनिक
- 13.8.4 क्रॉस-अनुशासनिक

13.9 एक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन

- 13.9.1 एक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन पर विभिन्न दृष्टिकोण

13.10 सारांश

13.11 शब्दावली

13.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप इस योग्य हो जाएँगे कि आप :

- ज्ञानानुशासन का अर्थ समझ सकें;
- जान सकें कि ज्ञानानुशासन का उद्‌भव किस प्रकार हुआ है;
- ज्ञानानुशासन के मापदण्ड और विशेषताओं का वर्णन कर सकें;
- ज्ञानानुशासन से सम्बन्धित विभिन्न शब्दों से परिचित हो सकें;
- पर्यटन अध्ययन के विभिन्न उपागमों की पहचान कर सकें; और
- विभिन्न अनुशासनिक उपागमों को परिभाषित कर सकें।

13.1 प्रस्तावना

पर्यटन किसी विशेष समयावधि के लिए और किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए किसी व्यक्ति के अपने पर्यावरण से किसी दूसरे पर्यावरण में उस व्यक्ति के संचलन से सम्बन्धित एक सामाजिक-आर्थिक परिघटना है। पर्यटन की परिघटना फुर्सत और मनोरंजन से प्रत्यक्षतः

जुड़ी हुई है। फुर्सत का सम्बन्ध किसी व्यक्ति के पास उपलब्ध खाली समय से है या हम कह सकते हैं कि इसका सम्बन्ध "मन की एक अवस्था" से है जिसमें लोग सोचते हैं कि वे "फुर्सत" में हैं। मनोरंजन का सम्बन्ध फुर्सत के समय में सन्तोष और आनन्द के लिए किसी व्यक्ति द्वारा निष्पादित की जाने वाली गतिविधियों से है। यात्रा और पर्यटन की परिघटना को समझने के लिए मनोरंजन और फुर्सत से सम्बद्ध क्षेत्रों के साथ इसके सम्बन्ध को स्थापित किया जाना चाहिए। 'यात्रा और पर्यटन' को एक उद्योग का नाम भी दिया जाता है क्योंकि यह विभिन्न उत्पादों और सेवाओं का एक मिश्रण होता है। इनमें से कुछ वस्तुएँ और सेवाएँ मूर्त या वास्तविक रूप में होती हैं; जैसे – आवास, परिवहन, मनोरंजन, स्मृति-चिन्हों या उपहारों का उत्पादन आदि जबकि कुछ का रूप अमूर्त होता है; जैसे – स्मृतियाँ, अनुभव, सन्तोष और सामाजिक सम्पर्क आदि। यात्रा और पर्यटन कोई एक उद्योग नहीं है बल्कि यह उद्योगों का एक ऐसा समुच्चय (विशिष्ट उत्पाद या सेवा का उत्पादन करने वाली कम्पनियों का समूह) होता है जहाँ पर्यटकों की आवश्यकतानुसार उत्पादों और सेवाओं का उत्पादन करने की कोशिश की जाती है।

13.2 यात्रा और पर्यटन का मापन

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) तथा विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद (डब्ल्यूटीटीसी) वैश्विक स्तर पर यात्रा और पर्यटन की परिघटना को परिभाषित करने के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण अपनाते हैं। यात्रा और पर्यटन के मापन के लिए यूएनडब्ल्यूटीओ ने अपनी विधि (सूत्र) का विकास किया है जो पर्यटकों के आगमन और प्रस्थान की संख्या के आँकड़ों पर आधारित है और जिसे बाद में खर्च के साथ संयुक्त कर दिया जाता है ताकि आर्थिक प्रभाव का पता चल सके। दूसरी तरफ विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद (डब्ल्यूटीटीसी) किसी देश के लिए आर्थिक योगदान को मापने हेतु "पर्यटन उपग्रह गणना (टीएसए)" प्रक्रिया के प्रोत्साहन द्वारा पर्यटन व्यवसाय पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है। टीएसए दृष्टिकोण पर्यटन में विभिन्न आर्थिक गतिविधियों; जैसे – होटलों, रेस्तराँओं, यात्रा एजेंसियों, पर्यटन संचालकों, वायुयान सेवाओं आदि के योगदान का आकलन करता है। इन अलग-अलग दृष्टिकोणों के कारण एक परिघटना के रूप में यात्रा और पर्यटन की वास्तविक संस्कृति और उसके वास्तविक योगदान को समझना कठिन हो जाता है। "यात्रा और पर्यटन" में पर्यटन की परिघटना के सिद्धान्तीकरण के लिए आवश्यक एकीकृत अवधारणात्मक आधार का अभाव है। एक विषय और ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन का वर्णन करने के लिए विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग उपागमों और ढाँचों का प्रयोग किया है।

13.3 ज्ञानानुशासन की समझ

एक शब्द के रूप में ज्ञानानुशासन यानी "डिसिप्लिन" की उत्पत्ति लैटिन शब्द "Discipulus", जिसका अर्थ शिष्य है, और "Disciplina", जिसका अर्थ शिक्षण है, से हुई है। ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश इसे "सीखने की या ज्ञान की एक शाखा" के रूप में परिभाषित करता है।

एम. एस. यादव और टी. के. एस. लक्ष्मी (1995) के अनुसार, एक ज्ञानानुशासन अलग सामग्री और प्रविधि के साथ अध्ययन का एक विशिष्ट क्षेत्र अथवा ज्ञान की शाखा है। किसी विशिष्ट परिघटना की बेहतर समझ के लिए इसका एक विशिष्ट परिप्रेक्ष्य होता है। यह ज्ञान के आधार (मानवीय समझ के सकल योग) से उद्‌भूत होता है किन्तु आगे चलकर और अधिक विभेदीकरण, विविधीकरण व विशेषीकरण के कारण इसे सामग्री और प्रविधियों के अलग-अलग रूपों में सूत्रबद्ध कर लिया जाता है।

जे. बेयेर और टी. लोडहल (1976) "ज्ञानानुशासन (डिसिप्लिन)" का वर्णन संकाय को ज्ञान की विशिष्ट संरचना उपलब्ध कराने वाले एक ऐसे क्षेत्र के रूप में करते हैं जिसमें वे प्रशिक्षित और समाजीकृत होते हैं। संकाय शिक्षण, अनुसंधान, शिक्षा और प्रशासन से सम्बन्धित विभिन्न कार्यों को निष्पादित करता है। यह विशिष्ट और अलग संस्कृतियों को उपलब्ध कराता है, विद्यार्थियों के अनुरूप व्यवहारों को प्रभावित करता है और उच्च शिक्षा की संरचना को निर्धारित करता है। ज्ञानानुशासन प्रेरणाओं को स्थापित करते हैं, किसी विषयवस्तु के लिए सहयोग के रूपों को निर्धारित करते हैं और इसकी समस्याओं को सम्बोधित करते हैं। ज्ञानानुशासन किसी संस्थागत इकाई के अन्तर्गत संचालित होने वाले विद्यालय या विभाग के लक्ष्यों को भी निर्धारित करता है। डोगन (2001) "ज्ञानानुशासन (डिसिप्लिन)" का वर्णन "ज्ञान के प्रसार के लिए निर्देश की एक शाखा" के रूप में करते हैं।

ज्ञानानुशासन को "आचरण के नियमों या व्यवहार की विधि की एक व्यवस्था" के रूप में भी परिभाषित किया गया है। जॉन वाल्टन (1963) का मत है कि ज्ञानानुशासन संकल्पनाओं, तथ्यों और सिद्धान्तों की एक विशिष्ट व्यवस्था से युक्त विषयवस्तु का एक निकाय है जिसे पढ़ाया जा सकता है।

कुन के अनुसार, एक ज्ञानानुशासन में निम्नलिखित चीजों का समावेश अवश्य होना चाहिए:

1) अतीत की वैज्ञानिक उपलब्धियाँ
2) समाज द्वारा स्वीकृति
3) क्षेत्र अद्वितीय अवश्य होना चाहिए
4) प्रारम्भिक विद्यार्थियों (विद्यालयी स्तर) के उपयोग हेतु प्रकाशित पाठ्यपुस्तकें।

अलग-अलग विद्वानों ने "ज्ञानानुशासन" की अपनी-अपनी परिभाषाएँ दी हैं लेकिन अकादमिक अर्थ में इसका तात्पर्य ज्ञान या अध्ययन के एक विशिष्ट क्षेत्र से है, जिसे महाविद्यालयी या विश्वविद्यालयी स्तर पर पढ़ाया जाता है।

13.4 ज्ञानानुशासन का उद्‌भव

ज्ञानानुशासन के इतिहास के उद्‌भव का पता लगाना बहुत कठिन है क्योंकि यह सामाजिक उद्‌भव से सम्बन्धित है। पर्यावरण और समाज से सम्बन्धित मानवीय समझ का विकास किसी विशिष्ट निर्धारित समयावधि में किसी विशिष्ट ज्ञानानुशासन के उद्‌भव का आधार होता है। यह ज्ञान की किसी शाखा से सम्बन्धित विशेषीकरण के विचार से प्रभावित होता है।

ज्ञानानुशासनों के अभिधानों का उद्‌भव उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जर्मन विश्वविद्यालयों में हुआ। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में शिक्षाशास्त्र और मनोविज्ञान को दो नवीन ज्ञानानुशासनों के रूप में जोड़ा गया।

नारी अध्ययन, अफ्रीकी अध्ययन और मीडिया अध्ययन जैसी विशिष्ट विषयवस्तुओं पर अनुसन्धानकर्ताओं के ध्यान-केन्द्रित दृष्टिकोण के कारण 1970 और 1980 के दशक में बहुत सारे अकादमिक ज्ञानानुशासन उभरे। आतिथ्य प्रबन्धन, उपचर्या (नर्सिंग) और अस्पताल प्रबन्धन जैसे अनेक ज्ञानानुशासनों का उभार व्यवसाय और करियर के दृष्टिकोण के कारण हुआ और बाद में भू-भौतिकी, जैव-रसायन, बॉयो-टेक्नोलॉजी, नैनो-भौतिकी जैसे अनेक अन्तर-अनुशासनिक ज्ञानानुशासन सामने आए।

ज्ञानानुशासन इस सम्बन्ध में सीमाएँ उत्पन्न करता है कि किस पर विचार किया जाए और किस पर विचार न किया जाए; और यह विशेषीकरण प्रक्रिया के साथ आगे बढ़ता है। इसे निम्नलिखित प्रक्रिया द्वारा समझा जा सकता है :

तालिका : ज्ञानानुशासन की रचना

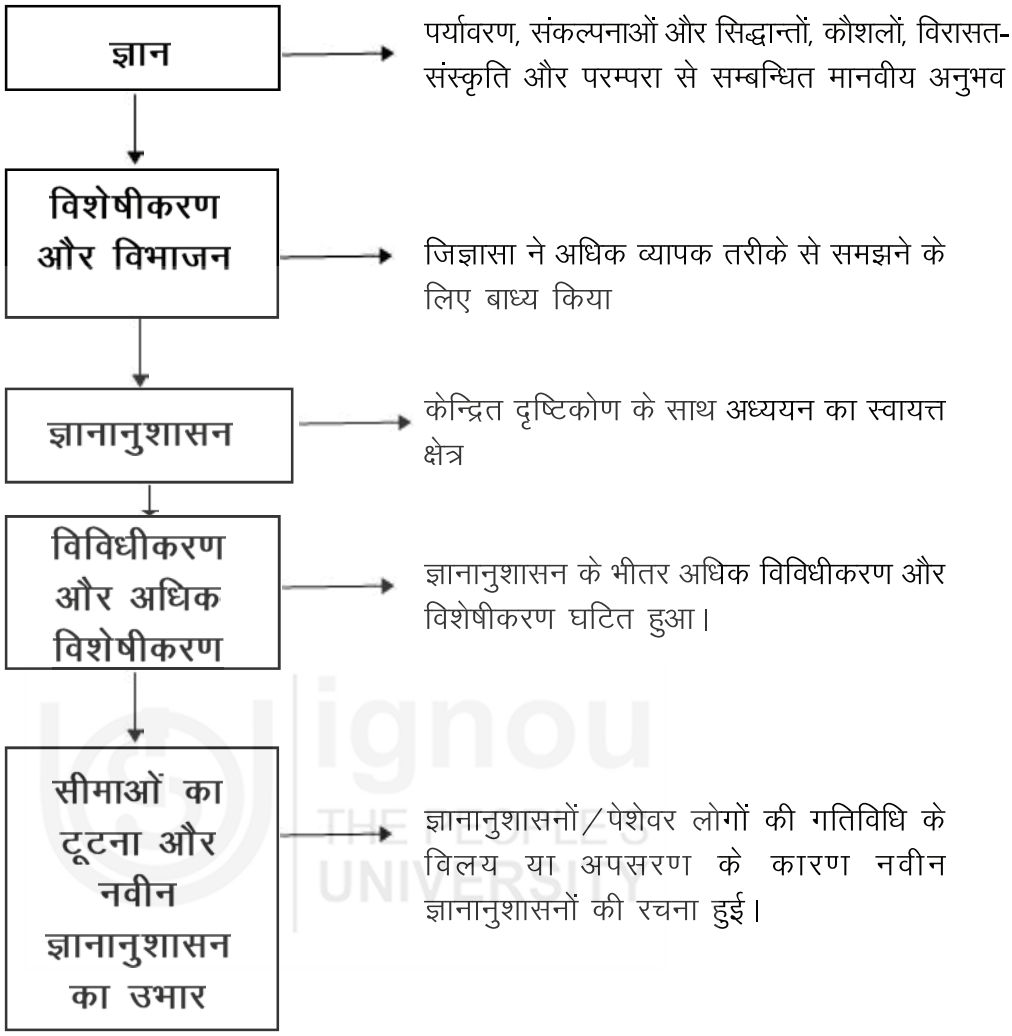

नवीन ज्ञानानुशासनों की रचना ज्ञान की दो या दो से अधिक शाखाओं का विलय करके की जा सकती है; जैसे - जैव-रसायन। कभी-कभार अनुप्रयोगात्मक दृष्टिकोण अध्ययन के एक नवीन और स्वतन्त्र क्षेत्र को उत्पन्न कर देता है। जब कुछ स्थापित ज्ञानानुशासन विचारों के दोतरफा प्रवाह के साथ अपसरित होते हैं तो अन्तर-अनुशासनिक ज्ञानानुशासनों की रचना होती है।

ज्ञानानुशासन के विकास का अध्ययन निम्नलिखित चरणों के द्वारा किया जा सकता है :

1) अवधारणात्मक आधार का उभार होता है जो आलोचनात्मक परीक्षण के लिए बौद्धिक आधार और अन्वेषण के उपकरण उपलब्ध कराता है।
2) विचार प्रतिबद्धता और स्वामित्व का आकार ग्रहण कर लेते हैं।
3) संस्थात्मक संरचना उभरती है और शिक्षण शुरू हो जाता है।
4) प्रतिबद्ध विद्वान नवीन ज्ञान का विकास करते हैं।
5) विद्वानों का पेशेवर निकाय और संकाय का व्यवसायीकरण (Professionalization)।
6) नए ज्ञानानुशासन के लिए संस्था आधारिक संरचना, प्रेरणा और पर्यावरण उपलब्ध कराती है।

7) अकादमिक विभागों, पारितोषिकों, जर्नलों, पत्रिकाओं, संघों/समुदायों का सृजन।

13.5 ज्ञानानुशासन के मापदण्ड और विशेषताएँ

आमतौर पर किसी ज्ञानानुशासन की पहचान संस्थागत स्तर पर पढ़ाए जाने वाले एक विषय के रूप में की जाती है लेकिन विश्वविद्यालयी स्तर पर पढ़ाए जाने वाले प्रत्येक विषय को ज्ञानानुशासन नहीं कहा जा सकता। ज्ञानानुशासन के कुछ मापदण्ड और विशेषताएँ होती हैं जिन्हें नीचे सूचीबद्ध किया गया है :

क) इसके पास अनुसन्धान की कोई विशिष्ट चीज; जैसे – पर्यावरण, राजनीति, कानून, समाज आदि होती है जिसे अन्य ज्ञानानुशासन के साथ साझा किया जा सकता है।

ख) इसके पास संचित विशेषीकृत ज्ञान का निकाय होता है जो विशिष्ट होता है जिसे क्षेत्र अनुसन्धान से व्युत्पन्न किया जाता है। अनुसन्धान के विशिष्ट परिणामों को आमतौर पर अन्य ज्ञानानुशासनों के साथ साझा नहीं किया जाता।

ग) इसके पास विशिष्ट संकल्पनाएँ और सिद्धान्त होते हैं।

घ) इसके पास विशिष्ट तकनीकी भाषा (विशिष्ट शब्दावली) होती है जो उनके अनुसन्धान की चीज के साथ समायोजित होती है।

ङ) अपनी विशिष्ट अनुसन्धान आवश्यकताओं के अनुरूप इसमें विशिष्ट अनुसन्धान प्रविधियों का विकास हो चुका होता है।

च) पढ़ाए जाने वाले विषयों के रूप में, सम्बन्धित अकादमिक विभागों में, इसकी संस्थात्मक उपस्थिति होती है तथा इसके पास सम्बद्ध पेशेवर संघ होते हैं।

लेकिन यह भी एक सत्य है कि सभी ज्ञानानुशासनों में उपरोक्त वर्णित सभी विशेषताएँ नहीं होतीं (जैसे अंग्रेजी में) और तब भी उन्हें ज्ञानानुशासन कहा जाता है।

बोध प्रश्न 1

1) "ज्ञानानुशासन (डिसिप्लिन)" से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) एक ज्ञानानुशासन का विकास किस प्रकार होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) एक ज्ञानानुशासन की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

13.6 ज्ञानानुशासन और अन्य सम्बन्धित शब्द

ज्ञानानुशासन शब्द अध्ययन, क्षेत्र, विषय या विभाग जैसे शब्दों से भी जुड़ा हुआ है। इन शब्दावलियों में बहुत सूक्ष्म अन्तर है और ज्ञानानुशासन को समझने के लिए शिक्षार्थियों को इन अन्तरों को समझना चाहिए।

अध्ययन (स्टडी) : अध्ययन में सिद्धान्त और विशिष्ट अनुसन्धान प्रविधि का अभाव होता है। यह इंगित करता है कि अध्ययन की उत्पत्ति बाद में हुई है और सम्भव है कि यह एक ज्ञानानुशासन की सभी विशेषताओं को धारण न करता हो।

विषय : ज्ञानानुशासन की तुलना में "विषय" का क्षेत्र बहुत कम होता है। विषय का सम्बन्ध किसी पाठ्यक्रम के लिए विशिष्ट रूप से परिभाषित ज्ञान की विशिष्ट शाखा से होता है। ज्ञानानुशासन ज्ञान की एक शाखा है; जिसमें विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु सम्मिलित होती है। उदाहरण के लिए, यात्रा और पर्यटन एक ज्ञानानुशासन है तथा पर्यटन का इतिहास, पर्यटन के प्रभाव, विरासत पर्यटन प्रबन्धन, पारिस्थितिकीय पर्यटन, पर्यटन नियोजन, वायुयानों के किराये और टिकट कराना आदि विभिन्न प्रकार के विषय हैं।

विभाग : यह किसी अकादमिक संस्थान, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में एक शाखा या विभाग होता है। प्रत्येक विभाग किसी विशिष्ट ज्ञानानुशासन से सम्बन्धित या उसे समर्पित होता है। विभागों का सरोकार किसी विशिष्ट कार्य या अध्ययन क्षेत्र से होता है। उदाहरण के लिए, पर्यटन विभाग, भूगोल विभाग, विज्ञान विभाग, इतिहास विभाग आदि कुछ ऐसे विभागों के नाम हैं जिन्हें शिक्षार्थीगण किसी भी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में देख सकते हैं।

13.7 पर्यटन अध्ययन के विभिन्न उपागम

यात्रा और पर्यटन एक बहुआयामी विषय है जिसमें विभिन्न गतिविधियों के साथ की जाने वाली अन्तरक्रियाएँ शामिल होती हैं। इसकी बुनियादी प्रकृति सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत इसकी एक जैसी परिभाषा गढ़ने में बाधाएँ खड़ी करती है और इसका परिणाम यह हुआ है कि एक ज्ञानानुशासन के रूप में यात्रा और पर्यटन का अध्ययन बाधाग्रस्त रहा है। यह एक सार्वभौमिक तथ्य है कि किसी क्षेत्र का विकास निम्नलिखित बिन्दुओं पर निर्भर करता है (मैकिण्टोश, गोएल्डनर और रिची 1995) :

क) सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत (सार्वभौमिक) परिभाषाएँ

ख) वर्णन

ग) विश्लेषण

घ) भविष्यवाणी, और

ङ) नियन्त्रण

मैकिण्टोश, गोएल्डनर और रिची ने पर्यटन के अध्ययन के लिए विभिन्न बुनियादी उपागमों का वर्णन किया है। विभिन्न उपागम तथा उनके लक्षण और विशेषताएँ निम्नलिखित सारणी में वर्णित हैं :

क्र. सं.	पर्यटन के अध्ययन के लिए उपागम का नाम	लक्षण और विशेषताएँ
1	ऐतिहासिक उपागम	- उद्‌भवपरक दृष्टिकोण से पर्यटन का विश्लेषण - नवाचारों, संवृद्धि, पतन, रुचियों के परिवर्तन आदि के कारणों की खोज करता है। - सीमित उपयोगिता - व्यापक रूप से प्रयुक्त नहीं होता
2	संस्थात्मक उपागम	- मध्यस्थों और संस्थाओं (पर्यटन) का अध्ययन; संगठनों, प्रविधि, लागत, समस्याओं, अर्थशास्त्र, ग्राहक, खरीद, वायुयान सेवाओं, कार कम्पनियों, आवासों आदि का अन्वेषण। - इस उपागम के आधार पर कुछ देश सर्वेक्षण कराते हैं और आगे किए जाने वाले अनुसन्धानों के लिए डेटाबेस तैयार करते हैं।
3	उत्पाद उपागम	- पर्यटन, उत्पाद की रचना, खपत और विपणन आदि का अध्ययन - क्षेत्र का सम्पूर्ण चित्र उत्पन्न किया जा सकता है। - इसमें बहुत अधिक समय खर्च होता है। - बुनियादी चीजों को समझने में कठिनाई।
4	भौगोलिक उपागम	- पर्यटन स्थलों, पर्यावरण, भू-दृश्य, जलवायु, अर्थव्यवस्था, भूमि-उपयोग आदि का अध्ययन। - प्रभाव और समस्याओं का अध्ययन (आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक) - भूगोल का पर्यटन से सीधा सम्बन्ध है।
5	समाजशास्त्रीय उपागम	- एक सामाजिक गतिविधि के रूप में पर्यटन का अध्ययन - व्यक्ति और समूह के व्यवहार का विश्लेषण, समाज पर प्रभाव - आदतों, प्रथाओं, सामाजिक वर्गों आदि का परीक्षण करता है
6	आर्थिक उपागम	- माँग, आपूर्ति, भुगतान शेष, विदेशी विनिमय, खर्च, लागत, लाभ, रोजगार, विकास, बहुगुणकों आदि पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है।

		- किसी देश के लिए पर्यटन के योगदान के अध्ययन के लिए एक ढाँचा प्रदान करता है। - गैर-आर्थिक प्रभावों को सम्बोधित नहीं किया जाता। - नृ-वैज्ञानिक, सामाजिक-तार्किक, पर्यावरणीय, सांस्कृतिक उपागमों पर कोई ध्यान नहीं देता।
7	प्रबन्धकीय उपागम	- यह उपागम कम्पनी-केन्द्रित होता है। - नियोजन, संगठन, दिशा, नियन्त्रण, कर्मचारी-स्थापन, मूल्य-निर्धारण और विज्ञापन जैसी प्रबन्धकीय गतिविधियों पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है। - परिवर्तनों का अध्ययन करता है। - यह एक लोकप्रिय उपागम है।
8	अन्तर-अनुशासनिक उपागम	- पर्यटन के अध्ययन के लिए बहुत सारे अलग-अलग उपागमों का सम्मिश्रण। - समाजशास्त्रीय, भौगोलिक, अर्थशास्त्रीय उपागमों के साथ-साथ नृ-वैज्ञानिक उपागम (सांस्कृतिक पर्यटन), मनोवैज्ञानिक उपागम (कारण और उपाय), राजनीति विज्ञान उपागम (सीमापार, वीजा, पासपोर्ट), विधिक उपागम (कानून), यात्री परिवहन उपागम का अध्ययन। - व्यापक रूप से स्वीकृत उपागम।
9	व्यवस्था उपागम	- व्यवस्था अंतर्संबन्धित, समन्वित समूह का एक समुच्चय है। - अन्य उपागमों का एकीकरण। - प्रतियोगी पर्यावरण, बाजार परिणामों, संस्था के सम्पर्कों, उपभोक्ताओं और इनकी अन्तरक्रिया का परीक्षण करता है। - यह किसी राज्य की सम्पूर्ण पर्यटन व्यवस्था का परीक्षण कर सकता है।

पर्यटन सबसे बड़े उद्योगों में से एक है जिसमें यात्रा के विभिन्न मध्यवर्ती स्तरों पर लाखों लोगों को रोजगार मिला हुआ है। अधिकांश विश्वविद्यालय अब यात्रा और पर्यटन प्रबन्धन पर पाठ्यक्रम उपलब्ध करा रहे हैं।

बोध प्रश्न 2

1) ज्ञानानुशासन विषय, अध्ययन और विभाग से किस प्रकार सम्बन्धित है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन अध्ययन के विभिन्न उपागमों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) पर्यटन के अध्ययन के लिए कौन-सा उपागम सर्वश्रेष्ठ है? कारण बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

13.8 अनुशासनिक उपागम

अनेक विद्वानों की राय है कि नए ज्ञानानुशासनों की रचना के लिए बहु-अनुशासनिक, अन्तर-अनुशासनिक, ट्रांस-अनुशासनिक और क्रॉस-अनुशासनिक जैसे विभिन्न उपागम उत्तरदायी होते हैं। आइए संक्षेप में इन शब्दावलियों की विशेषताओं को परिभाषित करते हैं।

13.8.1 बहु–अनुशासनिक

- यहाँ विभिन्न अकादमिक ज्ञानानुशासनों/ पेशों से अनुसन्धानकर्ता एक मंच पर आते हैं और साथ-साथ कार्य करते हैं।
- कोई अनुसन्धानकर्ता दो या दो से अधिक ज्ञानानुशासनों की डिग्रियों का धारक हो सकता है।
- प्रश्न उपभागों में विखण्डित होता है और विभिन्न ज्ञानानुशासनों के माध्यम से अध्ययन होता है।
- भविष्य के लिए नवाचारों को प्रोत्साहित किया जाता है।
- उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य-देखभाल।

13.8.2 अन्तर-अनुशासनिक

- प्रत्येक अनुसन्धानकर्ता अन्य ज्ञानानुशासनों (एक या एक से अधिक अन्य ज्ञानानुशासनों) की सामग्री/उपकरण, अवधारणा, सिद्धान्त, ज्ञान, अनुसन्धान, शिक्षा, विचारों आदि का उपयोग करता है।
- अनुसन्धान किसी विशिष्ट अभियान या लक्ष्य की तरफ निर्देशित होता है।

- सीमाओं के आर-पार चिन्तन करते हुए अनुसन्धानकर्ता किसी नयी चीज का सृजन करने की कोशिश करता है।
- दो या दो से अधिक ज्ञानानुशासनों (ज्ञान की एकता) का संयोजन।
- उदाहरण के लिए, महिला अध्ययन, नैनो-टेक्नोलॉजी, सम्पोषणीय विकास, बायो-टेक्नोलॉजी, जैव-रसायन, जैवचिकित्सकीय अभियान्त्रिकी, न्यूरोसाइंस, साइबरनेटिक्स आदि।

13.8.3 ट्रांस-अनुशासनिक

- यहाँ समस्त अन्तर-अनुशासनिक कार्य का एकीकरण घटित होता है।
- अनुसन्धानकर्ता टीम अधिक समग्रतावादी होती है और समस्त ज्ञानानुशासनों को एक सुसंगत समग्रता में सम्बन्धित करती है।
- अनुसन्धान समग्रतावादी उपागम के सृजन के लिए अनेक ज्ञानानुशासनात्मक सीमाओं को लाँघ जाता है।
- एक ज्ञानानुशासन (मूल रूप से) द्वारा विकसित संकल्पनाओं और विधियों का उपयोग कुछ अन्य ज्ञानानुशासनों द्वारा किया जाता है।
- अनुसन्धानकर्ता खुली बातचीत और चर्चा में अन्तरक्रिया करता है तथा प्रत्येक परिप्रेक्ष्य को समान महत्व प्रदान किया जाता है।
- उदाहरण के लिए, एथनोग्राफी, बायो-इनफॉर्मेटिक्स।

13.8.4 क्रॉस-अनुशासनिक

- यहाँ अनुसन्धानकर्ता अन्य ज्ञानानुशासनों की सहायता से किसी ज्ञानानुशासन के पहलुओं की व्याख्या करता है।
- उदाहरण के लिए, साहित्यिक राजनीति, संगीत का भौतिकशास्त्र आदि।

13.9 एक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन

यह एक स्थापित तथ्य है कि नए ज्ञानानुशासन के सृजन का सम्बन्ध अध्ययन के एक ऐसे नए क्षेत्र को परिभाषित करने से है जिसमें नए मुद्दे हों, मौलिक उद्देश्य हों, अध्ययन की सुपरिभाषित सीमा हो, विशिष्ट अनुसन्धान प्रविधि हो और अन्य ज्ञानानुशासनों के साथ उसके सम्बन्ध का संकेत हो।

यात्रा और पर्यटन के मामले में, पर्यटन की शब्दावली की परिभाषा सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत नहीं है क्योंकि इसकी जड़ें विभिन्न सामाजिक और प्राकृतिक ज्ञानानुशासनों में निहित रही हैं। यहाँ अकादमिक ज्ञानानुशासन का विषय संचलन करने वाला एक "व्यक्ति" होता है तथा अध्ययन का क्षेत्र "समय, स्थल और अन्तरिक्ष" के अतिरिक्त प्रभाव और परिणाम भी होता है। इस विचार की सीमा बहुत विस्तृत और बहुमुखी है। सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक क्षेत्र से यात्रा और पर्यटन की परिघटना को अलग करना बहुत ही कठिन है। इसी वजह से, समकालीन दौर में पर्यटन अनुसन्धान बहुआयामी है जहाँ बहुत सारे अकादमिक ज्ञानानुशासन इसकी परिधि के भीतर आ जाते हैं।

13.9.1 एक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन पर विभिन्न दृष्टिकोण

कुछ विद्वानों ने लिखा है कि एक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन का सृजन अन्य अकादमिक ज्ञानानुशासनों के अनुसन्धानकर्ताओं द्वारा निष्पादित किए गए समस्त पर्यटन अनुसन्धान के परिणामों को एकीकृत करके किया जा सकता है। लेकिन पर्यटन के ऐसे सामान्य सिद्धान्त के निर्माण में यह विचार सहायक नहीं है, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत हो। बहुत सारे विद्वानों का कहना है कि एक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन इस अर्थ में बहु-अनुशासनिक है क्योंकि यहाँ वस्तुओं, अनुसन्धान विधियों और सैद्धान्तिक उपकरणों का बहु-अनुशासनिक हस्तक्षेप शामिल है। कुछ विद्वानों का कहना है कि एक ज्ञानानुशासन के रूप में यह अपरिपक्व है और अभी इसका विकास ही हो रहा है क्योंकि इसके सिद्धान्त खंडीकृत और कमजोर हैं।

लीपर (1979, 1981) प्रथम अनुसन्धानकर्ता थे जिसने एक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन की वकालत की। साहित्य दर्शाता है कि अनुसन्धानकर्ताओं में इस बात को लेकर मतभेद है कि पर्यटन क्या एक ज्ञानानुशासन है या एक अध्ययन है या एक क्षेत्र है या फिर यह सिर्फ एक अकादमिक समुदाय भर ही है। यह एक तथ्य है कि यात्रा और पर्यटन को 1990 के दशक तक अनुसन्धान का एक क्षेत्र नहीं माना जाता था और इसे अनुसन्धान के एक क्षेत्र के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता था। अध्ययन के एक क्षेत्र के रूप में यह अकादमिक जगत में नया ही जुड़ा है। एक अध्ययन के रूप में पर्यटन का प्रचार मैथिएसन और वाल, फ्रैंकलिन और क्रैंग, रेयान, किम, सैवेज, होवे, हूफ और स्क्विर द्वारा किया गया। मैथ्यूज और रिचर ने कहा है कि पर्यटन की सीमाएँ सुपरिभाषित नहीं हैं और यहाँ सामाजिक विज्ञान (राजनीति विज्ञान) के साथ अतिव्याप्ति उपस्थित है। उन बिन्दुओं को खोजना बहुत कठिन है जहाँ एक का प्रारम्भ और दूसरे का समापन होता है; इसीलिए पर्यटन राजनीति विज्ञान का एक उप-अनुशासन ही है, न कि कोई अलग अकादमिक ज्ञानानुशासन।

बहुत सारे विद्वानों ने सिद्ध किया है कि पर्यटन एक बहु-अनुशासनिक विषय है जिसमें विभिन्न ज्ञानानुशासनों के संयुक्त अकादमिक अनुसन्धान शामिल हैं। इसका अनुसन्धान भी यात्रा और पर्यटन साहित्य के दायरे से बाहर ही निष्पादित और प्रकाशित किया जाता है। अनेक अकादमिक लोगों ने पर्यटन को एक अध्ययन-क्षेत्र के रूप में तो स्वीकार किया है लेकिन इसे अलग या स्वतन्त्र या अकेली अकादमिक इकाई के रूप में नहीं माना है।

एम. जानसेन-वरबेके, बेचर और ट्राइब पर्यटन को एक अकादमिक समुदाय के रूप में मानते हैं, न कि एक ज्ञानानुशासन के रूप में। लेकिन लीपर और जोविसिक (Jovicic) एक अलग ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन को स्थापित करने के लिए तर्क देते हैं तथा इसके लिए जोविसिक ने "टूरिज्मोलॉजी (Tourismology)" और लीपर ने "टूरोलॉजी (Tourology)" शब्द दिया है।

जोविसिक का मत है कि पर्यटन अनुसन्धान खंडीकृत है और इसे भलीभाँति व्यस्थित एक ज्ञानानुशासन बनाने के लिए अनुसन्धानकर्ता को बहुत कठोर परिश्रम करना चाहिए। एचनर और जमाल कहते हैं कि एक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन अभी प्रारम्भिक अवस्था में है।

ट्राइब ने सुझाव दिया है कि किसी ज्ञानानुशासन के पास सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत परिभाषा अवश्य होनी चाहिए। कोलक्विट और जपाटा ने कहा है कि किसी ज्ञानानुशासन के पास अपने अद्वितीय सिद्धान्त अवश्य होने चाहिए। वर्तमान में पर्यटन के क्षेत्र ने अनेक स्थापित ज्ञानानुशासनों से विभिन्न सिद्धान्त उधार लिए हैं; जैसे – नृ-विज्ञान से, भूगोल से, समाजशास्त्र से, मनोविज्ञान से, दर्शनशास्त्र से, कानून से, राजनीति विज्ञानों और अर्थशास्त्र से।

जमाल ने कहा है कि लेखक अपनी रुचि के क्षेत्र के रूप में पर्यटन को समझ रहे हैं; उदाहरण के लिए, पर्यटन का अध्ययन जॉन उरी समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से कर रहे हैं और डीन मैक्कानेल भूदृश्य स्थापत्य के दृष्टिकोण से। वे आनुभविक आँकड़ों का प्रकाशन तो कर रहे हैं लेकिन वे अपने प्राथमिक क्षेत्रों से उनकी संलग्नता बनी हुई है।

गोएल्डनर (1988) ने उल्लेख किया है कि एक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन अभी अपने निर्माण की अवस्था में ही है और व्यवसाय प्रशासन के समानान्तर चल रहा है। गिल्बर्ट और वानहिल, फ्लेचर, कूपर आदि का मत है कि पर्यटन अध्ययन का एक क्षेत्र ही है और एक ज्ञानानुशासन नहीं है क्योंकि इसमें सैद्धान्तिक निर्माण का अभाव है।

लीपर ने "पर्यटन व्यवस्था" के रूप में "पर्यटन का सामान्य सिद्धान्त" प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस व्यवस्था में निम्नलिखित चीजें शामिल हैं :

- पर्यटक
- क्षेत्र (Region) को उत्पन्न करना
- पारगमन मार्ग
- गन्तव्य क्षेत्र (Region), और
- उद्योग

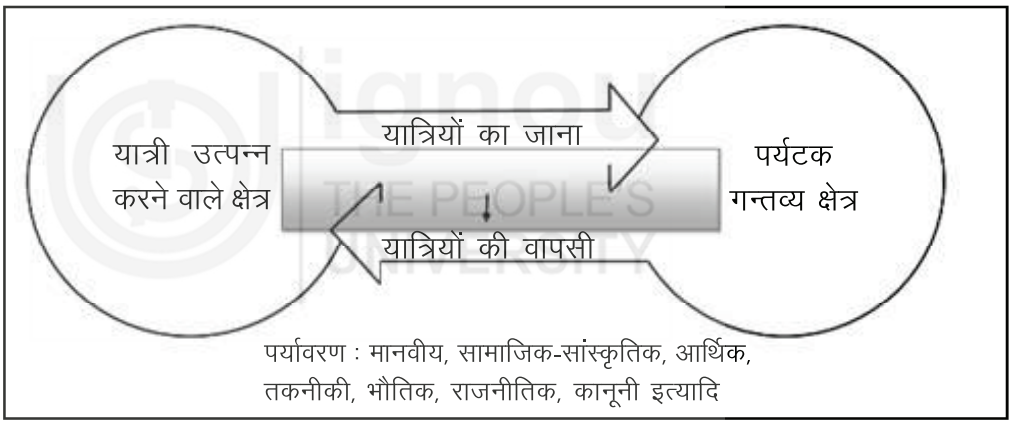

चित्र 13.1 : पर्यटन व्यवस्था (टूरिज्म सिस्टम)

स्रोत : लीपर की पर्यटन व्यवस्था (1990), गाइडेड टूरिज्म द रोल ऑफ़ गाइड बुक्स इन जर्मन टूरिस्ट बिहैवियर इन स्वीडन बाई जिलिंगर, मैलिन, 2007।

लीपर की व्यवस्था पर्यटन के विभिन्न आयाम तो उपलब्ध कराती है लेकिन यह पर्यटन का एकीकृत सामान्य सिद्धान्त नहीं दे पाती। "दि इनडिसिप्लिन ऑफ टूरिज्म" नामक अपने प्रपत्र में जॉन ट्राइब ने "एक विज्ञान के रूप में पर्यटन" और "एक क्षेत्र के रूप में पर्यटन" का उल्लेख किया है। अनेक अनुसन्धानकर्ताओं ने पर्यटन का वर्णन एक क्षेत्र के रूप में किया है। इनमें से एक अनुसन्धानकर्ता गुन हैं जिन्होंने सुझाव दिया है कि ऐसे बहुत सारे ज्ञानानुशासन हैं जो पर्यटन में योगदान दे रहे हैं; जैसे – नियोजन और अभिकल्पन, इतिहास, राजनीति विज्ञान, व्यवसाय, व्यवहार, मानव पारिस्थितिकी, नृ-विज्ञान, भूगोल, विपणन और भविष्यवाद (अनुप्रयुक्त इतिहास)।

जाफरी और ब्रेण्ट रिची (1981) ने नीचे दर्शाए गए चित्र के अनुसार पर्यटन का एक प्रारूप (मॉडल) प्रस्तावित किया है :

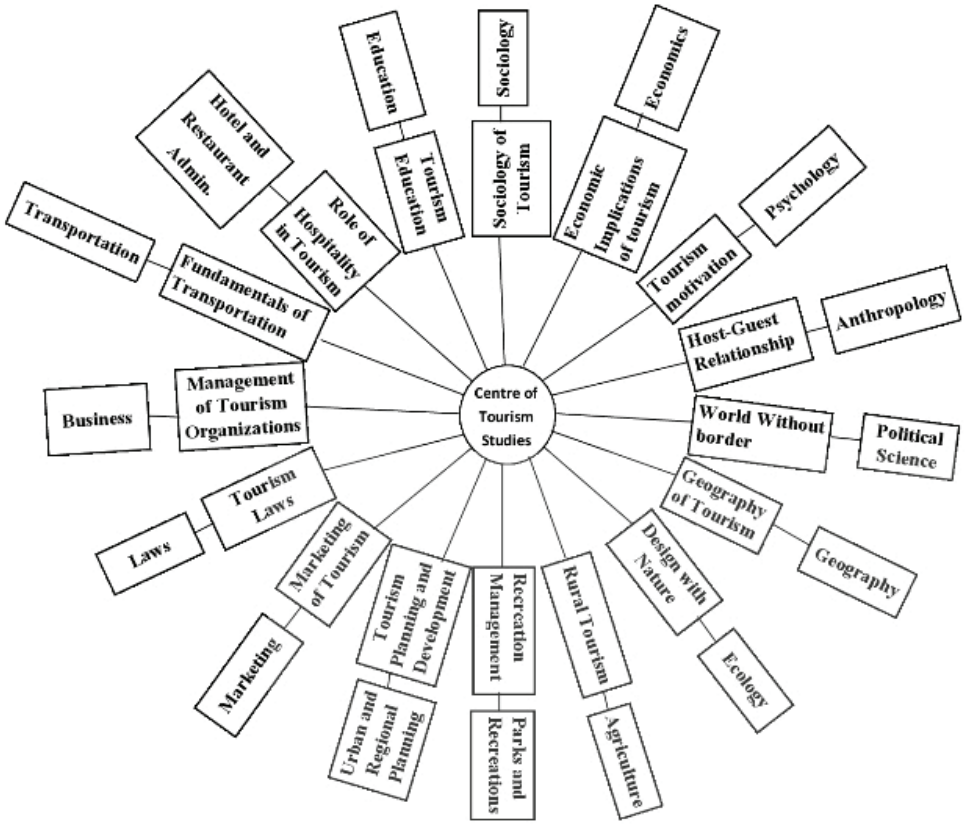

चित्र 13.2: पर्यटन अध्ययन का प्रारूप

स्रोत : पर्यटन अध्ययन का प्रारूप (मॉडल), जाफर जाफरी, यूनिवर्सिटी ऑफ विनकोंसिन; ट्राइब, जॉन, बर्किंघमशायर कॉलेज, यूनाइटेड किंग्डम की "दि इनडिसिप्लिन ऑफ टूरिज्म" से ग्रहीत

जाफरी और ब्रेण्ट द्वारा दिया गया उपरोक्त प्रारूप यह व्याख्यायित करता है कि पर्यटन अध्ययन अपनी प्रकृति में बहु-अनुशासनिक है। इस प्रारूप में विभिन्न ज्ञानानुशासनों और विभागों का आत्मसातीकरण शामिल है। चित्र दर्शाता है कि डिब्बों का आन्तरिक वृत्त पर्यटन पाठ्यक्रमों से और बाह्य वृत्त ज्ञानानुशासनों या विभागों से सम्बन्धित है। यह प्रारूप चित्रित करता है कि पर्यटन अध्ययन की चीजें आन्तरिक वृत्त द्वारा तथा विश्लेषण की विधि, जो कि अनुशासनिक उपागम हैं, बाह्य वृत्त द्वारा प्रदर्शित की गयी हैं। जाफरी प्रारूप (मॉडल) के अनुसार हम पर्यटन पाठ्यक्रमों और सम्बन्धित ज्ञानानुशासनों या विभागों को निम्नलिखित तरीके से श्रेणीबद्ध कर सकते हैं :

पर्यटन पाठ्यक्रम	**ज्ञानानुशासन या विभाग**
• पर्यटन का समाजशास्त्र	समाजशास्त्र
• पर्यटन का आर्थिक प्रभाव	अर्थशास्त्र
• पर्यटन अभिप्रेरण	मनोविज्ञान
• मेजबान-अतिथि सम्बन्ध	नृ-विज्ञान
• सीमारहित विश्व	राजनीति विज्ञान
• पर्यटन का भूगोल	भूगोल
• प्रकृति के साथ अभिकल्पन (डिजाइन)	पारिस्थितिकी
• ग्रामीण पर्यटन	कृषि
• मनोरंजन प्रबन्धन	पार्क और मनोरंजन

• पर्यटन नियोजन और विकास	शहरी और क्षेत्रीय नियोजन
• पर्यटन का विपणन	विपणन
• पर्यटन कानून	कानून
• पर्यटन संगठन का प्रबन्धन	व्यवसाय
• परिवहन के आधारिक तत्व	परिवहन
• पर्यटन में आतिथ्य की भूमिका	होटल और मनोरंजन प्रशासन
• पर्यटन शिक्षा	शिक्षाशास्त्र

इसी से मिलता-जुलता एक प्रारूप मैकिण्टोश, गोएल्डनर (1986), एलेजियाक (1999) और माइक व प्रजाइबेका-माइक द्वारा भी प्रस्तावित किया गया है।

सारांशतः समकालीन अकादमिक जगत में "पर्यटन" ज्ञानानुशासन-निर्माण की प्रक्रिया में है तथा विद्वान विभिन्न ज्ञानानुशासनों से आँकड़ों को एकत्रित करने का कठोर प्रयास कर रहे हैं ताकि एक परिघटना और अकादमिक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन के अद्वितीय सिद्धान्तों का निर्माण किया जा सके। इसे अवश्य समझा जाना चाहिए कि एक ज्ञानानुशासन के रूप में, अकादमिक जगत में पर्यटन को अद्वितीय सिद्धान्तों की रचना करके ही स्थापित किया जा सकता है।

बोध प्रश्न 3

1) पर्यटन के बहु-अनुशासनिक उपागम की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन के अन्तर-अनुशासनिक उपागम का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) ट्रांस-अनुशासनिक और क्रॉस-अनुशासनिक उपागमों में अन्तर स्थापित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) एक ज्ञानानुशासन के रूप में पर्यटन की स्थिति का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

13.10 सारांश

इस इकाई में हमने इस पर विस्तार से चर्चा की है कि यात्रा और पर्यटन एक बहुआयामी विषय है जिसमें विभिन्न गतिविधियों के साथ की जाने वाली अन्तरक्रियाएँ शामिल होती हैं। इसकी बुनियादी प्रकृति सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत इसकी एक जैसी परिभाषा गढ़ने में बाधाएँ खड़ी करती है और इसका परिणाम यह हुआ है कि एक ज्ञानानुशासन के रूप में यात्रा और पर्यटन का अध्ययन बाधाग्रस्त रहा है। यहाँ अकादमिक ज्ञानानुशासन का विषय संचलन करने वाला एक "व्यक्ति" होता है तथा अध्ययन का क्षेत्र "समय, स्थल और अन्तरिक्ष" के अतिरिक्त प्रभाव और परिणाम भी होता है। इस विचार की सीमा बहुत विस्तृत और बहुमुखी है। सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक क्षेत्र से यात्रा और पर्यटन की परिघटना को अलग करना बहुत ही कठिन है। इसी वजह से, समकालीन दौर में पर्यटन अनुसन्धान बहुआयामी है जहाँ बहुत सारे अकादमिक ज्ञानानुशासन इसकी परिधि के भीतर आ जाते हैं।

आज भी यह एक वाद-विवाद योग्य मुद्दा है कि पर्यटन क्या एक ज्ञानानुशासन है या क्या यह अध्ययन है या फिर क्या यह एक क्षेत्र है। कुछ विद्वानों का तर्क है कि यह बहु-अनुशासनिक है; जबकि कुछ अन्य विद्वानों का तर्क है कि यह अन्तर-अनुशासनिक है। कुछ अकादमिक लोगों का कहना है कि एक विषय के रूप में पर्यटन परिपक्व हो चुका है और ज्ञानानुशासन के रूप में रूपान्तरित हो चुका है (गोएल्डनर, 1998 : लीपर, 2000), जबकि कुछ अन्य अकादमिक लोगों का तर्क है कि अभी भी यह ज्ञानानुशासन-निर्माण की प्रक्रिया में ही है (कुन, 1970 : ट्राइब, 2005)। जाफरी और रिची (1981), ट्राइब (1997) आदि का मत है कि पर्यटन अध्ययन के एक क्षेत्र के रूप में है जो अनुशासनिक सीमाओं को पार कर जाता है।

13.11 शब्दावली

फुर्सत : उपलब्ध खाली समय।

मनोरंजन : फुर्सत के समय में सन्तोष और आनन्द के लिए किसी व्यक्ति द्वारा निष्पादित की जाने वाली गतिविधि।

पर्यटन उपग्रह गणना (टीएसए) : यात्रा और गतिविधि के कारण किसी देश के लिए आर्थिक योगदान को मापने हेतु एक प्रक्रिया।

13.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) एक ज्ञानानुशासन अलग सामग्री और प्रविधि के साथ अध्ययन का एक विशिष्ट क्षेत्र अथवा ज्ञान की शाखा है। इसका तात्पर्य ज्ञान या अध्ययन के एक विशिष्ट क्षेत्र से है, जिसे महाविद्यालयी या विश्वविद्यालयी स्तर पर पढ़ाया जाता है। भाग 13.3 देखिए।

2) पर्यावरण और समाज से सम्बन्धित मानवीय समझ का विकास किसी विशिष्ट निर्धारित समयावधि में किसी विशिष्ट ज्ञानानुशासन के उद्‌भव का आधार होता है। ज्ञानानुशासन इस सम्बन्ध में सीमाएँ उत्पन्न करता है कि किस पर विचार किया जाए और किस पर विचार न किया जाए; और यह विशेषीकरण प्रक्रिया के साथ आगे बढ़ता है। भाग 13.4 देखिए।

3) इसके पास विशिष्ट ज्ञान-आधार, संकल्पनाएँ, सिद्धान्त और अनुसन्धान का उद्देश्य होता है। ज्ञानानुशासन के पास विशिष्ट तकनीकी भाषा और शब्दावली होती है तथा यह अनुसन्धान प्रविधि का विकास कर चुका होता है। एक विषय के रूप में इसे, ज्ञानानुशासन के पेशेवर लोगों द्वारा, महाविद्यालयी और विश्वविद्यालयी स्तर पर पढ़ाया जाता है। इसकी संस्थात्मक उपस्थिति होती है। इसके पास विशिष्ट जर्नलों, पत्रिकाओं में प्रकाशित अनुसन्धान कार्य होते हैं और यह संघों का निर्माण कर चुका होता है। भाग 13.5 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) अध्ययन, विषय, विभाग और ज्ञानानुशासन अन्तरसम्बन्धित हैं। भाग 13.6 देखिए।

2) पर्यटन अध्ययन के विभिन्न उपागम हैं; जैसे – ऐतिहासिक उपागम, संस्थात्मक उपागम, उत्पाद उपागम, भौगोलिक उपागम, समाजशास्त्रीय उपागम, आर्थिक उपागम, प्रबन्धकीय उपागम, अन्तर-अनुशासनिक उपागम और व्यवस्था उपागम। भाग 13.7 देखिए।

3) भाग 13.7 देखिए।

बोध प्रश्न 3

1) बहु-अनुशासनिक उपागम में, अलग-अलग अकादमिक ज्ञानानुशासनों के अनुसन्धानकर्ता साथ-साथ कार्य करते हैं। उप-भाग 13.8.1 देखिए।

2) अन्तर-अनुशासनिक उपागम में, अनुसन्धानकर्ता दूसरे ज्ञानानुशासन की सामग्री, संकल्पना, सिद्धान्त, ज्ञान, अनुसन्धान, शिक्षा और विचारों आदि का उपयोग करता है। उप-भाग 13.8.2 देखिए।

3) उप-भाग 13.8.3 और 13.8.4 देखिए।

4) भाग 13.9 देखिए।

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें और शोध प्त्र

ए.एल. राउस "दि यूज ऑफ हिस्ट्री"- 1971।

कोलिंगवुड "दि आइडिया ऑफ हिस्ट्री" - ऑक्सफोर्ड, 1073।

गिल्बर्ट साइग्यूक्स "हिस्ट्री ऑफ टूरिज्म"।

जे. क्रिस्टोफर होलोवे "द बिजिनेस ऑफ टूरिज्म"।

मैसेल्स "अर्ली सिविलाइजेशंस ऑफ दि ओल्ड वर्ल्ड" - बिजिनेस बुक्स कम्युनिका, 1978।

निस्बेट "सोशल चेंज एण्ड हिस्ट्री" - ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972।

रोजर हूसडेन "सैक्रेड जर्नीज़ इन ए मॉडर्न वर्ल्ड" - सिमोन एण्ड शूस्टर, न्यूयॉर्क, 1979।

टी. वाल्टर वालबैंक "सिविलाइजेशंस पास्ट एण्ड प्रेजेण्ट" - स्कॉट फोर्समैन, लन्दन, 1978।

कोहेन, ई. (1995) 'कण्टेम्पोरेरी टूरिज्म दृ ट्रेण्ड्स एण्ड चैलेंजेज़ : सस्टेनेबल ऑथेण्टिसिटी ऑर कॉण्ट्राइब्ड पोस्ट-मॉडर्निटी?', इन आर. बटलर एण्ड डी. पियर्स (सम्पा.) चेन्ज इन टूरिज्म : पीपल, प्लेसेज़, प्रोसेसेज़, लन्दन : रूटलेज।

सी. कूपर, जे. फ्लेचर, ए. फ्याल, डी. गिल्बर्ट, एस. वानहिल, 2008, टूरिज्म : प्रिंसिपल्स एण्ड प्रैक्टिस,

रॉब डेविडसन : टूरिज्म : लन्दन, 1993।

रॉबर्ट क्रिटी मिल : टूरिज्म सिस्टम : न्यू जर्सी, 1992।

डोनाल्ड लुण्डबर्ग : टूरिस्ट बिजिनेस, न्यूयॉर्क, 1990।

डेविड डब्ल्यू. होवेल : पासपोर्ट : एन इण्ट्रोडक्शन टू दि ट्रैवेल एण्ड टूरिज्म, ओहायो, 1989।

प्रेत्जलर, एम. (2007) पासेनियस : ट्रैवेल राइटिंग इन एंशियंट ग्रीस, लन्दन : डकवर्थ।

स्टार्क, डी.जे. (2009) रिलीजियस टूरिज्म इन रोमन ग्रीस। थीसिस एण्ड डिजर्टेशंस (कॉम्प्रिहेंसिव)। पेपर 951। ऑनलाइन उपलब्ध : <http://scholars.wlu.ca/cgi/ viewcontent.cgi?article=1950&context=etd.

टाउनर, जे. एण्ड वाल, जी. (1992) हिस्ट्री एण्ड टूरिज्म। एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 18, 71-84।

किट्टो, एच. डी. एफ. (1950) द ग्रीक्स, लन्दन : पेंगुइन बुक्स।

गिर, यू. (2012) दि हिस्ट्री ऑफ टूरिज्म : स्ट्रक्चर्स ऑन द पाथ टू मॉडर्निटी, यूरोपियन हिस्ट्री ऑनलाइन, मेंज : इंस्टीट्यूट ऑफ यूरोपियन हिस्ट्री। ऑनलाइन उपलब्ध : <http://www. ieg-ego.eu/en/threads/europe-on-the-road/the-history-of-tourism

थॉमस, डब्ल्यू. (1992) एम्पेरर्स एण्ड ग्लेडिएटर्स, रूटलेज।

कोहने, ई. एण्ड एविग्लेबेन, सी. (2000) ग्लेडिएटर्स एण्ड सीजर्स (सम्पा.) बिटिश म्यूजियम प्रेस।

ग्रेबर्न, एन., एण्ड जाफरी, जे. (1991), इण्ट्रोडक्शन : टूरिज्म एण्ड द सोशल साइंसेज, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 18(1), 1-11।

के. प्रजेक्लावस्की, 1993, टूरिज्म ऐज द सब्जेक्ट ऑफ इण्टरडिसिप्लिनरी रिसर्च, इन डी. पियर्स एण्ड आर.

पेरोटेट, टी. (2003) पागान हॉलीडे : ऑन द ट्रेल ऑफ एंशियंट रोमन टूरिस्ट्स, न्यूयार्क, रैण्डम हाउस।

क्रिपेनडार्फ, जे. (1986) द न्यू टूरिस्ट – टर्निंग प्वाइण्ट फॉर लीजर एण्ड ट्रैवेल, टूरिज्म मैनेजमेण्ट, 7(2), 131-135।

अमोआह, वी. ए. एण्ड बॉम, टी. (1997), टूरिज्म एजुकेशन : पॉलिसी वर्सस प्रैक्टिस, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ कण्टेम्पोरेरी हास्पिटलिटी मैनेजमेण्ट, 9(1), 5-12।

कोल्स, टी. ई., हाल, सी. एम. एण्ड दुवाल, डी. टी. (2006), टूरिज्म एण्ड पोस्ट-डिसिप्लिनरी एन्क्वायरी, करेण्ट इश्यूज इन टूरिज्म 9(4 एण्ड 5), 293-319।

डार्बेलाय, एफ., एण्ड स्टॉक, एम. (2012), टूरिज्म ऐज कॉम्प्लेक्स इण्टरडिसिप्लिनरी रिसर्च ऑब्जेक्ट, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 39(1), 441-458।

एक्टनर, सी.एम. एण्ड जमाल, टी.बी. (1997), द डिसिप्लिनरी डाइलेमा ऑफ टूरिज्म स्टडीज, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 24(4), 868-883।

गोएल्डनर, सी.आर. एण्ड रिची, जे.आर.बी. (2006), टूरिज्म, प्रिंसिपल्स, प्रैक्टिसेज एण्ड फिलासोफीज (दसवाँ संस्करण), न्यू जर्सी : जॉन विले एण्ड सन्स।

ग्रैबर्न, एन., एण्ड जाफरी, जे. (1991), इण्ट्रोडक्शन : टूरिज्म एण्ड द सोशल साइंसेज, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 18(1), 1-11।

जाफरी, जे. (1990), रिसर्च एण्ड स्कॉलरशिप : द बेसिस ऑफ टूरिज्म एजुकेशन, जर्नल ऑफ टूरिज्म स्टडीज, 1(1), 33-41।

जाफरी, जे. (2001), द साइंटिफिकेशन ऑफ टूरिज्म, इन वी.एल. स्मिथ एण्ड एम. ब्रेण्ट (सम्पा.), हॉस्ट्स एण्ड गेस्ट्स रीविजिटेड : टूरिज्म इश्यूज ऑफ द फर्स्ट सेंचुरी (पीपी. 28-41), न्यूयार्क ; कॉग्नीजैण्ट कम्युकेशंस।

जाफरी, जे., एण्ड रिची, जे.आर.बी. (1981), टूवार्ड्स ए फ्रेमवर्क फॉर टूरिज्म एजुकेशन : प्रॉब्लम्स एण्ड प्रॉस्पेक्ट्स, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 8, 13-34।

लीपर, एन. (1981), टूवार्ड्स ए कोहेसिव करीकुलम इन टूरिज्म : द केस फॉर ए डिस्टिंक्ट डिसिप्लिन, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 8(1), 69-84।

लीपर, एन. (2000), ऐन इमर्जिंग डिसिप्लिन, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 27(3), 805-809।

मैककर्चर, बी., लॉ, आर., एण्ड लैम्ब, टी. (2006), रेटिंग टूरिज्म एण्ड हॉस्पिटलिटी जर्नल्स, टूरिज्म मैनेजमेण्ट, 27, 1235-1252, 22।

ट्राइब, जे., (1997), द डिसिप्लिन ऑफ टूरिज्म, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 24(3), 638-657।

ट्राइब, जे., (2000), इनडिसिप्लिण्ड एण्ड अनसब्सटैंशिएटेड, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 27(3), 809-813।

ट्राइब, जे., (2010), ट्राइब्स, टेरीटरीज एण्ड नेटवर्क्स इन द टूरिज्म अकेडमी, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 37(1), 7-33।

ट्राइब, जे., एण्ड आइरे, डी. (2007) ए रिव्यू ऑफ टूरिज्म रिसर्च, इन जे. ट्राइब एण्ड डी. आइरे (सम्पा.), डेवेलपमेण्ट्स इन टूरिज्म रिसर्च (पीपी. 3-14), ऑक्सफोर्ड : एल्सवियर।

सेल्विन, टी. (सम्पा.) (1996) द टूरिस्ट इमेज : मिथ्स एण्ड मिथ मेकिंग इन टूरिज्म, लन्दनः विले. एन. लीपर, 2000, ऐन इमर्जिंग डिसिप्लिन, इन एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, वॉल्यूम. 27(3) : 805-809।

इस खंड के लिए गतिविधियाँ

टिप्पणी : गतिविधियों के परिणामों पर अपने परामर्शदाता (काउंसलर) के साथ चर्चा कीजिए।

गतिविधि 1

किसी रेलवे प्लेटफॉर्म या बस स्टैण्ड पर जाइए। वहाँ अवश्य कुछ ऐसे यात्री होंगे जो प्रतीक्षारत होंगे। उनमें से कुछ यात्रियों से उनकी यात्रा के उद्देश्य पूछिए; क्या उन्होंने किसी टूर-ऑपरेटर से सम्पर्क किया था? अगर किया था तो क्यों और यदि नहीं किया था तो क्यों? उनकी यात्रा की अवधि क्या है? क्या उन्होंने अपनी इस यात्रा के लिए कोई योजना बनायी थी या फिर वे अपने मित्रों या रिश्तेदारों के यहाँ जाने के लिए यूँ ही निकले हैं? इस अभ्यास को दो-तीन बार कीजिए और जितनी बार आप वहाँ गए, हरेक बार के निष्कर्षों की तुलना कीजिए तथा निम्नलिखित पर एक टिप्पणी तैयार कीजिए :

क) यात्रा के लिए विभिन्न अभिप्रेरणाएँ।

ख) वे स्थल जहाँ लोग सर्वाधिक जाते हैं।

ग) उन लोगों का प्रतिशत जिन्होंने सुनियोजित तरीके से छुट्टी मनाने का निर्णय लिया।

गतिविधि 2

विश्व का एक मानचित्र लीजिए और उस पर निम्नलिखित को अंकित कीजिए :

1) प्राचीन सभ्यता के सभी सात आश्चर्य।

2) आधुनिक विश्व के सभी सात आश्चर्य।

गतिविधि 3

पन्द्रह दिनों तक समाचारपत्र में प्रकाशित उन सभी विज्ञापनों का संग्रह कीजिए जो प्राचीन स्थलों/ क्षेत्रों/ नगरों आदि से सम्बन्धित हों।

गतिविधि 4

अपने इलाके के पर्यटन स्थलों का दौरा कीजिए और इसके पर्यटन विकास की प्रक्रिया का पता लगाइए।

गतिविधि 5

अपने क्षेत्र में खेले जाने वाले खेलों के प्रकारों पर एक निबन्ध लिखिए। खेलों पर मोबाइल की तकनीक के प्रभाव का पता लगाइए।

NOTES

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

NOTES

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY